

कर्मभूमि

वर्ष १५ अंक २६

मई २०२२



भारत की स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष



Learn Hindi

In-Person and Online(Virtual)

Join Hindi Classes in New Jersey and other states

- ✓ Classes taught in 9 levels by experienced teachers for children between 5 and 15 years of age
- ✓ Structured syllabus tailored for each Hindi level Books written by HindiUSA teachers to match learning goals of defined syllabus
- ✓ Reliable organization backed by 18 years of practical experience in teaching
- ✓ Adult Hindi classes are also available in certain schools
- ✓ Required books are included in registration fee.
- ✓ Hindi Poetry Competitions, annual Hindi Mahotsava and many other activities organized throughout the year for the growth of children
- ✓ Mid-term/final written and oral exams are conducted

School sessions run between
September and June

**Classes Held On Fridays between
7:00 PM and 8:30 PM**

* A few school have different timing, please contact the respective School Coordinator for the school timing.

All in-person classes will operate in the regular school buildings. Online (virtual) school is available for the students who reside outside of the in-person school areas.

No geographical limitations for the online school. Virtual school classes will be held on Fridays between 7:30 PM and 8:30 PM: (U.S. Eastern Standard Time)

Register online at www.hindiusa.org

For more information and Registration, Contact Rachita Singh: 609-353-8411 or HINDI USA @1-877-HINDI-USA (1-877-446-3487), www.hindiusa.org



सन् २००१ से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की सेवा में कार्यरत एक समर्पित संस्था...
पूर्वजों की विरासत हिन्दी भाषा नयी पीढ़ी को सौंपने का एक अभियान

Please contact one of our school coordinators in your area

Locations	Name	Contact	Locations	Name	Contact
Edison, NJ	Manak Kabra	718-414-5429	South Brunswick, NJ	Umesh Mahajan	908-489-8913
Woodbridge, NJ	Shiva Arya	908-812-1253	West Windsor & Plainsboro, NJ	Gulshan Mirg	609-451-0126
Basking Ridge, NJ	Sanjay Gupta	732-331-9342	Cherry Hills, NJ	Venugopal Varma Jay Kumar Jain	609-598-4038 856-236-6272
Chesterfield, NJ	Madhu Rajpal	732-331-5835	East Brunswick, NJ	Swagata Mane	646-415-4072
Montgomery, NJ	Reena Singh Swati Agarwal	908-499-1555 630 796 1259	North Brunswick, NJ	Yogita Modi	609-721-2321
Piscataway, NJ	Saurabh Udeshi Latha Sanjay	732-801-6380 732-318-0384	Monroe, NJ	Dr. Sunita Gulati	732-762-2692
Jersey City, NJ	Manoj Singh	201-233-5835	Lawrenceville, NJ	Rakhi Vaish	732-881-1995
Holmdel, NJ	Ranjana Gupta	908-380-8697	Ellicott City, MD	Murli Tulshyan Sandhya Tulshyan	443-574-4419
Stamford, CT	Manish Maheshwari Babita Gupta	203-522-8888 203-252-9210	Wilton, CT	Amit Agrawal Chetna Mallarapu	630-401-0690 732-593-9827
Avon, CT	Gitanjali Garag Basavaraj Garag	908-848-0723 203-621-8331	Atlanta, GA	Ranjan Pathania	203-993-9631
Needham, MA	Vikram Kaul	203-919-1394	San Diego, CA	Mudita Tiwary	858-229-5820
Trumbull, CT	Ruchi Sharma Sheetal Abbi	203-570-1261 732-322-4801	St. Louis, MO	Mayank Jain	636-575-9348

✓ Online (Virtual) Hindi School: Rajeev Shrivastava | 732-429-8612 (For Students-Worldwide)

Visit our website www.hindiusa.org (1-877-Hindi-USA) or call Rachita Singh: 609-353-8411

www.hindiusa.org



1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य	पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ
देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) – 856-625-4335 रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) – 609-248-5966 राज मित्तल (धनराशि संयोजक) – 732-423-4619 माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) – 718-414-5429 सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक) – 908-361-0220	एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500) साऊथ ब्रिस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733) मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555) पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535), स्वाति सिंघानिया (609-819-3305) ईस्ट ब्रिस्विक: स्वागता माने (646-415-4072) वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253) जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835) प्लेसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126) लॉरेंसविल: राखी वैश्य (732-881-1995) चैरी हिल: जय जैन (856-236-6272), वेनू वर्मा (609-598-4038) चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835) होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697) मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962) नॉर्थ ब्रिस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604) बस्किंग रिज: संजय गुप्ता (732-331-9342) विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705) स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888) एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779) ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261) एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्लियान (201-892-7898) नौधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394) अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631) सैन डिएगो (CA): मुदिता तिवारी (858-229-5820) सेंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)
शिक्षण समिति क्षमा सोनी – कनिष्ठा-१ स्तर रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे – कनिष्ठा-२ स्तर मोनिका गुप्ता, मीनाक्षी सिंह – प्रथमा-१ स्तर सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके – प्रथमा-२ स्तर इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी – मध्यमा-१ स्तर मीनाक्षी सिंह, गरिमा अग्रवाल – मध्यमा-२ स्तर ऋतु जग्गी, राजीव महाजन – मध्यमा-३ स्तर सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह – उच्चस्तर-१ कविता प्रसाद – उच्चस्तर-२	
अन्य समितियाँ अमित खरे – वेब साइट, वीडियो योगिता मोदी – बुक स्टाल प्रबंधन वेणुगोपाल वर्मा – शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण	

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

- ०८ - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
 १० - कविता, लेख, कहानी प्रतियोगिता
 २१ - परतंत्र के पहले और स्वतंत्रता के बाद भारत
 २२ - मेरी दृष्टि में भविष्य का भारत
 २२ - ऑनलाइन बाबा
 २४ - प्रेम और स्तुति सुमनों की भावांजली
 २६ - भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष
 २८ - ज्ञान विज्ञान के आलोक से जगमगाए ...
 ३० - एडिसन पाठशाला—उच्चस्तर-२
 ३५ - भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन
 ३९ - स्वतंत्रता के बाद का भारत
 ४० - परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत
 ४२ - चैरी हिल — उच्चस्तर-२
 ४७ - एक सशक्त भारत
 ४८ - साउथ ब्रंसविक — उच्चस्तर-२
 ५० - हमारे सपनों का भारत
 ५१ - भारत की आजादी
 ५२ - भविष्य का भारत
 ५४ - हमारे सपनों का भारत
 ५८ - मेरे सपनों का भारत कैसा हो
 ५९ - दांडी मार्च
 ६० - भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष
 ६२ - दांडी यात्रा - स्वतंत्रता संग्राम की नींव
 ६३ - अहिंसा के प्रतीक - महात्मा गांधी
 ६४ - जलियाँवाला बाग हत्याकांड
 ६६ - भारतीय स्वतंत्रता संग्राम — महिलाओं का योगदान
 ६७ - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
 ७० - स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का स्वतंत्र भारत का सपना

संरक्षक

देवेन्द्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें
 हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें
 karmbhoomi@hindiusa.org
 या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:
 HindiUSA

70 Homestead Drive
 Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ – महक सैकिया (एवॉन पाठशाला)

७२ - विल्टन हिंदी पाठशाला — मध्यमा-२

७४ - भारत - एक महान देश

७६ - मेरी दृष्टि में भारत महान क्यों?

७८ - चैरी हिल पाठशाला - मध्यमा-२

८० - साउथ ब्रंसविक पाठशाला - मध्यमा-२

८४ - भूले बिसरे स्वतंत्रता सेनानी

८६ - हमारा प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

८८ - भारत की आजादी के ७५ वर्ष

९० - हमारा प्रिय स्वतंत्रता सेनानी कौन है और क्यों?

९२ - साउथ ब्रंसविक, माध्यम-१

९४ - भारत के स्वतंत्रता सेनानी

९६ - मेरा भारत महान, भारत



हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर २१ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावतियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २५ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

[संपादकीय]

वर्ष २०२२ हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का इक्कीसवाँ वर्ष है। विगत २१ वर्षों में संस्था ने जो अभूतपूर्व प्रगति की है वह किसी से छिपी नहीं है। इस प्रगति का पूर्ण श्रेय हमारे समर्पित अध्यापकों, स्वयंसेवकों एवं अभिभावकों को ही जाता है। उनके कठोर श्रम के बिना संस्था का इस स्तर पर और इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करना कदापि संभव नहीं था।

विगत दो वर्षों से अधिक की 'कोरोना' संक्रमण त्रासदी से जूझने के बाद अब प्रतीत होता है कि अब इससे कुछ राहत मिलेगी, हमें आशा है की ऐसी त्रासदी भविष्य में दुबारा फिर कभी न आये। पिछले ढाई वर्षों से हमारी समस्त पाठशालाएँ, कक्षाएँ एवं अन्य कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ सभी वर्चुअल (दूरस्थ) माध्यम से ही संचालित हो रही हैं तथा इनमें किसी प्रकार का कोई अवरोध नहीं हुआ। हम सभी को वर्चुअल माध्यम की नयी तकनीक को ज्यादा प्रभावी रूप से प्रयोग में लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी तकनीक से हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी पाठशालाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन अब अन्य देशों में भी करने का निर्णय लिया है जिसकी मांग अभिभावकों तथा अन्य हिंदीसेवी संस्थाओं द्वारा निरंतर की जाती रही है।

वर्ष २०२२ भारत की स्वतंत्रता की ७५वीं वर्षगांठ है। हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आवाहन पर इसे आज़ादी के अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है जिसकी धूम न सिर्फ भारत में ही अपितु समस्त विश्व में है। कर्मभूमि का यह अंक 'अमृत महोत्सव विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष एवं गर्व है। यह अंक अनेक ज्ञानवर्धक लेखों, कविताओं, एवं हमारे शहीदों के संस्मरणों से सराबोर है। हमारे छात्रों, अभिभावकों, एवं स्वयंसेवकों ने अति सुन्दर लेख एवं प्रभावी सामग्री इसके लिए तैयार की है। लाखों लोगों ने स्वतंत्रता की लड़ाई में

अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, कुछ को हम जानते हैं परन्तु अनगिनत शहीद ऐसे हैं जिन्होंने स्वतान्त्रता प्राप्ति के लिए अपना सभी कुछ बलिदान कर दिया परन्तु इतिहास में उनके बलिदानों का कहीं कोई उल्लेख नहीं है और वर्तमान पीढ़ियाँ उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती। इस अंक में कुछ लेखकों ने अपने लेखों में उन कई महान विभूतियों का उल्लेख किया है जिन्होंने अपने प्राणों का त्याग आज़ादी के लिए कर दिया परन्तु उनको कोई भी नहीं जानता क्योंकि आज़ादी के बाद कुछ निरंकुश नेताओं तथा भ्रष्ट राजनैतिक पार्टियों द्वारा अपनी महत्वाकांक्षाओं को उजागर करने हेतु इतिहास को स्कूलों के पाठ्यक्रमों में बहुत तोड़-मरोड़ कर पढ़ाया गया तथा सिर्फ कुछ व्यक्तियों का ही झूठा महिमामंडन कर, आने वाली पीढ़ियों को भ्रमित किया गया। जिन व्यक्तियों ने आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया उनका कहीं भी इतिहास के पृष्ठों पर नाम और उल्लेख नहीं है। स्वतंत्रता का यह अमृत महोत्सव उन सभी शहीदों को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हमें पूर्ण विश्वास है कि कर्मभूमि का यह अंक हम सभी के लिए एक यादगार अंक रहेगा और आप इसे अपने पास वर्षों तक संजोकर रखेंगे।

हिन्दी यू.एस.ए. को अपने समस्त अभिभावकों, छात्रों, और समर्पित स्वयंसेवकों पर हमेशा गर्व रहा है और रहेगा। आप सभी के समर्पण से ही यह संस्था अपने इक्कीस वर्ष पूर्ण कर पाई और निरंतर प्रगति कर रही है। पिछले २ वर्षों में, संस्था ने अपने अधिकांश प्रशिक्षण एवं अन्य कार्यों का आधुनिकरण किया है। विद्यार्थियों के पंजीकरण का नया ऑनलाइन सिस्टम संस्था ने बनवाकर पिछले वर्ष कार्यान्वित किया था जिससे अभिभावकों को अपने बच्चों के पंजीकरण में सुविधा होने के साथ ही अध्यापकों को भी अपनी

कक्षा के छात्रों का पूर्ण विवरण, गृह कार्य, पुस्तकें, परीक्षाएँ, अंक तालिकाएँ तथा रिपोर्ट-कार्ड आदि को व्यवस्थित रखने में अत्यंत सुविधा हुई है। नॉर्थ कैरोलिना राज्य में संस्था इस वर्ष से अपनी एक नई पाठशाला का शुभारम्भ करने जा रही है। आप सभी के सहयोग से हिंदी यू.एस.ए. निरंतर प्रगतिपथ की ओर अग्रसर है। इसके कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने हेतु किसी प्रकार के कोई भी सुझाव हों तो हमें उनसे अवश्य ही अवगत कराएँ। जो भी अभिभावक संस्था से जुड़कर अध्यापक या स्वयंसेवक

के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के इच्छुक हो तो कृपया हमसे संपर्क करें।

कोरोना संक्रमण का अभी पूर्ण रूप से उन्मूलन हुआ नहीं है, आप सभी से यही निवेदन है कि स्वस्थ रहें तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी नियमों का अनुशासित रहकर पालन करें।

धन्यवाद
संपादक मंडल

युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह - २०२२

हिंदी यू.एस.ए. भारत से बाहर हिंदी सीखने के लिए सबसे बड़ी संस्था है। आज यह संस्था अमेरिका के कई राज्यों में हिंदी के प्रचार प्रसार में लगी हुई है जिसमें से न्यू जर्सी में सबसे अधिक १५ तथा अन्य राज्यों में ९ पाठशालाओं में करीब ४५०० विद्यार्थी हैं। इन सभी पाठशालाओं को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए ५०० से भी ज्यादा स्वयंसेवक / शिक्षक और करीब २०१ युवा स्वयंसेवक अपना बहुमूल्य समय दे रहे हैं। संस्था से अब तक १००० से ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं जो आज संस्था की कई पाठशालाओं में अपना समय पढ़ाने में दे रहे हैं। ये युवा स्वयंसेवक हमारी अगली पीढ़ी, हिंदी भाषा की ज्योत जो २००१ में जलाई गई थी उसको आगे बढ़ाने का संकल्प ले कर आगे बढ़ रहे हैं।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी महामारी के कारण इस कार्यक्रम को अप्रैल २ को virtual करने का निर्णय लिया गया। इस वर्ष की विशेषता आजादी का महोत्सव थी और सभी कार्यक्रम इसी पर आधारित थे। स्वयंसेवकों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों से कार्यक्रम इतने वर्षों में सबसे बढ़िया सिद्ध हुआ। लगभग सभी स्वयंसेवक और पाठशाला संचालक

कार्यक्रम में उपस्थित थे। virtual होने के कारण दूसरे राज्यों के स्वयंसेवकों और संचालकों की उपस्थिति कार्यक्रम की शोभा और भी बढ़ा रही थी।

कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार प्रथम पूज्यनीय श्री गणेश जी की वंदना से हुई। संस्था के संस्थापक श्री देवेन्द्र जी और रचिता जी ने युवा स्वयंसेवकों को संदेश और जीवन में काम आने वाली बहुमूल्य बातों से साथ-साथ हिन्दू धर्म के बारे में भी कुछ बातें कही जिसे सभी ने बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना। सरिता नेमाणी जी और माणक काबरा जी ने कार्यक्रम का संचालन बहुत ही मनोरंजक तरीके से किया। सभी पाठशाला संचालकों ने स्वयंसेवकों का परिचय कराया। इस वर्ष हमारे युवा स्वयंसेवकों ने विविध प्रकार की प्रस्तुतियाँ कीं और अपनी और भी प्रतिभा का परिचय दिया तथा यह बताया कि हम सिर्फ पढ़ाते ही नहीं बल्कि हमारी रुचि भजन, तबला, भारतीय नृत्य, संगीत में भी है। हिंदी यू.एस.ए. सभी युवा स्वयंसेवकों को उनके आने वाले भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता है और आशा करता है कि भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा को बहुत दूर तक ले जायेंगे।

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि “यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए”। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण – पिछले ८ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (www.hindiusa.org) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण – हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार – ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय – प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा – दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह – हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा – छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिन्दी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़े रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। यह यात्रा हर २-३ वर्ष में एक बार होती है।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन –

प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी – जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ – इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन – इसका विस्तृत विवरण पेज ७ पर देखें।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी – मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा – मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव – यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान

तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा – जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१६. वार्षिक पिकनिक – जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं? क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं? क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट www.hindiusa.org पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

नोट: कोरोना वायरस महामारी के कारण इस वर्ष के सभी कार्यक्रम ऑनलाइन ही आयोजित हुए।

कविता और लेख प्रतियोगिता

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी शिक्षक-शिक्षिका अभिनंदन समारोह पर हिन्दी यू.एस.ए. ने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं ने भारत की स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष को आधार बनाकर कविता तथा लेख लिखे। इन्हीं में से कुछ चुने हुए लेख तथा कविताएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

स्वतंत्रता सेनानियों को शत-शत नमन



योगिता मोदी

हिन्दी यू.एस.ए. से विगत ९ वर्षों से सम्बद्ध एवं नार्थ ब्रुंस्विक पाठशाला संचालिका और शिक्षिका, हिन्दी अध्ययन - लेखन में गहरी रुचि, गर्भनाल पत्रिका में कई रचनाएँ प्रकाशित, गायन में अत्यधिक रुचि। वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय महिला काव्य मंच (मकाम) की न्यू जर्सी इकाई की उपाध्यक्ष एवं सदस्य - गर्भनाल न्यास संरक्षक मंडल

जब -जब भारत की पावन भूमि पर पड़े पैर कुटिल शत्रु के
तब-तब खाई मुँह की उसने भारत वीरों के अदम्य साहस से
व्यापारी के छद्म भेष में था आया इस बार कपटी दुश्मन
पाते ही मौका रूप बदलकर हड़प लिया दिल्ली का सिंहासन
पर गुलामी की ये बेड़ियाँ रास न आयी स्वाभिमानी देशभक्तों को
प्रचंड हुंकार भरी सिंहों ने तब अँग्रेजी शासन उखाड़ फेंकने को
सैनिकों संग मंगल पांडे ने फूँका बिगुल प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का
जगा कर अलख विद्रोह की फांसी पर झूल गया यह लाल हिन्दुस्तान का
देखते ही देखते चारों ओर फैल गयी क्रांति की यह आग पूरे भारत में
सहर्ष प्राण आहुति दी वीर सपूतों ने आज़ादी के इस पावन महायज्ञ में
झाँसी से वीरांगना लक्ष्मी बाई ने अब दहकाई महाक्रांति की अखंड ज्वाला
तात्या टोपे और मुट्ठी भर सैनिकों संग युद्ध में कूद पड़ी यह वीर बाला
लाल, बाल, पाल, आज़ाद, सुभाष ,भगत सिंह, सहित शहीद तमाम
देकर अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान आये मातृभूमि की रक्षा में काम
भागा दुश्मन देश छोड़कर अंतत महान क्रांतिवीरों का अमर बलिदान रंग लाया
शत-शत नमन है स्वातंत्र्यवीरों को जिन्होंने भारत मां का फिर गौरव लौटाया



राखी वैश्य

राखी की पेशे से एक प्रतिभा अधिग्रहण विशेषज्ञ है और २०१५ से हिंदी यू.एस.ए. के साथ जुड़ी हुई हैं। पिछले २ वर्षों से ये लॉरेन्सविल हिंदी पाठशाला की संचालिका हैं। ये भारत में एन.जी.ओ. "उषाकिरण" के साथ २०१६ से एक स्वयंसेविका के रूप में कार्य कर रही है। यह संस्था वंचित बच्चों के लिए काम करती है।

वीरों के बलिदानों से मिली स्वतंत्रता की कीमत कैसे सब को समझाऊँ,
कैसे इस नई पीढ़ी को अंग्रेजी शासन की गुलामी के किस्से सुनाऊँ।

रोंगटे खड़े हो जाते हैं अब भी उन वीरों की शहादत को सुन कर,
लहू खौल जाता है मेरा इन शेरों को मिली प्रताड़नाएं सुनकर।

तन मन धन सब न्योछावर कर के हमारे देश को स्वतंत्र कराया था,
इतना करने से पहले इनको अपने परिवार का खयाल तक ना आया था।

उन वीर और वीरांगनाओं से उनके दुधमुँहे बच्चे तक छूटे थे,
पर देश पे न्योछावर होने से पहले वे एक पल को भी ना चूके थे।

सर्वस्व देश पर लुटा कर वो सब अपनी जान की बाज़ी हार गए,
उनकी बलिदानी से भारत माँ की भी आँखों में आँसू आ गए।

नहीं चुका सकते हैं इसका मोल हम सब इनकी गाथाओं को गाकर,
बस देश का मस्तक कभी ना झुकने दें करें हम सब प्रण आगे आकर।

जिन्होंने अंग्रेजों के तलवे चाटे उनके नाम पर उत्सव मनाए जाते हैं,
लेकिन इन सब वीरों के नाम आज भी कहीं नहीं गिनाए जाते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में हज़ारों सेनानियों के नाम सदा से गुमनाम हैं,
पर उन सभी वीर और वीरांगनाओं को मेरा तहे दिल से प्रणाम है।

वतन की सरज़मी के लिए इन्होंने अपने इश्क की तहरीर रची,
देश पर जान देकर इन शहीदों ने अपनी अंतिम तकदीर लिखी।

वतन पर मर मिट कर ये सब आसमाँ में तारा बन कर चमक रहे हैं,
हमारी भारत माता को आज़ादी दिला ये आज भी जगमग कर रहे हैं।
"स्वतंत्रता सेनानियों को शत शत नमन" करते हुए श्रद्धा पुष्प चढ़ाऊँ,
अपनी भारत माता के भाल पर इन सबके नाम का तिलक लगाऊँ



सोनू ठाकुर

मेरा नाम सोनू ठाकुर है और मैं वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में मध्यमा-२ की अध्यापिका हूँ। भारत में मैं चंडीगढ़ से हूँ और यहीं के पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य, शिक्षा और भाषा विज्ञान में परास्नातक तथा अनुवाद में डिप्लोमा प्राप्त किया है। मैं पिछले ६ वर्षों से हिंदी पाठशाला के साथ जुड़ी हुई हूँ।

यूँ ही नहीं "मेरा भारत महान",
मुसीबतों की भट्टी में तप कर,
अटल हौसलों के दम पर,
फिर मिला है यह सम्मान।

है नमन हमारा, हर उस सेनानी को,
प्राण देकर राष्ट्र को, कर गए आज़ाद जो,
बच्चा हो या हो बूढ़ा, औरत हो या जवान,
सबने अपने देश प्रेम का खूब दिया प्रमाण।

ऋणी रहेगी ये धारा उन पर सदा,
रुके नहीं जो, झुके नहीं जो, डटे रहे वो सपूत सदा,
हिम्मत ना हारी उन वीर जवानों ने,
आज़ादी इतनी ही प्यारी थी जिन्हें।

बचपन से ही सुनी पढ़ी हैं,
उन वीरों की शौर्य गाथायें,
जलियाँवाला बाग हो, या हो काले पानी की कड़ी सजायें।

अलग ही माटी के बने थे वो आज़ादी के मतवाले,
तन, मन, धन सब झोंक दिया, बने राष्ट्र के रखवाले,
आज़ादी को दुल्हन माना, पहना क्रांति का चोला,
किया समर्पित कतरा कतरा, एक बार ना कदम पीछे किया।

देश प्रेम से नहीं है बढ़कर, ना भक्ति ना धर्म कोई,
देश सेवा सा परोपकार ना कोई, और देश द्रोह सा पाप ना कोई।

माँओं ने खुद ही वारे, अपने घर के रोशन तारे,
हमें विरासत में जो दे गए, इंकलाब के थे वो नारे,
देश प्रेम की अमर ज्वाला जलाई जिन्होंने सीने में हमारे,
ऐसे वीर जवानो को है, शत-शत नमन हमारे
शत-शत नमन हमारे।

स्वतंत्रता सेनानियों को शत-शत नमन

गिर धरा पे खून से, जो लिख गए कहानी अपनी,
उन शहीदों को नमन, जो दे गए कुर्बानी अपनी।

१८५७ का जिसने बिगुल बजाया था,
मर्दानी कहकर हम सबने उसे बुलाया था,
शीश कटा पर ना झुका, जो दे गए अमर बलिदानी अपनी,
उन शहीदों को नमन, जो दे गए कुर्बानी अपनी।

वंदे मातरम के स्वरों ने पूरे भारत को जगाया था,
स्वराज हक है मेरा जिसने हम सब को बतलाया था,
इंक्रलाब की बोली बोले, और फंदे पर वार गए जां वो अपनी,
उन शहीदों को नमन, जो दे गए कुर्बानी अपनी।

है नमन उस माँ को जिसकी आँख में आँसू न था,
अजर अमर हो चले जो, कोई भाई तो किसी का बेटा भी था,
जय हिन्द की जयकार लिए, रक्त से पावन की मिट्टी वो अपनी
उन शहीदों को नमन, जो दे गए कुर्बानी अपनी।

अमित अग्रवाल, विल्टन हिन्दी पाठशाला



भारत की आत्म कथा – माँ भारती की जुबानी

कुछ कल था, है कुछ आज नया



इन्दु श्रीवास्तव

अपनी भावनाओं को कविता के रूप में लिख कर उसे आप सब के साथ साझा करने का मेरा यह प्रथम प्रयास है। इस प्रयास में मुझे बहुत आनंद आया। आप सभी को इस रचनात्मक प्रतियोगिता के लिए बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद। मैं मध्यमा-१ स्तर की स्तर संचालिका हूँ और पिछले १० वर्षों से साउथ ब्रन्सविक हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ की शिक्षिका हूँ।

कुछ कल था, है कुछ आज नया, मेरी आत्म कथा
करूँ यूँ मैं बयाँ..

जहाँ गुरु में ईश्वर देखें सब
जहाँ माँ का मान ही सब कुछ हो।
जहाँ कर्म की पूजा करते सब
और धर्म का पालन हर पल हो॥

परिवार में है हर पीढ़ी संग
वट वृक्ष की हों ये जड़ें जैसे।
जले दिए संग कभी दिया रंग
संस्कृति सनातन ना हो कैसे॥
कुछ कल था, है कुछ आज नया, मेरी आत्म कथा
करूँ यूँ मैं बयाँ..

क्या बात करूँ नये दौर की
जब कई विलक्षण पूत जने।
जो देश की और परदेस की
धरा पर उज्ज्वल सूर्य बने॥
हिन्दी को देकर समय दान
मेरी फिर पहचान बनी।
कला खेल राजनीति विज्ञान
चहुँ ओर भारतीय अग्रणी॥
कुछ कल था, है कुछ आज नया, मेरी आत्म कथा
करूँ यूँ मैं बयाँ..

कभी हार हुई कभी जीत मिली
हर बार नई कुछ सीख मिली ।
कभी प्राण गए कभी प्राण बचे
पर शीश पे गर्व के ताज सजे॥
कभी अलग थलग कभी साथ साथ
हर एक ने हर दम थामा हाथा।
मेरी लाज बची मेरी शान बढ़ी
मेरी शौर्य कथा सिर मोर चढ़ी॥

कुछ कल था, है कुछ आज नया, मेरी आत्म कथा
करूँ यूँ मैं बयाँ..
कुछ कल था, है कुछ आज नया, मेरी आत्म कथा
करूँ यूँ मैं बयाँ..



भारत की आत्म कथा



मीनाक्षी सारंगदेवोत (सिंह), वेस्ट विंडसर-प्लेसबोरो हिंदी पाठशाला में उच्चतर-२ की शिक्षिका एवं प्रथमा-१ की सह-संयोजिका हूँ। ९ वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. से अभिभावक और शिक्षिका के तौर पर जुड़ी हुई हूँ। मैं इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में कार्यरत हूँ। मुझे भारत, हिंदुत्व और हिंदी भाषा में बहुत रुचि है।

सदियाँ सुना रही व्यथा कथा
यह सतरंगी आत्मकथा, पर मैं शाश्वत हूँ
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

जिस धरा पर गीता श्लोक अमर, जहाँ राम राज्य रहा सदा प्रखर
जहाँ गंगा उज्ज्वल धार बहे, जहाँ रगों में शौर्य अगाढ़ बहे
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

चंगेज़ों से नहीं डरा, बाबर समक्ष फौलाद खड़ा
भूतल से अम्बर तक, प्रत्यक्ष पराक्रम रहा बड़ा
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

जहाँ धरा को मातृ सदश जान, अरि के संमुख रहे अड़े
मुग़लों से लोहा लेने को, जहाँ सांगा और प्रताप खड़े
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

जलियाँवाला में अतिक्रमण, फिर अंग्रेज़ों का प्रतिक्रमण
आज़ाद, सुखदेव जिसके रक्षक, वो भव्य राष्ट्र अनाहत हूँ
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

इस नई सदी में कैसा दुख, अपने ग्रंथों, रत्नों से विमुख
खोल चक्षु, देख परिस्थिति, पौराणिक ज्ञान के हो संमुख
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

जो था, जो है, जो सदा रहेगा, मैं वो भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ
हाँ मैं भारत हूँ, मैं ही तो भारत हूँ

भारत की आत्म कथा

योगिता मोदी, नार्थ ब्रुस्विक हिंदी पाठशाला

में, भारत हूँ। मेरे असीमित एवं विस्तृत इतिहास को किसी शाब्दिक सीमा में बांधना प्रत्यक्षत असंभव है। सतयुग से लेकर वर्तमान कलियुग तक के समूचे कालखंड की असंख्य उल्लेखनीय घटनाओं और गाथाओं को अपने आप में समेटे विशाल अध्यायों के वर्णन का कहाँ से श्री गणेश करूँ, यह एक दुरह कार्य है। फिर भी एक प्रयत्न अवश्य किया जा सकता है।

सम्भवतः इस सृष्टि का आरम्भ ही मेरा प्रारम्भ है। ईश्वर ने स्वयं अनेकों बार किसी न किसी रूप में हर युग में लीला स्वरूप इस धरती पर अवतरित होकर इसे धन्य और पवित्र किया तथा विश्व को राम-राज्य के रूप में शांति, सद्भाव और तदनन्तर गीता का आध्यत्मिक सन्देश दिया, जिसके प्रमाण आज भी यत्र-तत्र पाए और देखे जा सकते हैं। पतित पावनी माता गंगा-यमुना और ऐसी ही अनेकों पवित्र नदियों, सागरों, पर्वतराज हिमालय सहित अनेकों अन्य विशाल, उत्तंग पहाड़ों और उनसे जुड़ी सत्य कथाएं प्राचीन काल के मेरे अस्तित्व को सहज ही अंकित करती हैं।

मैं इस विश्व के मानचित्र पर चिह्नित मात्र एक भू-भाग नहीं हूँ बल्कि एक अत्यंत ही उन्नत, सुसंस्कृत, सनातन एवं वैज्ञानिक जीवन शैली भी हूँ जिसे प्लवित, पोषित और विकसित करने में मेरे अनगिनत वासियों ने अपना अतुलनीय योगदान दिया है। अनेक ऋषिओं-महर्षियों, तपस्वियों, विद्वानों, दार्शनिकों तथा धार्मिक गुरुओं ने उच्च कोटि के ज्ञानार्जन, साधना और मार्गदर्शन से अनेकानेक यशस्वी राजा-महाराजाओं ने अपने सुशासन द्वारा वीरों-महावीरों ने अपने अदम्य शौर्य और पराक्रम के माध्यम से प्रतिभावान रचनाकारों-कलाकारों ने अपनी उत्कृष्ट कला और यहाँ तक कि जन-साधारण ने भी यथाशक्ति एवं सामर्थ्यानुसार मेरी इस भूमि को विश्व

में एक श्रेष्ठ स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

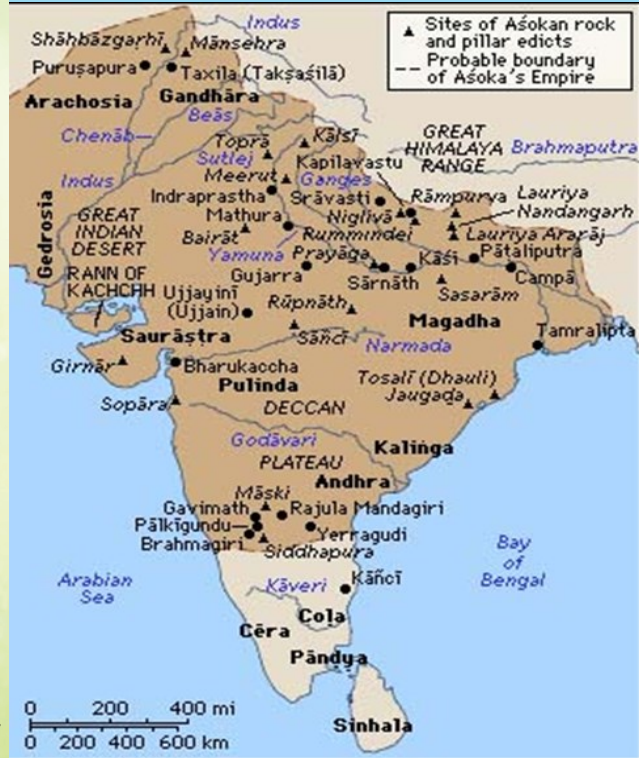
एक समय मेरी कीर्ति विश्व गुरु के रूप में स्थापित थी। श्रेष्ठतम मानव जीवन मूल्यों, सारगर्भित दार्शनिक विचारों, आस्थाओं, वैज्ञानिक सिद्धांतों एवं उन्नत शैक्षणिक ग्रंथों के सृजन से मेरी इन महान विभूतियों- पाणिनी (प्राचीन संस्कृत भाषाविद और व्याकरणवादी - अष्टाध्यायी ग्रन्थ), ऋषि पतंजलि (योग गुरु - योग सूत्र ग्रन्थ), चरक (आयुर्वेद विशारद-चरक संहिता) आर्यभट्ट (भारतीय गणितज्ञ और खगोल शास्त्री-आर्यभटीय ग्रंथ एवं शून्य का सिद्धांत) आदि ने समस्त विश्व को अचंभित और अविभूत किया था। प्राचीनकालीन एवं मध्यकालीन महान योद्धा एवं शासक पोरस, मौर्य वंश के शासक - चंद्रगुप्त, अशोक तथा उसके उपरांत अनेक प्रख्यात वंशों के पराक्रमी योद्धाओं और राजाओं - विक्रमादित्य, राजा कृष्णदेव राय, पृथ्वी राज चौहान महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी आदि ने मेरी इस भारत भूमि को बाहरी और आंतरिक आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखा और चहुंमुखी विकास किया। मौर्य साम्राज्य के संस्थापक आचार्य चाणक्य का उल्लेख मेरे इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। एक कुशल राजनीतिज्ञ, चतुर कूटनीतिज्ञ, प्रकांड अर्थशास्त्री के रूप में विश्वविख्यात चाणक्य ने अर्थशास्त्र ग्रन्थ की रचना की एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित जीवन दर्शन से मेरे मूलभूत स्वरूप को एक नया वैचारिक और व्यावहारिक आयाम मिला। देखा, मैं अभी भी प्राचीन काल के अध्याय पर ही हूँ, कहीं और उसके भी अभी कई पृष्ठ उलटने शेष हैं। जैसा कि मैंने पूर्व ही कहा था कि मेरे इतिहास को चंद शब्दों की सीमा में समेटना दुष्कर है, लेकिन

अपनी आत्म कथा के कई और सन्दर्भों से परिचय कराना भी आवश्यक है।

प्राचीनकाल और मध्यकाल में मेरी बहुमुखी सम्पन्नता अपने चरमोत्कर्ष पर थी इसीलिए मुझे सोने की चिड़िया भी कहा जाने लगा। लेकिन जैसा विदित है कि यह उन्नति और सम्पन्नता समय समय पर अनेक आक्राताओं को शूल की भांति चुभती रही और उसके फलस्वरूप मेरी इस पवित्र और शांत धरती पर अनेक बर्बर आक्रमण हुए। समय के साथ पूर्व में स्थापित कई मूल्यों का पतन हुआ जिससे मेरा अस्तित्व क्षत-विक्षत हुआ। मुगलों के विनाशकारी और फिर अंग्रेजों के कपटपूर्ण शासनकाल तथा आंतरिक षडयंत्रकारियों एवं धोखेबाजों के दुष्टकर्मों के कारण मेरे मूल स्वरूप की कांति कुछ समय के लिए धूमिल अवश्य हुयी, लेकिन सैकड़ों हज़ारों वर्षों के समृद्धशाली इतिहास, श्रेष्ठ मूल्यों तथा साहसी परम्पराओं में विश्वास रखने वाले अनेक वीर-वीरांगनाओं ने अतुलनीय साहस और अपने प्राणों के सर्वोच्च बलिदान से अंततः मुझे बाहरी आक्रमणकारियों से पूर्णतः मुक्त करा ही लिया। संपूर्ण स्वतंत्रता के पश्चात आधुनिक काल में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के अंतर्गत नव भारत के निर्माण हेतु आपसी भागीदारी से विकास और उन्नति के नए आयाम स्थापित हुए जो निरंतर जारी हैं। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामरिक, तकनीकी, वैज्ञानिक और

लगभग हर मोर्चे पर मेरे वासियों द्वारा किये जा रहे श्रृंखलाबद्ध एवं प्रगतिशील प्रयासों की सफलता के प्रति मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ और भविष्य में यही कामना है कि एक दिन मुझे अपना वही पुराना विश्वगुरु का स्थान पुनः प्राप्त हो एवं विश्व की मानव सभ्यता एक बार फिर सर्वोत्तम सनातनी संस्कृति को अपनाये।

प्राचीन भारत का मानचित्र



स्वतंत्रता के ७५ वर्ष – क्या खोया क्या पाया

श्रीमती इन्दु श्रीवास्तव, साउथ ब्रन्सविक हिन्दी पाठशाला

पंद्रह अगस्त १९४७ में भारत अंग्रेजों से स्वतंत्र हुआ। परंतु उस दिन वह सिर्फ एक देश को मिली हुई स्वतंत्रता थी – जिसमें हमारी सीमाओं पर अब हमारा अधिकार था, दिल्ली में बैठी सरकार अब हमारी चुनी हुई सरकार थी और अधिक कुछ नहीं क्योंकि हमारे राष्ट्र को कई रूपों में स्वतंत्रता नहीं मिली थी। कई वर्षों की गुलामी में हमने हमारी अमूल्य संस्कृति, समृद्ध भाषा, अद्भुत कला, प्राचीन भारतीय धरोहर एवम् गौरवशाली इतिहास को भुला सा दिया था। जैसे बहुत कुछ धन एक अंधेरी चादर में ढँका कहीं खो सा गया हो। यहाँ तक कि हमारी सोच को, जनमानस की मानसिकता को भी काफी हद तक स्वतंत्रता नहीं मिल पाई थी। उदाहरण के तौर पर हिन्दी भाषी देश में हिन्दी भाषा को उसकी समृद्धि, उसकी असल आजादी उसे पूरी तरह नहीं मिली पाई। वाल्मीकि ऋषि, चतुर चाणक्य जैसे बुद्धिजीवियों के देश में अंग्रेजों की अंग्रेजी भाषा ने कब भारतीयों की मानसिकता और प्रशासन तंत्र की व्यवस्था को जकड़ लिया पता ही नहीं चला और आज तक भी हमारी मानसिकता को जकड़े रखा है। हिन्दू बहुसंख्यक देश में हिन्दी भाषा का ज्ञान नहीं अपितु अंग्रेजी सीखना ही सभ्यता की निशानी बन गया था। परिणाम स्वरूप मातृभाषा हिन्दी बोलना, लिखना, पढ़ना लोग भूलने लगे और इसे सीखने से कतराने लगे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. और ऐसी कई अन्य संस्थाएँ भारत के बाहर और भारत भूमि में हिन्दी के प्रचार प्रसार में अपना समय दान और योग दान दे रही हैं। इस कारण से अब पुन हिन्दी को उसका खोया मान सम्मान मिलना शुरू हो गया है।

जप, ध्यान और योग तो सनातन समय से भारत की संस्कृति का हिस्सा रहे हैं, राजा से लेकर रंक तक हर एक की दिनचर्या में ये रचे बसे था।

लेकिन अनेक वर्षों के विदेशी शासकों की गुलामी, उनके कुप्रशासन और दुष्-प्रभाव के कारण इन सब नित्य कर्मों और आदतों का त्रास हो गया। कहते हैं न घर की मुर्गी दाल बराबर, यही हाल ध्यान प्राणायाम योग जप आदि का हुआ। जब योगा बनकर विदेशियों ने इन पद्धतियों को अपनाना शुरू किया तो विदेशी नकल की आदत वाली नई नस्ल ने बड़ी खुशी से इसे अपना लिया। हमने खोई हुई योग शक्ति का महत्व फिर से समझ लिया है और ऋषि मुनियों के इस ज्ञान को फिर से पा लिया है, अपना लिया है।

इसी तरह विज्ञान में भी भारत सदियों पहले से इतना अग्रणी था कि सौर मण्डल, नव ग्रहों और अनगिनत ग्रहों-राशियों के बारे में विस्तृत जानकारी हमें अपने पौराणिक ग्रंथों में वर्णित मिल जाती है। जैसे रामायण में वर्णित पुष्पक विमान हो या आयुर्वेद में वर्णित औषधियाँ हों या शून्य का ज्ञान हो। लेकिन जब भारतीय राजाओं में फूट डाल कर, विदेशी शासकों ने भारत का शासन हथिया लिया तब धीरे-धीरे बहुत सारे लिखित संकलनों को, लिखे शास्त्रों को, ज्ञान से भरे पुस्तकालयों को जला दिया गया या युद्ध के दौरान तोड़-फोड़ में नष्ट करवा दिया गया। पूर्वजों के असीम ज्ञान भंडार को हम बहुत कुछ खो चुके हैं और अब तक पुनः पूरा नहीं पा सके हैं। भारत के कई कुशल शिल्पकार विदेशी शासकों की क्रूरता के कारण सदियों पहले या तो मार दिए गए या वे डर कर गुमनामी के अंधेरे में खो गए/छुप गए। उनके साथ ही उनका वह ज्ञान खो गया और अगली पीढ़ी तक नहीं पहुँच पाया। आज भी भारत के दक्षिणी या पूर्वी क्षेत्रों में कई अ-कल्पनीय, अविश्वसनीय शिल्पकारी के नमूने देखने को मिल सकते हैं जो प्राचीन भारत की समृद्ध शिल्प कला,

भू विज्ञान, वास्तु शस्त्र, और वैज्ञानिक गणना के अद्भुत प्रमाण हैं। दुनिया के सात अजूबे शायद इनके आगे कुछ नहीं लगें। अभी तक सारे भारतीय खुद ही इन खोए से, अज्ञात से अजूबों के बारे में ज्यादा नहीं जानते तो सोचिए पूरी दुनिया को कैसे विश्वास होगा कि भारत कितना विकास शील देश, संस्कृति और सभ्यता में अक्वल राष्ट्र था, है, और आगे भी रह सकता है।

स्वतंत्रता के ७५ वर्षों में हमने सिर्फ खोया ही नहीं अपितु बहुत कुछ पाया भी है। टुकड़ों में, अलग-अलग राज्यों में शासन करते राजा ही तो हमारी कमजोर कड़ी थे जिसके कारण विदेशी लुटेरे भारत पर शासन कर पाए और कई वर्षों तक करते चले गए। अंग्रेज भी हमारी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर जाते-जाते भारत का विभाजन कर पाकिस्तान और बांग्लादेश को बना गए। अब हम जानते हैं कि एक दूसरे के साथ हाथ मिलाकर रहने में, एकता में कितनी बड़ी शक्ति है। अखण्ड और स्वतंत्र भारत में हर स्वाभिमानी भारतीय ने इसके महत्व को समझा और अब साथ मिलकर देश के विकास में प्रयत्नरत हो गया है।

आजाद भारत में सरकार और समाज-सेवकों ने राष्ट्र की प्रगति को पीछे खींचती कुरीतियों जैसे जाति पर आधारित सामाजिक भेदभाव की प्रथा, कन्या भ्रूण पर अत्याचार, बाल विवाह आदि को प्रतिबंधित किया। बैंकों के राष्ट्रीयकरण, किसानों को वित्तीय सहायता, महिलाओं को समान रूप से उच्च शिक्षा प्रदान करने जैसी सुनीतियों से भारत की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ किया है। आज की भारतीय पीढ़ी ने विज्ञान में जहाँ मंगल तक की यात्रा संभव करवा दी है वहीं गूगल, याहू, आईबीएम, टी.सी.एस. जैसी अति आधुनिक, अंतर्राष्ट्रीय और विशाल तकनीकी कंपनियों में शीर्ष पद पर पहुँच कर उनका कुशल नेतृत्व कर भारत का मान बढ़ाया है। राजनीति में भी भारत ने आज अपने कुशल नेतृत्व में, खुद के दम

पर, सुनियोजित प्रशासन के द्वारा, विश्व स्तर पर एक शीर्ष नेता बनने का सम्मान पा लिया है। आज विश्व का हर देश हमें हैरत से देख रहा है, हमसे सीख रहा है, हमारी भूरी-भूरी प्रशंसा कर रहा है। पिछले कुछ सालों में मेरे जैसे कई भारतीय मूल के लोगों ने भारत से दूर सात समंदर पार अपना नया जीवन शुरू किया। नए अवसर और चुनौतियों को अपनाया और सफलता प्राप्त की है। इस तरह भारत से दूर रह कर भी असंख्य भारतीयों ने भारत को गौरवान्वित किया है और अपनी मातृभूमि की गरिमा को और भी करीब से जानना शुरू कर दिया है। आज दुनिया भर में रह रहे भारतीय मूल के अप्रवासियों ने अपनी खोई अस्मिता को समझा है। जिस ज्ञान के भंडार को सदियों की गुलामी के कारण हमने खोया था उसे पुनः पाना होगा – यह आभास हमें करा दिया है। हमें स्वतंत्र होने का सिर्फ ढोल नहीं बजाना है बल्कि खुद को, अपने मित्रों को, अपनी अगली पीढ़ी को भारत के नक्शे के हर कोने से पहचान करवानी होगी, मिलवाना होगा सुदूर ऐतिहासिक स्थानों के बारे में बताना होगा रामायण, महाभारत, गीता, वेद-पुराण आदि में सजोये ज्ञान और विज्ञान को समझना होगा, चार लोगों के बीच भारतीय संस्कृति को चर्चा का विषय बनाना होगा। तभी हम समझ पाएँगे कि हमने क्या खोया था और अब तक क्या पाया है और आगे अब क्या कुछ और पाना है।

आज हम पीछे मुड़ कर देखें तो लगता है हमने स्वतंत्रता के ७५ वर्षों में जितना खोया था उससे कहीं अधिक पा लिया है। किन्तु यह भी सच है कि अभी और बहुत कुछ पाना बाकी है। हम सब मिलकर अपना अगला रचनात्मक कदम उठायें, कमर कस के मिलजुल कर अपने सपनों को साकार करने में एकजुट हो जायें जिससे कि हम भारत की श्रेष्ठता का तिरंगा, चमकीला ध्वज सम्पूर्ण ब्रह्मांड में लहरा पायें। जय भारत !! जय हिन्द !!

मेरी दृष्टि में भारत का स्वतंत्रता संग्राम

सीमा वशिष्ठ, प्लेंसबोरो पाठशाला, शिक्षिका मध्यमा-२



सीमा वशिष्ठ

भारत का स्वतंत्रता संग्राम। यह सुनते ही सबसे पहले जो विचार मेरे मस्तिष्क में कौंध जाता है वह है, समुद्र मंथन! यदि आप इन दोनों घटनाओं की तुलना करें तो आप पाएँगे कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम और पौराणिक काल के समुद्र मंथन की घटना में बहुत सी समानताएँ हैं। दोनों में ही अच्छाई और बुराई के बीच का संघर्ष, सत्ता और सम्मान के बीच का युद्ध, वर्चस्व और सद्भावना के बीच की लड़ाई थी। जिस प्रकार समुद्र मंथन में अमृत के साथ विष की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार हमारे स्वतंत्रता संग्राम में हमें स्वाधीनता की प्राप्ति तो हुई, किंतु साथ ही साथ देशवासियों को बँटवारे का दंश भी झेलना पड़ा। भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से तो हमने मुक्त कर दिया, किंतु उनकी दोनों भुजाएँ नहीं बचा पाए। रक्तरंजित भारत माता पीड़ा से कराह उठीं। उनके सपूतों ने विष का घूँट पिया और यह प्रण लिया कि एक ना एक दिन भारत माता को उनका सम्पूर्ण सम्मान अवश्य दिलाया जाएगा।

तत्कालीन एकता और सामंजस्य के अभाव में भले ही भारत पराधीन हो गया था, किन्तु अंततः भारत माता को विदेशी आक्रांताओं के क्रूर पंजों से मुक्ति दिलाने के लिए देश की मिट्टी के कण-कण से वीर और वीरांगनाएं सामने आईं। स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े, जवान, किसान, राजा, महाराजा, विद्यार्थी, शिक्षक, अर्थात् समाज के हर वर्ग से लोग आगे आए और स्वाधीनता रूपी यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। देश के जिन साहसी बेटों-बेटियों ने हँसते-हँसते अपने शीश भारत माता के चरणों में अर्पित कर दिए, उनका मस्तक गर्व से सदैव ऊँचा रहे, यह हमारा परम कर्तव्य है। हमारी स्वतंत्रता किसी एक

स्वतंत्रता सेनानी के प्रयत्नों का फल नहीं बल्कि अनेक ऐसे वीरों का अथक और निरंतर प्रयास है जिन्हें हम उनके बलिदानों के लिए जितना भी याद करें कम ही है। हम स्वतंत्र हो पाए क्योंकि सबसे पहले हमारे वीरों ने स्वयं को मानसिक रूप से स्वतंत्र किया, भय से, स्वार्थ से, लालच से। उन्होंने निस्वार्थ प्रेम किया, अपनी मातृभूमि से, देशवासियों से, अपनी सभ्यता और संस्कारों से, परम्पराओं से और अपने आदर्शों से। अपनी सुख-सुविधाओं, परिवार, और प्राणों को न्योछावर किया आगे आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु। देश के जन-जन में देशप्रेम की एक अलख जगाई और स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। स्वतंत्र होना जितना महत्वपूर्ण था उतना ही मूल्यवान है उस स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना और देश को प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़ बनाना। अपनी भाषा, संस्कृति और विरासत को बचाना और बढ़ाना।

भारत भूमि सहनशीलता का प्रतीक है, सद्भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है, परंतु बात जब मातृभूमि के स्वाभिमान की हो तो कोई समझौता स्वीकार नहीं और यह बात सम्पूर्ण विश्व भली-भाँति समझ चुका है। सर्वे भवन्तु सुखिन और वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी संस्कृति के द्योतक है, किन्तु हमारी सरलता और सहृदयता को शक्तिहीनता कदापि न समझा जाये। जिस संस्कृति में समुद्र मंथन का विष पी कर भी धैर्य रखा जाता है वहाँ समय आने पर त्रिनेत्र भी खोला जाता है। आज भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है किन्तु संग्राम अभी भी जारी है। स्वाभिमान का संग्राम, सत्य का संग्राम, समानता का संग्राम और अखण्ड भारत को पुनः प्राप्त करने का संग्राम। वन्दे मातरम्!

परतंत्र के पहले और स्वतंत्रता के बाद भारत

माया शेडजी



मेरा नाम माया शेडजी है। मेरा पोता नील देशपांडे है। वह मांटगोमेरी हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ रहा है। मुझे अपने पोते पर उसके हिंदी पाठशाला में पढ़ने के समर्पण के लिए गर्व है। उसने मुझे यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया। मुझे आशा है कि आप इसे पसन्द करेंगे।

परतंत्रता के पहले भारत बहुत ही खुशहाल था शायद इसलिए उसे सोने की चिड़िया कहते थे। धर्म और संस्कृति के हिसाब से भारत बहुत ही समृद्ध देश था। हडप्पा और मोहंजदाडो ये उसके उदाहरण हैं। शुरु से ही भारत एक आत्मनिर्भर देश रहा है। यहाँ के छोटे-छोटे गाँव भी आत्मनिर्भर थे। किसान, लुहार, कुम्हार ये सारे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी बनायी हुई वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे। उस समय आदान-प्रदान का माध्यम पैसा नहीं होता था बल्कि अपनी बनी हुई वस्तुएँ ही होती थीं। यहाँ पर सुश्रुत और चरक जैसे महान शल्यचिकित्सक हुए थे।

परतंत्रता के पहले यहाँ अनेक राजपूत राजा राज्य करते थे। परंतु उनकी आपसी समस्याओं का लाभ अनेक विद्रोहियों ने लिया और भारत को लुटना शुरु किया। इस तरह लगभग एक हजार वर्ष तक भारत गुलामी में जीता रहा।

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को असंख्य बलिदान और त्याग के कारण भारत स्वतंत्र हुआ। गुलामी और विदेशियों के अत्याचारों के कारण

भारत खोखला हो चुका था। उसे ऊपर उठाने के लिए अनेक लोगों ने जी तोड़ प्रयत्न किए।

खेती के क्षेत्र में नई-नई तकनीकों का प्रयोग किया गया। नये बीज, नई खाद लाये गए। बैलों के बजाय ट्रैक्टर का उपयोग होने लगा। यातायात की सुविधा बढ़ गयी इससे किसान अपनी फसल बड़ी-बड़ी मंडियों तक पहुंचाने लगा है। शीत भंडारों में अपना सामान रखने की सुविधा उन्हें प्राप्त हुई है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति हुई है। हर गाँव में अब पाठशालाएँ खुल गई हैं। अब विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा लेने की सुविधा प्राप्त हुई है।

आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध कराये जा रहे हैं। नये-नये कारखाने लगाए जा रहे हैं।

टेक्नालॉजी में भी भारत अब बहुत आगे है। मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर इन क्षेत्रों में तो भारत दूसरे देशों से तो कम नहीं है।

इसी वजह से भारत दूसरे देशों से जुड़ गया है। इस तरह आजादी के बाद भारत प्रगति की ऊँचाई पर चढ़ रहा है।

"हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं हो सकती थी"

~ अल्बर्ट आइंस्टीन

मेरी दृष्टि में भविष्य का भारत



नमस्ते, मेरा नाम निरल देसाई है। मैं, नार्थ ब्रुस्विक हिंदी यू.एस.ए. में कनिष्ठ-२ में पिछले पाँच वर्षों से पढ़ा रही हूँ। मेरे दोनों बेटे भी हिंदी कक्षाओं - मध्यमा-१ एवं उच्चतर-१ में पढ़ रहे हैं। भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के अमूल्य अवसर पर मुझे अपने देश के बारे में लिखने का अवसर मिला। उसके लिए मैं हिंदी यू.एस.ए. का दिल से धन्यवाद करती हूँ। मुझे बहुत ही गर्व है कि मैं हिंदी यू.एस.ए. परिवार से जुड़ी हूँ। इस कर्मभूमि पत्रिका के माध्यम से मैं अपनी मातृभूमि माँ भारती के बारे में अपने कुछ विचार प्रस्तुत कर रही हूँ।

मातृभूमि को मेरा शत्-शत् नमन।

मेरी दृष्टि से भविष्य का भारत ऐसा हो जिसमें

- * हर एक नागरिक को अपने भारतीय होने पर पूरा गर्व हो तथा वे अपनी नागरिकता के सारे कर्तव्य अच्छी तरह से निभाएँ।
- * हर एक नागरिक अपने मताधिकार का जिम्मेवारी से इस्तेमाल करे, सही-गलत का फर्क ठीक से समझे और देश के हित में जो नेता खड़े हों उन्हें ही अपना मत दे, जिससे हर राज्य में अपने प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जैसा देशभक्त नेता शासन चलाये।
- * हर एक पाठशाला में बच्चों को भारत का सच्चा इतिहास सिखाया जाये। भारत के सभी प्रांतों के सारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों के बारे में बच्चों को गर्व हो। हर एक बच्चा भारत के महान वीरों को अपना आदर्श माने।
- * रामायण, महाभारत, गीता और ऐसे सनातन ग्रंथों का ज्ञान बच्चों को हो। बच्चों के लिए विभिन्न स्तर पर रामायण ओलिंपियाड जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन हो। ऐसे विषयों पर पाठशालाओं में चर्चा, निबंध लेखन जैसी स्पर्धाओं का आयोजन नियमित रूप से हो

- * हर एक नागरिक को अपने देश के अमूल्य सांस्कृतिक विरासतों और पारम्परिक मूल्यों पर गर्व हो। वे पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण न करें और आने वाली पीढ़ियों को अपने देश की संस्कृति की महानता के बारे में समझाए।
- * हर एक घर में लोग योग और व्यायाम करें। ध्यान और आध्यात्मिक चिंतन को लोग अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना दें।
- * देश के युवाओं के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो, ताकि जरूरत होने पर वे सेना को मदद कर सकें। सैनिक शिक्षा से नागरिक अनुशासन में वृद्धि होगी।

मेरे विचार से सभ्य और सुसंस्कृत समाज की रचना के लिए समाज के ये तीन संस्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं १) धर्म संस्था २) शिक्षा संस्था ३) राज्य सत्ता। इन तीनों संस्थानों को मजबूत बनाने के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए। समाज, सत्ता और संपत्ति के प्रभाव से मुक्त हो। समाज हर भ्रष्ट और व्यभिचारी व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार करे। **सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा। जय हिन्द। भारत माता की जय।**



विश्वजीत

ऑनलाइन बाबा

विश्वजीत वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ के अध्यापक हैं। इन्होंने गणित में विद्यावाचस्पति (PhD) की उपाधि प्राप्त की है, परंतु इन्हें हिन्दी से विशेष लगाव है। ये भारत में बरेली से हैं तथा अमेरिका में एडिसन, न्यूजर्सी में रहते हैं।

चल रही सूचना की भरमार, आजकल के युग में
जान का है भंडार, हर किसी पर हद में
अधूरे ज्ञान से लदर पदर, नहीं सो पाते रात में
परेशान हैं हर दम, उसे बांटने के चक्कर में
लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में

आव न देखा ताव, बस भेज दिया व्हाट्सप्प में
कुछ ही पल हैं लगते, फारवर्ड करने में
खुद तो पढ़ते ही नहीं हैं, क्या लिखा है मैसेज में
इतने ज़्यादा व्यस्त हैं, बस फारवर्ड करने में
लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में

इतने बाबे, इतने ढोंगी, ऑनलाइन बिजिनेस में
इनके ज्ञान से तो भैया, दर्द हो जाये सर में
खो जाता है ग्रुप का उद्देश्य, फालतू के ज्ञान में
टुटते हैं दिल कई बार, ऑनलाइन झगड़े में
लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में
छोड़ देते हैं लोग ग्रुप, इससे उत्पन्न गुस्से में

फुर्सत कहाँ किसी को, झगड़े को निपटाने में
चिंता कहाँ रिश्तों की, बस चिपके हुए हैं फ़ोन से
सामने बैठे की क्या बिसात, ऑनलाइन हो तो करो
बात
लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में

हॉलीवुड में और बॉलीवुड में, पॉलिटिक्स में,
अमरीका और लंदन में, क्या है चल रहा
क्या चल रहा है, मोदी, योगी, और पप्पू की दुनिया
में
सब पता हैं इन्हे, बस नहीं पता तो क्या है खुदके
मन में

लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में

ज्ञान का बोझ संभल नहीं रहा, इनके मन में
दर्द है इनकी कमर में, गर्दन में, और मन में
समझते ही नहीं हैं, मेरी बात को इशारों में
नहीं इंटरैस्ट है मेरा, तुम्हारे फारवर्डस में
लगे पड़े हैं दिन रात, बस फारवर्ड करने में

"अगर मुझसे पूछा जाए कि किस आकाश के नीचे मानव मन ने अपने कुछ चुनिंदा उपहारों को पूरी तरह से विकसित किया है, जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर सबसे अधिक गहराई से विचार किया है, और समाधान ढूँढ लिया है, तो मुझे भारत की ओर इशारा करना चाहिए"

~ मैक्स मुलर

प्रेम और स्तुति सुमनों की भावांजली

प्रिया गोडबोले, एडिसन हिन्दी पाठशाला

नमस्ते, मैं, प्रिया गोडबोले, हिंदी यू.एस.ए में आठ साल से शिक्षा सेवा अर्पण कर रही हूँ। मैं पुणे, महाराष्ट्र में पली बड़ी हुई, जिसे 'विद्या का मायका' कहा जाता है। पढ़ाई तो मेरी यांत्रिकी में हुई, लेकिन मुझे बचपन से ही संगीत, साहित्य, नाटक में रुचि रही है और मैंने अपने शिक्षा जीवन से ही मराठी कविता, कहानियाँ, लेख इत्यादि लिखना शुरू कर दिया था। मुझे सकारात्मक विषयों पर और बाल साहित्य लिखने में अधिक रुचि है। मुझे आप सब को बताते हुए बहुत खुशी होती है कि पिछले साल मुझे मराठी विश्व न्यू जर्सी जो की पूरे यू.एस.ए. में सबसे बड़ा महाराष्ट्र मंडल है, के रंगदीप नामक वार्षिक अंक का संपादक बनने का मौका मिला। दो सौ से भी अधिक, अनेकों प्रकार के लेख, कविताएं, बाल कथाएं इत्यादि मुझे पढ़ने और जांचने को मिली। पहले पृष्ठ से लेकर अंक छपने तक, और मराठी की प्रसिद्ध अभिनेत्री और कथक गुरु अर्चना जोगलेकर जी के हाथों से प्रकाशित होने तक यह मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव रहा है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की बहुत आभारी हूँ, जहाँ मुझे मेरी कविताएं सुनाने का मौका मिला।

स्वतंत्र सदा

इस धरती पर है जनम लिया,
इस मिट्टी से है प्यार मुझे,
हो जाती है आँखें नम मेरी,
मेरे देश का कोई जब नाम भी ले
मेरा देश सदा ही स्वतंत्र रहे।

हैं धनी सहिष्णुता के हम भारतवासी,
झेले हैं कितने संहार
सहन किये हैं कितने वार,
अगणित शत्रुओं की बौछार
सच्चाई की राह कभी न छोड़े,
मेरा देश सदा ही स्वतंत्र रहे

बदलाव हैं मांग, है आज की शान,
नित नए विचार, हर सोच में प्राण,
हो साफ नजर, नारी या नर,

हो एक ही स्तर, चाहे जो डगर,
बदले स्वतंत्रता की भाषा,
विचारों के कोलाहल से निकल बाहर

तोड़ कर देखे वो, अनदेखे, अनैतिक बंधन,
जिसमें हो ऊँच-नीच का चीरहरण
बढ़ाकर तो देखे सम्मान एक दूसरे के प्रति,
जीव जंतु या हो हरियाली सुनहरी
देखे तो स्वतंत्रता के बदल के मायने,
जिससे मेरा देश सदा ही स्वतंत्र रहे।

है बीत गया है समय बहुत,
परदेस में आकर ठहर गए,
सौगंध है उस धरती की हमें,
गर माँ का नाम न लेते भी
खवाबों में जाकर सहज लिये,
मेरा देश सदा ही स्वतंत्र रहे

कान्हा आए सपनों में

उस दिन कान्हा आए सपनों में
सो रहे थे हम जिस सोच को लेकर
उस सोच के बिंदु का आवर्तन करने
उस दिन कान्हा आए सपनों में

सोच में शायद कहीं थे कन्हैया, और थी उनकी बांसुरी
इतना जरूर सोचा था कल उत्सव में होगी खुशहाली
पहन रंगारंग वस्त्र, आभूषण जैसे मोती
सज-धज श्रृंगार मनमोहक, खुशियां जैसे खिलखिलाती हंसरी

सोचा पहने काजल, आंखों में हो लाज सजल
बिंदिया, चूड़ी लाल हरी हो, दर्पण हो जाए गगन
घूम घूम के लहराए चुनरिया, हर एक रंग में मगन
बस, आस उसी की पलके खोजे, जब देखे हमे सजन

आएगा जब दिन उत्सव का, प्रात ही जाग जाएंगे
गीली मिट्टी की खुशबू में रंगोली के रंग भरेंगे
उबटन की सुगंध से महक उठेगा परिसर
भर लायेंगे टोकरियों में लो आया सप्तरंगों का अवसर

था मन में यही, इंद्रधनु सी लड़ी, जो खेलेंगे जी भर के
रंग

तन मन में, हर पल हर क्षण हो गिरिधर ही का संग
मुस्काएंगे जब कृष्ण सखा प्रसन्नता से देख हमें
बारिश होगी रंगों की जो होली हम आज खेलेंगे

बस इतनी सी तो बात ही थी, खयालों में जो हम उलझ
गए

हृदय से हृदय तक जो तार जुड़ी, पहुंच गई वृंदावन में
झट से निकले होंगे फिर मधुबन से मिलने अपने भक्त से
और उसी दिन, उसी क्षण, मेरे कान्हा आए मेरे सपनों में
मेरे कान्हा आए सपनों में।

सच्चे मन की बोली

सदी आज की हमें पुकारे डाल गले में हार
आओ बच्चों मिल बनाए इस धरती पर संसार।

इस सदी की हम क्या बात करें, यह पहले से हैं बेहतर
नए सोच और नए विचारों का मिल रहा है अवसर।

आज के तुम और आज के हम में कोई नहीं है अंतर
ऊंच-नीच के नामों का भी हो रहा है विस्मरण।

कंधे से कंधा मिलाकर चलना है जरूरी
मलिन विचारों में परिवर्तन लाना है जिम्मेदारी।

शिक्षा है सम्मान हमारा, शिक्षा है अधिकार हमारा
शिक्षा के बल पर ही हम जीतेंगे विश्वास दोबारा।

क्यों ठहरे कल तक हम, की कोई और आयेगा बदलने
आज की सोच है, आज की मांग है, आज ही कर
दिखलायें।

हाथ हमारे दसो-करोड़ों, बुद्धि जैसे बहती गंगा
शिवजी जैसी त्रिनेत्र शक्ति, वैसे एकजुट हो ध्यान हमारा।

तकनीक भी है संसाधन भी, अब जोड़ ले सारे विचार
आये काम भी उनके हम जो वंचित रहते हर बार।

एक दूसरे को हम ही उठाए, गर गिर रहा हो कोई
नहीं करे हम स्पर्धा जिससे, भरोसों में आये दूरी।

इसी सदी में बनना है शास्त्रज्ञ, कवी या चिकित्सक
पहले क्यों न दिखाए बनकर मानवता का सेवक।

क्यों काम करे हम आधा-सादा, जब ईश्वर ने जन्माया पूरा
रह के नतमस्तक हम उसके, गुणी सदा, ऋणी सदा।

भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि



नमस्कार, मेरा नाम स्मिता सेठ है। मैं स्टैमफोर्ड में कक्षा मध्यमा-१ की शिक्षिका हूँ। मुझे अपनी दिनचर्या से थोड़ा वक़्त निकाल कर बच्चों को हिंदी पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है। इस बार कर्मभूमि पत्रिका का विषय था "भारत की आज़ादी के ७५ वर्ष", मैंने इसी विषय पर अपने देश के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में लिखने का प्रयास किया है।

भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुआ था। हम हर साल इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मानते हैं। आज भारत की स्वतंत्रता को ७५ वर्ष हो गए हैं। भारत देश को आज़ाद कराने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान दिया। भारत के हर नागरिक का कर्तव्य बनता है कि इन स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि दे। भारत भूमि में ऐसे कई योद्धा पैदा हुए जिन्होंने अपनी युवावस्था में ही लड़ाई का ऐलान कर दिया और भारतीय इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गए। ऐसे ही कुछ महान नामों का वर्णन मैं आज कर रही हूँ।

रानी लक्ष्मी बाई

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों की सत्ता के सामने घुटने टेकने से मना कर दिया और अपनी झाँसी को बचाने के लिए १८५७ में उनके खिलाफ जंग छेड़ दी। रानी लक्ष्मी बाई का भारत की आज़ादी में विशेष योगदान था। इनका नाम भारत के स्वतंत्रता सेनानियों में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी को भारत का राष्ट्रपिता भी कहा जाता है। महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, साइमन वापस

जाओ, नागरिक अवज्ञा आन्दोलन और अन्य बहुत से आन्दोलन शुरू किए। महात्मा गाँधी अहिंसा पर विश्वास रखते थे और सब को तन मन धन से स्वदेशी बनने के लिए प्रेरित करते थे। महात्मा गाँधी की कोशिशों के कारण ही अंग्रेजों ने १५ अगस्त १९४७ को देश छोड़ दिया।

पंडित जवाहरलाल नेहरू

नेहरू जी महात्मा गाँधी के संपर्क में आने के बाद आज़ादी की लड़ाई में शामिल हो गए और बाद में भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी बनाए गए। आज़ादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने। पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिन १४ नवंबर को बाल दिवस के रूप में मनाते हैं क्योंकि बच्चों से उन्हें विशेष प्रेम था।

लाला लाजपत राय

भारतीय नेशनल कांग्रेस के लाला लाजपत राय बहुत प्रसिद्ध नेता और भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे। लाला लाजपत राय लाल बाल पाल की तिकड़ी में शामिल थे। ये कांग्रेस के मुख्य और प्रसिद्ध नेता थे। जलियाँवाला हत्याकांड के विरुद्ध उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया था। लाला लाजपत राय जी पंजाब केसरी नाम से प्रसिद्ध थे।

लाल बहादुर शास्त्री

लाल बहादुर शास्त्री ने देश की आज़ादी के लिए नमक सत्याग्रह आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया था। आज़ादी के समय उन्होंने ९ साल जेल में भी बिताये। आज़ादी के बाद वे होम मिनिस्टर बन गए और फिर १९६४ में देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। “जय जवान जय किसान” का नारा इन्होंने ही दिया था। १९६७ में भारत पाकिस्तान की लड़ाई उनके ही निर्देशन में हुई थी।

बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक ने “स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे” नारा दिया था। इन्हें “भारतीय अशांति के पिता” कहा जाता था। ये लोगों को आज़ादी की लड़ाई में साथ देने के लिए प्रेरित करते थे।

सरदार वल्लभभाई पटेल

वल्लभ भाई जी ने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन में हिस्सा लिया था। वे भारतीय कांग्रेस के नेता थे। इन्होंने आज़ादी के बाद भारत को संभाला। इन्होंने ही लोगों को समझाया कि देश में एक सरकार का होना आवश्यक है वरना देश बिखर जायेगा। इन्होंने आज़ादी से पहले और आज़ादी के बाद महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सरोजनी नायडू

सरोजनी नायडू पहली महिला थी जो भारत व भारतीय नेशनल कांग्रेस की गवर्नर बनीं। सरोजनी नायडू एक कवयित्री और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। ये अपनी कविता और भाषण के माध्यम से स्वतंत्रता के बारे में लोगों को बताती थीं। इनका जन्मदिवस अब महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

चंद्रशेखर आज़ाद

चंद्रशेखर आज़ाद ने स्वतंत्रता की लड़ाई में युवा क्रांतिकारियों की एक फौज खड़ी कर दी थी। उन्होंने युवाओं को प्रेरित किया था। वे महात्मा गाँधी से

अलग कार्य करते थे क्योंकि उन्हें लगता था की लड़ाई के लिए हिंसा जरूरी है। ये अपने नाम की तरह ही आज़ाद थे। इन्होंने काकोरी ट्रेन लूटने की योजना बनाई थी और इसे लूटा भी था।

भगत सिंह

चंद्रशेखर आज़ाद के साथ मिलकर इन्होंने आज़ादी के लिए बहुत से कार्य किए।

१९२१ में इन्होंने असहयोग आन्दोलन में अपनी हिस्सेदारी दी, लेकिन हिंसात्मक लड़ाई के समर्थक होने के कारण भगत ने यह छोड़ नौजवान भारत सभा बनाई।

१९२९ में इन्होंने अपने आप को पकड़वाने के लिए संसद में बम फेंका था, जिसके बाद इन्हें २३ मार्च १९३१ को राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी की सजा दी गई।

मंगल पांडेय

भारत के इतिहास में स्वतंत्रता सेनानियों में सबसे पहले मंगल पांडे का नाम आता है। १८५७ की लड़ाई के समय से इन्होंने आज़ादी की लड़ाई छेड़ी दी और सबको इसमें साथ देने को कहा था।

१८४७ में खबर फैली की ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जो बंदूक का कारतूस बनाया जाता है, उसमें गाय की चर्बी का इस्तेमाल होता है। इसे चलाने के लिए कारतूस को मुँह से खींचना पड़ता था, जिससे गाय की चर्बी मुँह में लगती थी, जो हिन्दू मुस्लिम दोनों धर्मों के खिलाफ था। उन्होंने कंपनी को बहुत समझाया और फिर उनके खिलाफ जंग कर दी।

ऐसे ही कई और नाम हैं जिन्होंने भारत को आज़ाद कराने में सहयोग दिया और खुद को बलिदान कर दिया।

भारत के इन सब वीरों को मेरा नमन। मुझे अपनी मातृभूमि पर गर्व है।



ज्ञान विज्ञान के आलोक से जगमगाए अपनी

वागीशा शर्मा

आज़ादी का अमृतोत्सव

इंदौर, भारत

वागीशा शर्मा चार वर्ष की उम्र से लेखन एवं मंच प्रस्तुतियों के क्षेत्र में सघनता से जुड़ी हुई हैं। रामायण, गीता, वेद, योग व पुराणों जैसे भारतीय संस्कृति के विविध विषयों पर वागीशा काव्य पाठ तथा लेखन के कार्य करती हैं। सैकड़ों मंचों व सैटेलाइट टी.वी. चैनलों पर वागीशा ने बड़े कार्यक्रम पेश किये हैं। दो सौ से अधिक पुरस्कार प्राप्त वागीशा को अनेक राज्यपालों, मंत्रियों, व वरिष्ठ कलमकारों ने सम्मानित किया है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से पत्रकारिता व जनसंचार विषय में स्नातक की डिग्री प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान, गोल्ड मैडल के साथ वागीशा ने हासिल की है। K.G से लेकर P.G तक की हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर चुकी वागीशा वर्तमान में दिल्ली से लोक प्रशासन विषय की स्नातकोत्तर के अंतिम सेमेस्टर की पढ़ाई कर रही हैं।

संपूर्ण भारतवर्ष में १५ अगस्त २०२१ से १५ अगस्त २०२२ तक की एक वर्ष की समयावधि आज़ादी के अमृत उत्सव के रूप में उल्लासपूर्वक मनाई जा रही है। नगर-नगर, गांव-गांव, शासकीय व अशासकीय स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक, देशभक्ति से परिपूर्ण, शैक्षणिक व क्रीड़ा गतिविधियाँ आयोजित हो रही हैं। इन सब का उद्देश्य, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को स्मरण करना व स्वतंत्र भारत के वर्तमान व भविष्य को उन्नत व स्वर्णिम बनाना है। हर भारतीय जानता है कि भारत माता सैकड़ों सालों तक परतंत्रता की श्रृंखलाओं में जकड़ी रहीं थीं। शनैः शनैः भारतीय जन मानस में आज़ादी का शंखनाद हुआ। देश की जनता अंगड़ाई लेकर उठ खड़ी हुई। बिना इंटरनेट, बिना मोबाइल व बिना आधुनिक संचार साधनों के भी किसी देश के करोड़ों लोग अपनी मातृभूमि की रक्षा व स्वतंत्रता के लिये जागृत होकर नैतिक युद्ध लड़ सकते हैं व विजय भी हासिल कर सकते हैं, भारत का स्वातंत्र्य आंदोलन विश्व के सम्मुख इस बात का अद्वितीय उदाहरण है। केवल राजनीतिक ही

नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक आंदोलनों के समन्वित परिणाम का प्रतिफल है भारत की स्वतंत्रता। स्वामी दयानंद सरस्वती के आर्य समाज, राजा राममोहन राय के ब्रह्म समाज, रानी लक्ष्मीबाई के पराक्रम, श्रीमती एनिबेसेंट की थियोसोफिकल सोसायटी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के गणेशोत्सव व शक्ति पर्व, विवेकानंद की नवीनतम वैदिक अवधारणा, महात्मा गांधी के सत्याग्रह, ऊधम सिंह की गोली, भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का कमसिन उम्र में अनुपम त्याग, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आज़ाद हिंद फौज की वीरता और अनगिन गुमनाम देश भक्तों के महान संघर्ष व बलिदानों के परिणामस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को भारत में छायी



परतंत्रता की कालिमा को स्वतंत्रता की लालिमा ने पोंछ दिया। आज हम जो स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं इसकी नींव में हमारे पुरखों का संघर्ष, त्याग, तपस्या व आत्मबलिदान है।

**केवल राजनीतिक ही नहीं,
सामाजिक, सांस्कृतिक व
धार्मिक आंदोलनों के समन्वित
परिणाम का प्रतिफल है भारत
की स्वतंत्रता।**

वर्तमान में जब हम इक्कीसवीं शताब्दी के २२वें साल में खड़े हैं तब स्वयं से यह प्रश्न करना उचित

होगा कि क्या हम अपने शहीदों के बलिदान को उचित सम्मान दे रहे हैं? क्या हम अपने शहीदों के सपनों का भारत बना पाये हैं? क्या देशप्रेम का वही जोश हम में भी है जो हमारे पुरखों में था या हम स्वकेंद्रित हो गये हैं? खोजने पर इन सारे प्रश्नों के मिले जुले उत्तर हमें मिलते हैं। निसंदेह हमने अंतरिक्ष की ऊंचाइयों को छू लिया है पर देश आज भी गरीबी से त्रस्त है। निर्विवाद रूप से हम परमाणु आयुध से लैस वैश्विक महाशक्ति बन चुके हैं पर सांप्रदायिकता का दानव अट्टहास लगाता है। निसंदेह दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र भारत है पर आज भी यहां लोकसभा व विधानसभाओं के चुनावी टिकिट जातिगत आधारों पर बांटे जाते हैं। लाखों विश्वविद्यालय व महाविद्यालय भारत में अवश्य हैं पर अभी भी यहां प्रवेश पाने के लिये भाई-भतीजावाद की कंटीली सड़कें प्रतिभावान युवापीढ़ी के पांवों को लहलुहान कर देती हैं। हमारा संविधान विश्व का

सबसे बड़ा संविधान जरूर है पर इसकी छोटी-छोटी बातें आज भी आम आदमी की समझ से मीलों दूर हैं।

अच्छाइयाँ हमारी हैं तो कमियाँ भी हमारी ही हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी कमियों को शीघ्र व कारगर रूप से दूर करें। सारा विश्व, भारत की ओर आशा भरी नज़रों से निहार रहा है। विश्वगुरु के रूप में हमने समुचित धरती को ज्ञान-विज्ञान का आलोक दिया है। वर्तमान में भी भारत की तरुणाई अत्यधिक प्रतिभाशाली है जिसकी महत्ता को अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सार्वजनिक रूप से स्वीकारा है। आइये अपनी जन्मभूमि की पावन माटी का ऋण चुकाएं, हम सब मिलकर भारत को पुन दुनिया का सिरमौर बनाएं। परिश्रम के दीपकों को पूरी लगन से प्रकाशित करिये क्योंकि इन्हीं के प्रकाश से स्वतंत्रता के अमृतोत्सव की वास्तविक जगमग है।



LEARN MATH @ LearnMath108

Contact : 508.241.4903

- **GRADE LEVEL MATH CLASSES (K – 10)**

Includes:

- Week long Math homework
- Challenging Word Problems

- **COMPETITION MATH CLASSES (K – 8)**

Math Kangaroo, MathCounts, Math Olympiad, and other competitions

- **VEDIC MATH (K – 10)**

Improves: Focus, Memory, Mental agility, speed & Accuracy

Email : learnmath108@gmail.com

एडिसन पाठशाला—उच्चस्तर-२

स्वतन्त्र भारत - उपलब्धियाँ और समस्याएँ



मेरा नाम आहना शाह है। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ, और एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं स्वयंसेवक के रूप में हिंदी यू.एस.ए. के साथ जुड़ा रहना चाहती हूँ। मुझे पियानो और विओला बजाना पसंद है। मुझे किताबें पढ़ने में भी अत्यंत रुचि है। मुझे अपने परिवार और सहेलियों के साथ समय बिताना बहुत पसंद है।

स्वतन्त्र भारत - ७५ वर्ष। उन्नति के ७५ वर्ष। समस्याएँ सुधारने के ७५ वर्ष। भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष।

स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत ने विज्ञान के विषय में अनोखी और नई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। जैसे कि भारत के वैज्ञानिकों और संस्थाएँ, जैसे इसरो ने कई सैटेलाइट लांच की हैं। भारत ने स्पेसक्राफ्ट, जैसे कि चंद्रयान और मंगलयान, जो आज भी परिक्रमा कर रहे हैं, बनाए हैं। यह करके भारत पूरे विश्व में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक है। इसके अतिरिक्त भारत की सेना ने न्यूक्लियर टेस्टिंग सफलता से की है। भारत को “न्यूक्लियर पावर” भी कहा जाता है। पिछले ७५ वर्ष से भारत और भारत के मेहनती वैज्ञानिकों ने ऐसे ही बहुत से विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक और तकनीकी सफलताएँ हासिल की हैं, और करते जा रहे हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि साक्षरता दर में बढ़ोतरी है। इसका मतलब है कि जब से भारत को स्वतंत्रता मिली, ज्यादा लोग और बच्चे, विशेष रूप से महिलाएँ, पढ़ाई में आगे आ रहे हैं। भारत में बहुत सारे विद्यालय, पाठशालाएँ, और विश्वविद्यालय खोले गए हैं। लेकिन इसके बाद भी भारत एक बहुत निरक्षर देश है। पेरियार ने कहा था, “हमें यह मानना होगा कि स्वराज तभी संभव है जब पर्याप्त आत्म सम्मान हो, अन्यथा यह अपने आप में संदिग्ध मसला है।” भारतीय संविधान की उद्देशिका बताती है कि भारत अब एक संप्रभु और स्वाधीन राष्ट्र है, लेकिन इसे अभी पूरी तरह से ‘स्वतंत्र’ बनाया जाना बचा हुआ है।

हमारे स्वतंत्रता सेनानी, जैसे महात्मा गाँधी, गोपाल कृष्ण गोखले, आदि, ने भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने के लिए अपनी जान न्योछावर की, लेकिन उनकी मेहनत के बाद भी भारत पूरी तरह से विकसित देश नहीं है। स्वतंत्रता पाने के तुरंत बाद भारत के अलग-अलग धर्मों और जातियों के बीच लड़ाई होने लगी। मुस्लिम और हिन्दुओं के बीच असहमति हुई, जिसके कारण भारत तीन अलग देशों में विभाजित हो गया - आज का भारत, पाकिस्तान, और बांग्लादेश।

हमें स्वाधीनता से स्वतंत्रता तक पहुंचना अभी बाकी है क्योंकि छुआछूत, भेदभाव, भारी आर्थिक असमानता, भुखमरी और बेकारी आज भी बाकी हैं। भारत की शिक्षा में भेदभावपूर्ण है। जिनके पास

साधन और संपन्नता है, वे बच्चे ऐसे स्कूलों में पढ़ते हैं जहाँ शिक्षक भी हैं, परामर्श, खेल, तकनीक, किताबें और माहोल भी। वहीं जो बच्चे गांव में रहते हैं, उन्हें पढ़ाई करने के लिए २ से १० किलोमीटर का सफर तय करना पड़ता है।

शिक्षा की कमी महिलाओं की प्रगति में एक बड़ी बाधा रही है। पुरुष वर्चस्व, सामाजिक रीति-रिवाज, धार्मिक मापदंड भी ऐसे कारण हैं जो महिलाओं की स्थिति को नुकसान पहुँचाते हैं, आदि। स्वतंत्रता पूर्व भारत में महिलाओं की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई, कित्तुरानी चेन्नम्मा, एनीबेसेंट, कसूरबा गांधी, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू, कुछ यादगार महिला स्वतंत्रता सेनानी हैं। अब महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे चिकित्सा, शिक्षण, इंजीनियरिंग, पायलट, अंतरिक्ष यात्री, पुलिस, राजनीति, सैन्य और अन्य क्षेत्रों में मौजूद हैं। फिर भी महिलाओं की स्थिति में काफी

सुधार की जरूरत है। सामाजिक रीति-रिवाजों, गरीबी और अशिक्षा के कारण महिलाओं की स्थिति निम्न बनी हुई है। इससे देश की प्रगति प्रभावित हुई है।

भारत की एक और बड़ी समस्या गरीबी है, जो अधिकतर निरक्षरता और बढ़ती जनसंख्या के कारण है। हालांकि, पढ़ाई बढ़ाने से और विकेंद्रीकरण उद्योग करने से हम गरीबी को दूर कर सकते हैं।

अंत में, भारत की उपलब्धियाँ अनेक हैं, जैसे कि मजबूत लोकतंत्र, विज्ञान और टेक्नोलॉजी, उच्च शिक्षा, न्यूक्लियर पावर, और आर्थिक विकास। लेकिन हमारे भारत में आज भी कुछ समस्याएँ हैं। इनमें से कुछ निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य सेवा, गरीबी, भ्रष्टाचार, और भेद-भाव हैं। अनेक असफलताओं और बाधाओं के बावजूद उल्लेखनीय बात यह है कि यह आधुनिक राष्ट्र अपनी प्राचीन सभ्यता की तरह बिना रुके निरंतर प्रगति कर रहा है। शायद इसी में भारत की ताकत है।

परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत



नमस्ते, मेरा नाम आयुष जेना है। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। गणित मेरा पसंदीदा विषय है। मुझे क्रिकेट खेलना पसंद है।

भारत को आजाद हुए कई साल हो गए हैं। २०० वर्षों तक ब्रिटिश साम्राज्य के आधीन रहने के बाद १९४७ में भारत ने आजादी हासिल कर ली थी। स्वतंत्रता से पहले भारत एक गरीब देश था क्योंकि अंग्रेजों ने हमारा अधिकांश सामान चुरा लिया था। चूंकि हमारी भूमि पर अंग्रेजों का शासन था, इसलिए हमने उनकी जीवन शैली का पालन किया। एक उदाहरण है कि हमने क्रिकेट खेलना शुरू किया जो उनका मुख्य खेल था। हमने अंग्रेजों के पैटर्न और डिजाइन में घर

बनाना भी शुरू किया। हममें से कुछ भारतीयों के साथ भी गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता था। भारत में भगत सिंह और महात्मा गांधी जैसे कई स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्रता के बाद भारत का अधिक से अधिक विकास हुआ। अब हमारे पास हमारे जीवन में बहुत सारी तकनीकें और कई बदलाव हैं।



परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत



नमस्ते, मेरा नाम मीशा जिंदल है और मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। एडिसन की हिंदी पाठशाला में मैं उच्चस्तर-२ कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मेरे मनपसंद विषय गणित तथा टेकनोलजी हैं।



नमस्ते, मेरा नाम आशी जिंदल है और मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मुझे कला और इतिहास में रुचि है।

२६७ साल पहले अंग्रेजों ने भारत पर कब्ज़ा किया था। अंग्रेज शासकों ने भारत वासियों पर अनगिनत अत्याचार किए और मार-काट की। उन्होंने “फूट डालो और शासन करो” की नीति अपनाकर कई वर्षों तक भारत पर राज किया। भारत को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिए देश के कोने-कोने से लोगों ने आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया। अथक परिश्रम के बाद १५ अगस्त १९७४ को भारत को अपनी आज़ादी प्राप्त हुई।

ब्रिटिश राज से पहले भारत को “सोने की चिड़िया” कहा जाता था, क्योंकि भारत एक बहुत ही समृद्ध देश था और वहाँ सोने, चाँदी, और खनिजों की भरमार थी। विश्व का सबसे बड़ा हीरा, जिसे कोहिनूर हीरा कहा जाता है, भारत की सम्पत्ति में शामिल था। भारतवासी बहुत आत्मनिर्भर थे, और घर-घर से छोटे-छोटे व्यवसाय चलाते थे, जैसे कि चरखा चलाकर सूत बनाना, लोहे के औज़ार बनाना, तरह-तरह की सुंदर कलात्मक चीज़ें बनाना। इसी कारण से अंग्रेज जब भारत में व्यापार के लिए आए तो भारत का वैभव देखकर उन्होंने भारत पर शासन करने और उसकी सम्पत्ति हड़पने का निर्णय लिया। परतंत्रता से पहले भारत में हर धर्म और हर राज्य के लोग एक दूसरे के साथ बहुत ही प्रेम से रहते थे। लेकिन अंग्रेजों ने भारत पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए भारतवासियों में जाति और धर्म के नाम पर मतभेद पैदा किए।

ब्रिटिश राज के दौरान भारतवासियों को कदम कदम पर अन्याय का सामना करना पड़ता था। अंग्रेजों द्वारा किया गया अत्याचार इतना बढ़ गया था कि लोगों को गरीबी और भूख का सामना करना पड़ रहा था। व्यापारियों और किसानों पर बहुत ज़्यादा कर लगाया जाने लगा जिससे और भी ज़्यादा गरीबी फैलने लगी। अंग्रेजों ने ज़ोर ज़बरदस्ती से राजाओं से उनके राज्य और उनकी संपत्ति हड़पी और सारा धन ब्रिटेन भेज दिया। जब अंग्रेजों का जुल्म हद से ज़्यादा बढ़ गया तो भारतवासियों ने उसके खिलाफ़ आवाज़ उठानी शुरू की। उस आवाज़ को दबाने के लिए अंग्रेज रोवलत ऐक्ट ले कर आए जिसके अनुसार किसी भी भारतीय को बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद किया जा सकता था। अमृतसर के जलीयांवाला बाग में जब इस ऐक्ट के विरोध में एक सभा चल रही थी तो जनरल डायर ने निहत्थे लोगों, जिसमें औरतें और बच्चे भी थे, पर गोलियाँ बरसायीं। अनगिनत लोग इस नरसंहार में मारे गए। इस घटना के बाद भारत के लोगों में अंग्रेजों को देश से बाहर खदेड़ने की चाहत और भी बढ़ गयी और फिर महात्मा गांधी, भगत सिंह, राजगुरु, और सुभाष चंद्रा बोस जैसे क्रांतिकारियों के प्रयासों के बाद १५ अगस्त, १९४७ को भारत को आज़ादी प्राप्त हुई।

स्वतंत्र होने के बाद सरकार के सामने देश को जोड़ने और उसको प्रगति पथ पर बढ़ाने का एक बड़ा दायित्व था। २० जनवरी १९५० को भारतीय संविधान

की स्थापना की गयी और भारत एक गणतंत्र देश बन गया। सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए गए और जाति और धर्म के नाम पर होने वाले भेदभाव को भी खत्म किया गया। हर किसी को अपने विचार व्यक्त करने की पूरी छूट थी। इस संविधान के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा और अन्य १८ भाषाओं को प्रादेशिक भाषा घोषित किया गया।

आज हर क्षेत्र में भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया भर में अपना नाम कमा रहा है। एशिया का सबसे पहला परमाणु रिएक्टर भारत द्वारा बनाया गया था। साल २०१३ में भारत ने मंगल पर सफलतापूर्वक यान भेजकर अपने आपको विश्व में प्रथम प्रयास में सफल होने वाला पहला देश बनाया। विश्व की बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी (IT) कम्पनियों में भारत की बहुत सारी कम्पनियाँ जैसे कि टी.सी.एस.,

विप्रो, इनफोसिस, इत्यादि शामिल हैं। इतना ही नहीं, आज बहुत से भारतीय विश्व की जानी मानी कम्पनियों (माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आई.बी.एम, ट्विटर आदि) का संचालन कर रहे हैं। खेल कूद के क्षेत्र में भारत ने अपना नाम रोशन किया है। सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल, सचिन तेंदुलकर, विश्वनाथन आनंद, मिलखा सिंह जैसे बहुत से खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रकार के खेलों में भारत का परचम लहराया है। इतना ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जो कि हर साल २१ जून को मनाया जाता है, वह भी भारत की ही देन है। आज का भारत दुनिया के हर देश से कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहा है।

भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के उपाय

काव्या सिंह, उच्च स्तर-२, वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला



नमस्ते, मुझे अपने भारतीय मूल पर गर्व है। मैं हिंदी, संस्कृत, कथक और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के माध्यम से भारत की संस्कृति से जुड़ी हुई हूँ। इसके अलावा मुझे टेनिस व रोबोटिक्स में भी बहुत रुचि है।

हमें अपनी स्वतंत्रता को छोटी सी बात नहीं समझना चाहिए। हम स्वतंत्र रह सकें इसके लिए हमारी सेना अपनी जान दे देती है। मेरा विचार है कि भारत को स्वतंत्र बनाए रखने के लिए हमें अपने इतिहास से अच्छी बातें सीखनी चाहिए। आजकल भारत में अमेरिका तथा यूरोप का बहुत प्रभाव है। लोग इन

देशों के खाने, पहनावे और सोच को अपना रहे हैं। यदि हमारे मन से ही भारत की अनमोल सीख निकाल गई तो हम भारत को स्वाभिमानी और स्वतंत्र नहीं रख सकेंगे। स्वतंत्रता केवल देश की धरती की ही नहीं होती। देश के लोगों का मन स्वतंत्र होना भी आवश्यक है, इसलिए हमें अपनी संस्कृति को अपनाना चाहिए। ऐसा करने से भारत सदा स्वतंत्र रहेगा। जाए हिन्द!

परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत



नमस्ते, मेरा नाम अयाती पाठारे है। मैं १३ साल की हूँ और आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं वूट्रो विल्सन मिडिल स्कूल में पढ़ती हूँ। हिंदी पाठशाला में मैं पांच साल से पढ़ रही हूँ। हिंदी सीखने के अलावा मैं मेरे खाली समय में बाहर खेलती हूँ और नृत्य भी करती हूँ।

भारत को आजाद हुए ७५ साल हो चुके हैं। हमारे देश ने कई उतार-चढ़ाव देखे और कई निर्दोष लोगों की जान गंवाई। हमारे देश का अतीत दुखद रहा है और लोगों को ऐसी स्थिति में रखा गया जहाँ उन्हें अन्याय और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा, क्योंकि हमारा देश हमसे छीन लिया गया था।

सदियों से यूरोपीय देश भारत के संसाधनों और मसालों के लिए भारत पर नजर गड़ाए हुए थे। भारत कपास का एक प्रमुख निर्यात केंद्र बन गया था। अंग्रेजों को भारत के सोने, धन, वस्त्र, मसाले और कच्चे माल की जानकारी थी। १६०० में इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ ने बड़ी संख्या में व्यापारियों को एक नई व्यापारिक कंपनी बनाने के लिए दिया, जिसे बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में जाना जाने लगा। समय के साथ अधिक से अधिक अंग्रेज भारत पहुंचे। अंग्रेजों ने कई कच्चे माल को ले लिया और उन्हें इंग्लैंड भेज दिया, जहाँ उन्हें अन्य सामानों में परिवर्तित कर दिया गया और फिर भारत में वापस बेच दिया गया। इसकी शुरुआत कंपनी ने बंगाल के नवाब को उखाड़ फेंकने के साथ की।

१८५७ में विद्रोह सिपाही मंगल पांडे द्वारा शुरू किया गया था। जल्द ही ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया गया। यह विद्रोह हालांकि

प्रभावशाली था, फिर भी असफल साबित हुआ। उस समय भारत ऐसा देश नहीं था जो अंग्रेजी बोलता था। अंग्रेजों ने भारतीयों को इस भाषा का परिचय दिया और वे इसे अपनाने लगे। अंग्रेजों ने ऐसे रेलमार्ग भी बनाए जो देखने में जितने लाभप्रद थे, लेकिन उतने थे नहीं। हालांकि, उन्होंने हिंदू और मुस्लिम तनावों का और भी अधिक फायदा उठाया, जिसके परिणामस्वरूप बाद में दोनों देशों का विभाजन हुआ।

भारत में अराजकता के कारण बहुत से लोग अंग्रेजों से स्वतंत्रता चाहते थे। इसलिए महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, सुभाष चंद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री जैसी प्रमुख हस्तियों द्वारा कई स्वतंत्रता आंदोलन शुरू किए गए। १९४७ में कई दशकों के संघर्ष के बाद भारत को आजादी मिली। इंग्लैंड के लॉर्ड माउंटबेटन भारत को स्वतंत्रता दिलाने में एक प्रमुख व्यक्ति थे। भारत को आधिकारिक तौर पर १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्रता मिली। हिंदू-मुस्लिम तनाव के कारण भारत २ देशों में विभाजित हो गया। भारत और पाकिस्तान, जहाँ कई मुसलमानों को रहने के लिए भेजा गया था, अब भयानक स्थिति में था। जो देश कभी दौलत का देश था अब उसका वैभव लुट गया है। उद्योग ध्वस्त हो गया था और देश को गरीबी, भूख और अकाल से जूझना पड़ा था।

इन पिछले ७५ वर्षों में भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी, गणित, कृषि, चिकित्सा, आदि जैसे क्षेत्रों में अपनी भव्यता हासिल करने के लिए काम कर रहा है। हमारे देश ने आजादी की लड़ाई में कई कठिनाइयों का सामना किया है। हालांकि हम इस तथ्य का जश्न मना सकते हैं कि इस वर्ष हमारे भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुए ७५ वर्ष हो गए हैं।

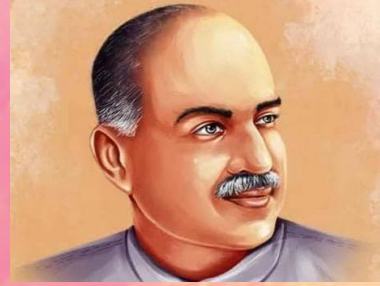
भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन

भूले बिसरे स्वतंत्रता सेनानी

श्यामा प्रसाद मुखर्जी



नमस्ते! मेरा नाम साई चरण है और मैं तेरह साल का हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे परिवार में मेरे पिता जी, माता जी, और मेरी छोटी बहन हैं। मुझे गणित, शतरंज, और मेरा परिवार बहुत पसंद हैं। मैं क्लरिनाट बजाता हूँ।

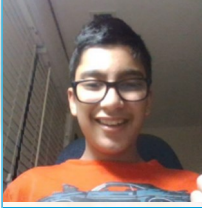


और उद्योग मंत्रालय में प्रथम मंत्री बने। भारत के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

आज हम श्यामा प्रसाद मुखर्जी नाम के एक महान नेता जिनका नाम शायद ही आम हिन्दुस्तानी को ज्ञात है, उनको याद करने जा रहे हैं। उनका जन्म 6 जुलाई 1901 को हुआ था। इन्होंने अपने जीवनकाल में बहुत सी उपलब्धियाँ हासिल की। उनके पिता, आशुतोष मुखर्जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व थे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी बड़े होकर अपने पिता की तरह ही महान बने। वे कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील थे और डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित थे। 1938 में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। वे बंगाल विधानसभा के लिए चुने गए और फजलुल हक के शासन में वित्त मंत्री भी थे। लेकिन जब ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मिदनापुर के बाढ़ग्रस्त इलाकों में जाने की अनुमति नहीं दी तो उन्होंने मंत्रालय से इस्तीफा देने का फैसला किया। 1946 में वे स्वतंत्र भारत के वाणिज्य

उन्होंने चित्तूरंजन में विमान कारखाना और सिंदरी उर्वरक परियोजना शुरू की। पाकिस्तान में हिंदुओं के साथ हो रहे अत्याचार और भारतीय सरकार की उनके प्रति लापरवाही के कारण उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। मुखर्जी ने अपने अंतिम वर्ष पाकिस्तान में हिंदुओं की दुर्दशा के विरोध में कश्मीर जेल में बिताए, जहाँ 1943 में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने भारतीय जनसंघ पार्टी की भी स्थापना की। श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन उपलब्धियों से भरा जीवन था। उनका महान कार्य सराहनीय है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता की स्थापना को ही अपना प्रथम लक्ष्य बनाया। संसद में दिए अपने भाषण में उन्होंने जोरदार शब्दों में कहा था कि "राष्ट्रीय एकता के धरातल पर ही सुनहरे भविष्य की नींव रखी जा सकती है।" एक कर्मठ और जुझारू व्यक्तित्व वाले ऐसे इंसान जो भारतवासियों के आदर्श और पथप्रदर्शक बनने चाहिए थे, नई पीढ़ी उनके बारे में आज भी अनजान है।

वीर सावरकर



आरुण सेठी

वीर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान पर हैं। उनका जन्म १८ मई १८३३ को नासिक, महाराष्ट्र में हुआ था। वीर सावरकर का मूल नाम विनायक दामोदर सावरकर था।

अपने उच्च विद्यालय के दौरान वे बालगंगाधर तिलक से बहुत प्रभावित थे और उन्हें गुरु मानते थे। कई अवसरों पर वे राष्ट्रवाद विषय पर नाटक भी प्रस्तुत करते थे। बाद में वे स्वदेशी आंदोलन में भी शामिल हुए और तिलक स्वराज पार्टी से जुड़ गए। अपने कॉलेज के दिनों में उन्होंने छात्रों और स्वतंत्रता सेनानियों को एकत्रित किया और १९०४ में अभिनव भारत संगठन की स्थापना की। जून १६ में वीर सावरकर बैरिस्टर बनने के लिए लंदन चले गए। वहाँ उन्होंने भारत सोसाइटी की स्थापना की और वहाँ के भारतीय छात्रों को भारत में हो रहे ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट किया। इसी बीच दो अंग्रेजी अफसरों की मौत के पीछे सावरकर को दोषी मानकर उन्हें

अंग्रेजों द्वारा १३ मई १९१० को गिरफ्तार कर लिया गया। पानी के जहाज के रास्ते जब उन्हें भारत लाया जा रहा था तो वे पानी में कूद गए, लेकिन उन्हें

फिर से गिरफ्तार कर ५० साल आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। अंडमान की जेल में उन्हें कई यातनाएँ मिली और खूब काम करवाया गया। जेल से रिहाई के बाद वे हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुने गए और भारत की प्राचीन सभ्यता को बचाने और अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़े रहे। २६ फरवरी १९६६ को ८३ वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। वीर सावरकर को एक महान लेखक, कवि, सामाजिक कार्यकर्ता और हिन्दू विद्वान के रूप में जाना जाता है।



अरुणा आसफ अली



आरुणि त्रिपाठी

अरुणा आसफ अली का जन्म १९०९ में हुआ था और वे अपनी सुंदरता और क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए बहुत प्रसिद्ध थीं। बीस और तीस के दशक के उत्तरार्ध में उन्होंने अपना पूरा जीवन गांधीजी के सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के लिए काम करने में लगा दिया। अरुणा को कई बार जेल में डाला गया। वे एक बेहतरीन वक्ता और आयोजक थीं। उन्होंने विस्तार पर काम किया और लोगों के बीच इस विचार को फैलाया कि अंग्रेजों को भारत को

छोड़ देना चाहिए और भारत में उनका शासन समाप्त हो जाना चाहिए। जब कांग्रेस द्वारा "Quit India" आंदोलन शुरू किया गया था, अरुणा को अपने ब्रिटिश विरोधी विचारों की आवाज उठानी पड़ी, लेकिन अंग्रेजों द्वारा उन्हें पकड़े जाने की संभावना के कारण उन्हें भूमिगत होना पड़ा। अंग्रेज उन्हें कभी नहीं पकड़ सके। उन्होंने पूरे



देश की यात्रा की और अपने ब्रिटिश विरोधी संदेशों को फैलाया, लेकिन उसका स्वास्थ्य खराब होने लगा। कई लोगों ने उन्हें स्वास्थ्य के कारण आराम करने और वापस जाने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने कभी नहीं सुनी। उनके दृढ़ निश्चय के कारण भारत आजाद हुआ और वे आवरण से बाहर आ गईं। इसके बाद उन्होंने कई काम किए। वे UNESCO सत्र में

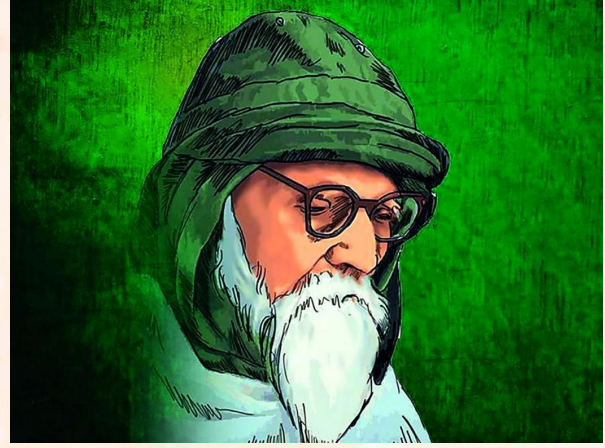
भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में गईं, दिल्ली की मेयर चुनी गईं, और भारतीय महिला राष्ट्रीय संघ की अध्यक्ष थीं। उनकी सारी मेहनत ने उन्हें लेनिन शांति पुरस्कार दिलाया। अरुणा ने भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करवाने और महिलाओं के उत्थान को प्रोत्साहित करने के लिए अपने पूरे जीवन में कड़ी मेहनत की। वे एक शक्तिशाली महिला थीं।

विनोबा भावे



ईशिता अरोरा

नमस्ते, मेरा नाम ईशिता अरोरा है। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझको कला, खाना बनाना, दूरदर्शन देखना, और परिवार के साथ समय बिताना अच्छा लगता है।



भारत की स्वतंत्रता के लिए बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया। उनमें से एक विनोबा भावे जी हैं। उन्होंने सर्वोदय और भूदान जैसे सामाजिक आंदोलन करके भारत को स्वतंत्र बनाने में मदद की। विनोबा भावे का जन्म १८९५ में हुआ था। विनोबा जी अपनी पढ़ाई में अच्छे थे, खासकर गणित में। वे देश के लिए सेवा करना चाहते थे। विनोबा भावे जी ने सर्वोदय समाज की स्थापना की थी। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। एक पुस्तक (Famous People of India) में यह कहा गया है, "उन्होंने समाज में निचली जातियों और कमजोर या पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए संदेश फैलाने के लिए पूरे देश की पैदल यात्रा की। इससे पता चलता है कि कैसे इसे सर्वोदय के नाम से जाना जाता था। यह विनोबा भावे जी के अपने जीवनकाल में किए गए आंदोलनों में से एक है। इसके अलावा विनोबा भावे जी ने भूदान के

नाम से जाने वाला एक और आंदोलन किया। एक पुस्तक (Famous People of India) से यह कहा गया है, "आंदोलन के माध्यम से, सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों तरह से, वे हजारों एकड़ भूमि, भूमिहीन ग्रामीणों को हस्तांतरित करने में सक्षम थे।" यह दिखाता है कि विनोबा भावे जी ने एक और आंदोलन किया था, जब उन्होंने भूदान में प्राप्त ज़मीन भूमिहीन लोगों को दे दी। यह कुछ ऐसा है जो उन्होंने भारत के लिए योगदान करने के लिए किया। इससे हमें पता चलता है कि उन्होंने भारत में कैसे बदलाव किया था। ये बदलाव भले ही छोटे रहे हों, लेकिन फिर भी इनका असर भारत पर पड़ा। इन प्रभावों ने भारत को बदलने और एक बेहतर बनाने में मदद की।

भूलाभाई देसाई



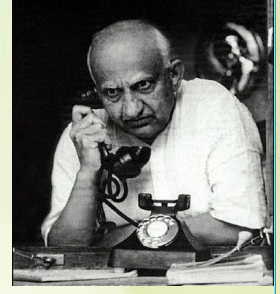
मेरा नाम श्रेया घोरपडे है। मैं बारह साल की हूँ। मैं छठी कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे स्केटिंग करना बहुत अच्छा लगता है। मैं अभी नेशनल्स की दूसरी स्थान पर चैंपियन हूँ।

भारतीयों ने विभिन्न मोर्चों पर अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। भूलाभाई देसाई जमीनी कार्यकर्ता थे जिन्होंने सड़कों पर जुलूस को आगे बढ़ाने में मदद की, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के प्रचार को घर-घर तक ले जाया। भूलाभाई देसाई कोई क्रांतिकारी नहीं थे, जिन्होंने सशस्त्र लड़ाइयों में अंग्रेजों का सामना किया, वे ऐसे थे जिन्होंने अंग्रेजों को अपने स्तर पर, अपनी भाषा में, सम्मेलनों, गोलमेज बैठकों में, अदालत के तर्कों से लड़कर हराया। अन्य लोगों के अलावा, गोखले, नेहरू, गांधी और भूलाभाई देसाई, स्वतंत्रता सेनानियों के इस वर्ग से संबंधित थे। गोखले ने ब्रिटेन में भारत के मामले में बहस की, गांधी जी ने चर्चिल और अन्य जैसे प्रसिद्ध अंग्रेजी राजनेताओं के

साथ गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया, और भूलाभाई देसाई और नेहरू लाल किले, दिल्ली में आई.एन.ए.

अधिकारियों के वकील बन गए। गुजराती भाषा के एक व्यक्ति भूलाभाई देसाई का

जन्म १८७७ में हुआ था। एक बौद्धिक और प्रसिद्ध वकील, भूलाभाई अपने समय के अन्य बुद्धिजीवियों के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल थे। वे बारदौली सत्याग्रह के बाद प्रसिद्ध हो गए थे, जो भारत की स्वतंत्र सेना, आई.एन.ए के बहादुर सैनिक और अधिकारी थे। बहादुर भारतीय अधिकारी कैप्टन शानवाज, प्रेम सहगल और दिल्ली भी थे। पोस्टकार्ड में उनकी तस्वीरें पूरे भारत में वितरित की गई थीं और शायद ही कोई भारतीय था, जिसकी जेब में या उसके साथ कहीं और उनकी तस्वीरें न हों। उस समय भूलाभाई काफी बूढ़े थे, उनकी उम्र ६७ वर्ष से अधिक थी। यह दुखद था कि १९४६ में उनका निधन हो गया।



सुभाष चंद्र बोस



मेरा नाम शुभ कुलकर्णी है। मैं साउथ ब्रंसविक की उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। मैं बारह साल का हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे अपने दोस्तों के साथ पढ़ना और खेलना पसंद है।

सुभाष चंद्र बोस को भारत की स्वतंत्रता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए जाना जाता है। गाँधीजी के विपरीत उनका मानना था कि अगर कोई आपकी मातृभूमि पर आक्रमण करना चाहता है तो आपको

उससे लड़ना चाहिए। सुभाष चंद्र बोस बचपन से ही अपनी मातृभूमि के लिए लड़ने के लिए प्रेरित थे, क्योंकि उनका जन्म एक ऐसी दुनिया में हुआ था जहाँ उनका देश स्वतंत्र नहीं था। वे चालीस साल की उम्र में हिटलर से बात करने के लिए जर्मनी गए थे। उन्होंने जर्मनी के साथ गठबंधन किया और आज़ाद हिंद सेना का निर्माण किया। कुल मिलकर सुभाष चंद्र बोस एक बहुत अच्छे व्यक्ति और स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भारत का इतिहास बदल दिया और भारत का भविष्य बनाया।

स्वतंत्रता के बाद का भारत

लॉवरेंसविल पाठशाला, उच्चस्तर-२

भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष के अवसर पर हमने भारत की उपलब्धियों में से दो पर गौर किया।

१) मिशन मंगल २) सर्जिकल स्ट्राइक

मिशन मंगल

मिशन मंगल (या मिशन "मार्स") ५ नवंबर, २०१३ को श्री हरिकोटा स्पेसपोर्ट से लॉन्च किया गया। यह २४ सितंबर २०१४ को मंगल की कक्षा में पहुंचा। मिशन मंगल का उद्देश्य मंगल ग्रह की सतह की विशेषताओं, वातावरण, खनिज विज्ञान आदि के बारे में अधिक जानना था। अंतरिक्ष यान को केवल १८ महीनों में बनाया गया था और केवल ४५० करोड़ का बजट था। यह मूल रूप से छह महीने तक चलने के लिए बनाया गया था, लेकिन यह मंगल की कक्षा में एक दशक से अधिक समय तक चला है। इसरो ने चंद्रयान-१ के आधार पर मंगल पर भेजे गए उपग्रह को विकसित किया, जो भारत का पहला चंद्र ऑर्बिटर था, और इसे बेहतर बनाने के लिए उन्नत घटकों को जोड़ा। मार्स ऑर्बिटर मिशन टीम ने विज्ञान और इंजीनियरिंग श्रेणी में यू.एस.ए. आधारित नेशनल स्पेस सोसाइटी का २०१५ स्पेस पायनियर अवार्ड जीता। मार्स ऑर्बिटर मिशन अंतरिक्ष यान का एक चित्रण भारत के ₹२,००० के मुद्रा नोट के पीछे चित्रित किया गया है। यह मंगल पर पहुँचने वाला दुनिया का चौथा अंतरिक्ष यान था। इसने भारत को मंगल की कक्षा में पहुँचने वाला पहला एशियाई देश और अपने पहले प्रयास में ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश बना दिया। इन कारणों से यह पूरे भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है।

सर्जिकल स्ट्राइक

यह स्ट्राइक, सितंबर २०१६ में पाकिस्तान के काश्मीर में हुई थी। उन्होंने पाकिस्तानी आतंकवादियों से खुद को बचाने के लिए ऐसा किया। हमले के दौरान १९ भारतीय सैनिक मारे गए। हमले का नेतृत्व जनरल दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने किया। हमला एक दिन तक चला। भारतीय सैनिकों की वीरता अचंभित करने वाली थी। इस सर्जिकल स्ट्राइक ने भारत को आगे होने वाले आतंकवादी हमलों से बचा लिया है।

भारत के परतंत्र होने के कारण



नमस्ते, मेरा नाम तूलिका पुनिया है और मैं नार्थ ब्रुंस्विक पाठशाला में उच्चतर-२ में पढ़ती हूँ। मैं सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे कितारें पढ़ने, मेहँदी लगाने, तैराकी और कला में बहुत रुचि है। इस बार के पाठ्यक्रम में कविता कैसे लिखें, यह एक पाठ है। मैंने थोड़ी से कोशिश की, कुछ गलतियाँ थीं जो मेरी शिक्षिका योगिता आंटी ने सुधार दीं।

हम हुए परतंत्र क्योंकि
हम नहीं थे एक
थोड़े से पैसों के लालच में
अपनी आज़ादी गवाईं
साहस भी था कम
अँग्रेजों ने ये फायदा उठाकर
भाई को भाई से लड़वाकर
भारत की सत्ता हथियाई

परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत

विल्टन हिंदी पाठशाला, उच्चतर-२



इस लेख के लेखक हैं अनिकेत मार्टिन्स। अनिकेत को शतरंज, टेनिस और गोल्फ खेलना पसंद है। अनिकेत अपने स्कूल में गणित और विज्ञान के कार्यक्रमों का हिस्सा हैं। वह नई चीजें सीखना पसंद करता है और हिंदी पाठशाला का आनंद लेता है।

समाप्त करने के लिए सहयोग किया। तब से भारत लगातार विकसित हुआ है और दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों में से एक बन गया है। अब भारत की दुनिया में छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है। भारतीय वैज्ञानिकों और व्यवसायियों ने मानव समाज के विकास में योगदान दिया है और मानवता को आगे बढ़ाना जारी रखा है।

आजादी से पहले भारत अंग्रेज़ी साम्राज्य का उपनिवेश था। सिपाही विद्रोह के लिए अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी जिम्मेदार थी। सिपाही विद्रोह में भारतीय सैनिकों को दंडित किया गया और जेल में डाल दिया गया। सिपाही विद्रोह के बाद अंग्रेज़ी सरकार ने भारत पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया। अंग्रेज़ों ने सरकार और आर्थिक नीति की अपनी खुद की पश्चिमी प्रणाली शुरू कर दी। आखिरकार कई भारतीयों को भारत में सुधार की आवश्यकता महसूस हुई। १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक में कई प्रमुख भारतीय एकत्रित हुए। कुछ दशक बाद मोहनदास गांधी भारत पहुंचे और शांतिपूर्ण स्वतंत्रता की वकालत की। गांधी और कई अन्य भारतीय नेताओं के अहिंसक आंदोलनों के कई वर्षों के बाद भारत ने अंततः १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त की।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत विभाजन की प्रक्रिया से गुजरा। विभाजन के दौरान पश्चिम पंजाब, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत, बलूचिस्तान, पूर्वी बंगाल और सिंध में रहने वाले हिंदू और सिख भारत चले गए। हिंसा में लगभग दस लाख लोग मारे गए, हालांकि भारतीय और पाकिस्तानी नेताओं ने हिंसा को



मेरा नाम माधव सुब्रमणीयन है। मैं बेडफोर्ड मिडल स्कूल की छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं १२ साल का हूँ और मुझे पढ़ना, बेसबॉल खेलना और ट्रम्बोन बजाना बहुत पसंद है। इसके अलावा मुझे विज्ञान और ताइक्वांडो में भी रुचि है। मैं साइन्स ओलंपियाड में भाग लेता हूँ और कई ताइक्वांडो प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका हूँ।

ब्रिटिश के भारत आने से पहले भारत बहुत धनी देश था, जैसे अमेरिका आज है। भारत गणित और विज्ञान में बहुत आगे था, लेकिन १९४७ तक जब ब्रिटिश निकले भारत यह सब खो चुका था। उन्होंने सारे राज्यों की धन संपत्ति को लूटा और ब्रिटेन को भेज दिया, तो भारत गरीब देश बन गया। भारत की प्रसिद्धि कम हो गयी और अब जहाँ भारत परतंत्रता के पहले अपनी शान के लिए प्रसिद्ध था, वहाँ स्वतंत्रता के बाद गरीब देशों में गिना जाने लगा। परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद के भारत में

एक और अंतर भी था। यह महत्वपूर्ण बात थी। भारत दो देशों में विभाजित किया गया था - भारत और पाकिस्तान। पाकिस्तान में ज्यादातर लोग मुसलमान थे और भारत में ज्यादातर लोग हिंदू थे। विभाजन के बाद भारत में बुरी चीजें हुईं जैसे जातिवाद और आतंक। भारत और पाकिस्तान ने १९६५, १९७१, और १९९९ में युद्ध लड़े। पाकिस्तान और भारत के बीच में अभी भी बुरी भावनाएँ हैं।

अंग्रेजों के आने से कुछ फायदे भी हुए। भारत एक देश बन गया जबकि परतंत्रता के पहले वह बहुत

राज्य में बँटा हुआ था। भारत में अंग्रेजों ने एक आधुनिक रेल प्रणाली का गठन किया। इस से व्यापार और लोगों और चीजों की परिवहन में बहुत मदद हुई। अंग्रेजी भारत की एक अधिकृत भाषा बन गई तो भारतीय लोग पूरे विश्व में जाने लगे। अंततः जो प्रशासनिक सेवाएँ उन्होंने स्थापित कीं, वे बहुत अच्छी थीं।

इससे आपको पता चलता है की परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद के भारत में कितना अंतर है।

हिन्दू धर्म का स्वास्थ्य से संबंध



प्रज्ञा सिन्हा

हिन्दू धर्म की मान्यताएँ वैज्ञानिक मापदंड पर खरी उतरती हैं। माना जाता है कि हमारा शरीर पंच महाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के सम्मिलन से हमारे शरीर में तीन दोष उत्पन्न होते हैं - वात, कफ, पित्त। हमारे पूर्वज नियमित दिनचर्या का अनुसरण करते थे। हिन्दू धर्म में ब्रह्ममुहूर्त में उठना श्रेष्ठ माना जाता है। इसका कारण है कि इस समय कफ तत्व कम क्रियाशील होता है, और वात तत्व अधिक क्रियाशील होता है, यानी हमारा शरीर क्रिया करने के लिए तैयार होता है। नित्य कर्म से निवृत्त होने के बाद हमारा स्नान और ध्यान का प्रावधान है। सूर्य में

जल डालने के समय सूर्य की किरणें जब जल से छन कर आती हैं तो वह सात रंगों में टूट जाती हैं और हमारे शरीर पर पड़ कर हमारे शरीर के सात रंगों को प्रभावित करती हैं। साथ ही वे विटामिन 'डी' का भी स्रोत होती हैं। शाकाहारी भोजन पर हिंदू धर्म में बल दिया जाता है। इसका कारण यह है कि शाकाहारी भोजन सुपाच्य होता है और शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। गोधूली से पूर्व रात्रि भोजन का प्रावधान है। आज सभी चिकित्सक एवं वैज्ञानिक भी इसकी पुष्टि करते हैं कि संध्या बेला में ही रात्रि भोजन कर लेना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि हिंदू धर्म में हमारे लिए जो दिनचर्या निर्धारित की गयी है वह हमारे स्वास्थ्य को ध्यान रखते हुए कि गयी है।

“मन की आज़ादी ही असली आज़ादी है। एक व्यक्ति जिसका मन स्वतंत्र नहीं है, भले ही वह जंजीरों में न हो, गुलाम है, स्वतंत्र व्यक्ति नहीं है। जिसका मन मुक्त नहीं है, भले ही वह जेल में न हो, कैदी है और स्वतंत्र व्यक्ति नहीं है। जिसका मन जीवित होते हुए भी मुक्त नहीं है, वह मृत से श्रेष्ठ नहीं है। मन की स्वतंत्रता किसी के अस्तित्व का प्रमाण है।”

- भीमराव रामजी अम्बेडकर



चैरी हिल – उच्चस्तर-२

स्वतन्त्रता का मार्ग



नमस्ते, मेरा नाम धृति खगाति है। मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और लेनपे हाई स्कूल में जूनियर हूँ। खाली समय में मुझे कहानियाँ पढ़ना, बाँसुरी बजाना, भरतनाट्यम नृत्य करना और टीवी देखना पसंद है। बड़ी होकर मैं चिकित्सा या विदेशी मामलों में नौकरी करना चाहती हूँ।



नमस्ते, मेरा नाम पूजा पटेल है। मैं चैरीकी हाई स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे वॉलीबॉल खेलना, किताब पढ़ना, और रंगीन चित्र बनाना पसंद है। मैं बड़ी होकर मनोवैज्ञानिक बनाना चाहती हूँ और मुझे छोटे बच्चों के साथ काम करने की आशा है।

भारत की आजादी की राह आसान नहीं थी। भारत के लोगों ने भारत को आज की स्थिति में पहुंचाने के लिए संघर्ष पर संघर्ष किए। ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भारत ने गांधी के अहिंसा के एकवचन सिद्धांत का उपयोग किया। स्वतंत्रता के इस पथ पर चलते हुए भारतीयों ने हिंसा का विरोध किया, ज्यादातर शांतिपूर्वक पथ अपनाया। १७५७ में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया ट्रेडिंग कंपनी के माध्यम से भारतीय क्षेत्र को नियंत्रित करना शुरू कर दिया था।

पहला बड़ा विद्रोह १८५७ में हुआ था। बैरकपुर के भारतीय सिपाहियों को उनकी बंदूकों के लिए कारतूस दिए गए थे, जिनके बारे में अफवाह थी कि उन पर सुअर और गाय की चर्बी लगी हुई थी। कारतूस को खोलने के लिए उन्हें अपने दांतों का इस्तेमाल करना पड़ा, जो हिंदू और मुस्लिम दोनों की धार्मिक नैतिकता के खिलाफ था। यह एक साल तक चला और ईस्ट इंडिया ट्रेडिंग कंपनी चली गई, लेकिन ब्रिटिश सरकार के पास अभी भी सत्ता थी। इसके बाद अधिक लोग स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने लगे,

खासकर भारत के वायसराय द्वारा बंगाल के विभाजन के बाद।

१९१५ में गांधी भारत लौट आए और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (१८५५ में बनी) में शामिल हो गए। उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाने की योजना बनाई। जब रॉलेट एक्ट पारित हुआ तो इस एक्ट ने अंग्रेजों को भारतीयों को गिरफ्तार करने और बिना मुकदमे जेल में डालने की अनुमति दे दी। अखबारों और समाचारों पर अंग्रेजों का नियंत्रण था, और कई भारतीयों ने विरोध किया क्योंकि उनके अधिकार छीन लिए गए थे।

उसी वर्ष अमृतसर, पंजाब में जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ। १०,००० भारतीयों ने रॉलेट एक्ट का विरोध किया और ब्रिटिश सेना अधिकारी जनरल एडवर्ड डायर के हाथों सैकड़ों लोग मारे गए। इसने हमारे देश को नाराज कर दिया और उन्हें १९२० में असहयोग आंदोलन शुरू करने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी ने भारत के नेताओं और नागरिकों को ब्रिटिश सामानों के उपयोग को रोकने के लिए प्रोत्साहित किया। एक अन्य क्रांतिकारी, चंद्रशेखर

आज़ाद ने १९२५ में काकोरी रेल गाडी डकैती का नेतृत्व किया, ताकि ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीयों के प्रति उनके दुर्व्यवहार के लिए फटकार लगाई जा सके। १९२८ में साइमन कमीशन, संसद सदस्यों का एक समूह, लाहौर आया जिन्हे काले झंडे लहराते हुए प्रदर्शनकारियों ने घेरा। इसके नेता, लाला लाजपत राय, को पुलिस ने बेरहमी से पीटा और दो हफ्ते बाद उनकी मौत हो गई।

एक साल बाद, सविनय अवज्ञा आंदोलन ने ब्रिटेन के शासन से पूर्ण स्वतंत्रता के लिए जोर देना शुरू कर दिया और ऐसा करते हुए गांधीजी और जवाहरलाल नेहरू सहित कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। १९३० में गांधी ने नमक कर को चुनौती देने के लिए ४०० किलोमीटर की दांडी मार्च का नेतृत्व किया जिसने सरकार को कानून बदलने के लिए मजबूर किया। इस समय शांतिपूर्ण विरोध ने अनुचित कानूनों को बदलने में मदद करना शुरू कर दिया।

५ साल बाद अंग्रेजों द्वारा भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया और इसने हमारे देश को कुछ राजनीतिक अधिकार वापस दे दिए। अब हमारी अपनी स्थानीय सरकार थी और कुछ लोकतांत्रिक चुनाव हो सकते थे। कुछ साल बाद सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस छोड़ दी और अंग्रेजों से लड़ने के लिए १९४२ में भारतीय राष्ट्रीय सेना बनाने के लिए जर्मनी और जापान से मदद मांगी। १९३९ में द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत काफी कमजोर हो गई थी। १९४२ में अंग्रेजों ने कैद भारतीय नेताओं को रिहा कर दिया। विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच संघर्षों के कारण भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। कांग्रेस ने १९४७ में ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से स्वतंत्रता प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। अंत में यह हमें १४ अगस्त, १९४७ की ओर ले जाता है, जो ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र भारत की शुरुआत है।

परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत



नमस्कार! मेरा नाम सुजाता चौधरी है। मैं चेरी हिल चैप्टर से हूँ, और उच्चस्तर-२ में हूँ। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। खाली समय में मुझे पढ़ना, साइकिल चलाना और हॉकी खेलना पसंद है। मुझे हिंदी की कक्षा में जाना पसंद है क्योंकि इससे मुझे अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस होता है।

भारत को १८५७ में अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिली। स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले, भारत स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद की तुलना में बहुत अलग था। भारत में आजादी से पहले का समय कई भारतीयों के लिए एक बड़ा संघर्ष था। उन्हें गुलाम बना दिया गया और

उचित वेतन के बिना लंबे समय तक काम करने के लिए मजबूर किया गया। बहुत से लोग संघर्ष कर रहे थे, और यह भारत के लिए अच्छा समय नहीं था। आजादी के बाद भारत पूरी तरह से बदल गया। भारत के लोगों ने देश को फिर से पहले जैसा करने के लिए बहुत मेहनत की। हालाँकि अभी भी अंग्रेजों का एक मजबूत प्रभाव था, भारत धीरे-धीरे ठीक हो रहा था। लोग ज्यादा खुश थे और उन पर प्रतिबंध कम थे। स्वतंत्रता भारत में खुशी का एक बड़ा कारण था। स्वतंत्रता के बिना भारतीय लोग दुखी और संघर्षरत रहेंगे। इस वर्ष भारत की स्वतंत्रता की ७५वीं वर्षगांठ है। यह सभी भारतीयों के लिए बहुत खुशी का क्षण है।

जय हिन्द!

परतंत्रता ने हमें क्या दिया और लिया?



नमस्ते, मेरा नाम आदित्य खुराना है। मैं १३ साल का हूँ और उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. से नौ सालों से जुड़ा हूँ। मेरे परिवार में मेरी माँ, पिताजी, बहन, दादी और दादाजी

हैं। मुझे गणित पसंद है और व्यापार में भी रुचि है। मैं न्यू जर्सी के मूरस्टाउन नगर में रहता हूँ।

कई भारतीयों को लगता है कि हमारे देश पर ब्रिटिश राज का सकारात्मक प्रभाव रहा। निश्चित रूप से हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि अंग्रेजों ने हमें रेलवे, चाय, क्रिकेट और अंग्रेजी भाषा दी। हाँ, उन्होंने दिया, लेकिन जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, वे सभी अनपेक्षित उपहार थे। उसके पीछे सिर्फ उनका लालच, स्वार्थ और क्रूरता छपी थी।

रेल प्रणाली - अंग्रेजों ने अपनी तकनीक का उपयोग करके और भारतीयों को ब्रिटिश उपकरण खरीदने के लिए मजबूर करते हुए मुख्य रूप से अपने लिए रेलवे का निर्माण किया, क्योंकि उससे व्यापार करना बहुत आसान था, परंतु इसके लिए भारतीय कर दाताओं का पैसा लगा।

चाय - चाय पर अपनी निर्भरता को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश ने भारत में चाय के बागान स्थापित किए। लेकिन चाय तैयार हो जाने के बाद इसे ब्रिटेन भेजा गया या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेचा गया। थोड़ा बहुत बचा हुआ सामान भारतीयों के लिए बहुत महंगे दामों पर था।

क्रिकेट - "हाँ, अंग्रेज इसे हमारे पास लाए," लेकिन उन्होंने ऐसा इस आशा से नहीं किया कि हम उन्हें एक दिन उनके ही खेल में, उनके ही मैदान में हरा देंगे और वर्ल्ड कप जीत लेंगे। उनका उद्देश्य स्वदेशी लोगों को अंग्रेजी मूल्य प्रदान करना था।

अंग्रेजी भाषा - लॉर्ड मैकाले ने लिखा: "हमें एक ऐसा वर्ग बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच दुभाषिया हो सकता है जिन पर हम शासन करते हैं रक्त और रंग में भारतीयों का एक वर्ग, लेकिन स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेज।" अंग्रेजों ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि अंग्रेज़ी केवल अपने उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए सिखायी जाएगी।

एक समय में भारत जहाँ सोने की चिड़िया कहलाता था वही स्वतंत्रता के बाद एक गरीब और विकासशील देशों की श्रेणी में आने लगा।

विकासशील भारत



नमस्ते मेरा नाम अनय मुंद्रा है। मैं तेरा साल का हूँ और नॉरवॉक, कनेक्टिकट में रहता हूँ।

भारत में कई सामाजिक विकास हुए हैं। पहले भारत में धर्म को लेकर बहुत असमानता थी। पर अब समय के साथ लोगों की सोच बदल गई और वे सभी

धर्मों को बराबर मानते हैं। भारत कुछ समय में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। सन २०२१ में भारत में दिवाली की बिक्री एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हुई। यह एक दशक की सबसे बड़ी बिक्री है। भारत पहला एशियाई देश है जो मंगल गृह पर एक उपग्रह भेजने में सफल हुआ। वह सबसे पहला देश है जो उसके सबसे पहले प्रयास पर सफल रहा।

परतंत्रता में भारत की परिस्थिति



नमस्ते, मेरा नाम रोनक पाठक है। मैं एक अध्ययनशील और गुणवान लड़का हूँ। मैं चेरी हिल हिंदी पाठशाला कि उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ और हेनरी बेक मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा का छात्र हूँ।

मुझे गणित और विज्ञान में रुचि है। अंग्रेजी और हिंदी के अलावा मैं गुजराती भाषा भी बोलता हूँ। मुझे बास्केटबाल खेलना, किताबें पढ़ना, और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेना पसंद है। मैं अपने मिडिल स्कूल का सेनेटर भी हूँ। मुझे नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाना अच्छा लगता है।

भारत की स्वतंत्रता से पहले भारत पर लगभग १००० वर्षों तक बाहरी आक्रमणकारियों का शासन रहा। पहले के ८०० वर्षों में अरबी, तुर्की, मुगल और अफगानी जैसे इस्लामी आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किया। इस परतंत्रता के काल खंड में भारत ने अपना बहुत कुछ खोया। इस्लामी आक्रांताओं ने भारतीयों पर कई तरह के अत्याचार किए। उन्होंने भारत को लूटा और भारत की संस्कृति को नष्ट करने का पूरा प्रयास किया। उन्होंने तलवार की धार पर जबरन भारत में इस्लाम को फैलाया। इस्लाम मजहब को न अपनाते पर भारतीयों की हत्या की और उन्हें बहुत प्रताड़ित किया। भारत की सांस्कृतिक धरोहरों को नष्ट किया और भारत के हजारों मंदिरों को ध्वस्त किया। उदाहरण के लिए नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों को नष्ट करके सब पुस्तकों को जला दिया और अयोध्या, काशी, मथुरा जैसे अनेक पुण्य स्थलों को ध्वस्त किया। इतिहासकार बताते हैं कि नालंदा विश्वविद्यालय की पुस्तकें तीन महीनों तक जल रही थीं। संक्षेप में, इन इस्लामी

आक्रमणकारियों ने हमें कुछ अच्छा नहीं दिया, लेकिन हमारी सब अच्छी चीजें हमसे छीन ली। बाद के २०० वर्षों में, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच और अंग्रेज जैसे यूरोपीय आक्रमणकारी व्यापार करने के बहाने भारत आए और भारत के विभिन्न भागों पर कब्जा कर लिया। विशेषकर अंग्रेजों ने लगभग पूरे भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। उन्होंने इस्लामी आक्रमणकारियों की तरह तोड़फोड़ नहीं की और हमारे मंदिर और सांस्कृतिक विरासत को नष्ट नहीं किया। लेकिन उनका प्राथमिक लक्ष्य भारत की संपत्ति को लूटना था। वास्तव में आधुनिक इतिहासकारों का कहना है कि अंग्रेजों ने भारत से ४५ ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की संपत्ति चुरा ली थी। साथ ही अंग्रेजों ने भारत की गुरुकुल प्रणाली को व्यवस्थित रूप से समाप्त करके मैकाले शिक्षा प्रणाली को स्थापित किया। अपनी "फूट डालो और राज करो" की नीति के अनुसार उन्होंने भारत के लोगों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करने के लिए जाति व्यवस्था को मजबूत किया और उन्हें एक दूसरे के खिलाफ जाने दिया। उन्होंने अपने "आर्य आक्रमण सिद्धांत, अब आर्य प्रवासन सिद्धांत" के माध्यम से भारत के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों के बीच दरार पैदा करने की भी कोशिश की और मजहब के नाम पर भारत को टुकड़ों में बांट दिया। उन्होंने भारतीयों को श्रेय दिए बिना विभिन्न खोज और आविष्कार करने के लिए भारत से बहुमूल्य प्राचीन ग्रंथ चुरा लिए। बदले में अंग्रेजों ने भारतीयों को अंग्रेजी भाषा दी और उन्होंने हमें भारतीय संस्कृति, विरासत, इतिहास और भाषाओं के प्रति हीन भावना दी, जिसके कारण दुर्भाग्य से हम भारतीय आज भी बहुत अधिक नकारात्मक रूप से प्रभावित हैं।

भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के उपाय



मेरा नाम शिरव गुप्ता है। मैं चैरी हिल पाठशाला की उच्च स्तर-2 कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे कला और पुस्तकों का शौक है। खाली समय में मैं अपने परिवार के साथ चलचित्र देखना, और अपने भाई के साथ वीडियो गेम और टेबल टेनिस खेलना पसंद करता हूँ।

भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए कई उपाय हो सकते हैं। सबसे पहले देश को आत्म निर्भर होना चाहिए जिससे देश की अर्थ व्यवस्था अच्छी होगी। देश को अपने लोगों की जरूरत के लिए किसी और देश की मदद नहीं लेनी चाहिए।



मेरा नाम स्पूर्ती रेड्डी है। मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। अपने खाली समय में मुझे किताबें पढ़ना और कला करना पसंद है। पाठशाला में मेरी पसंदीदा क्लास केमिस्ट्री है।

भारत उन अन्य देशों से अलग था जिन पर ब्रिटेन नियंत्रण करना चाहता था। इसकी आबादी अधिक थी और इसकी अर्थव्यवस्था विकसित थी। जब ब्रिटेन ने नियंत्रण हासिल किया तो उन्होंने लोगों से राजनीतिक

देश की सेना बहुत अच्छी होनी चाहिए जिससे भारत देश बलवान होगा। हमें देश के हर सैनिक को बहुत धन्यवाद देना चाहिए।

देश के लोगों में एकता और हिम्मत होनी चाहिए। भारत देश में कई धर्म के लोग रहते हैं और कई भाषाएँ बोलते हैं, लेकिन सभी लोग सबसे पहले भारतीय हैं। ऐसा लोगों को सोचना चाहिए।

भारत एक महान देश है और भारत में बहुत अच्छी कला और प्रतिभा है। भारत के लोग बहुत होशियार हैं। भारत के लोग बहुत होशियार हैं और अगर वे अपनी प्रतिभा का उपयोग अपने काम में अच्छे से करें तो हमारे देश की स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रहेगी।

शक्ति छीन ली। ब्रिटेन और भारत के बीच में बहुत तनाव था। ब्रिटेन ने भारतीय संस्कृति को समझने की कोशिश नहीं की। वे केवल धन हासिल करने के लिए भारत में रहे। उस समय में बहुत अधिक जातिवाद भी था जिसके कारण छोटे विद्रोह हुए। जब गांधी 1918 में आए तो भारत के लोग स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए एकजुट हुए। भारत ने 1947 में भारतीय स्वतंत्रता विधेयक से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। हालाँकि, हिंदू और मुसलमानों के बीच में बहुत तनाव था। अंग्रेजों ने भारत को दो भागों में विभाजित कर दिया। भारत ने नई समस्याओं का समाधान करने की शुरुआत की।

“स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा”

बाल गंगाधर तिलक



दिविजा खाबे

एक सशक्त भारत

चेसटरफील्ड, उच्चस्तर-2

मेरा नाम दिविजा खाबे है। मैं ११ वर्ष की हूँ और पाँचवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में ए-२ स्तर में हूँ। मुझे हिंदी सीखने में दिलचस्पी है क्योंकि यह मुझे अपने परिजनों की जन्म भूमि एवं बहुत ही धनी संस्कृति से जोड़ती है और इससे मुझे नए लोगों के साथ वार्तालाप करने में मदद मिलती है। मेरी पढ़ने-लिखने, गाने, संगीत बजाने में, और कोडिंग में रुचि है।

१५ अगस्त, १९४७ को भारत को स्वतंत्रता मिले ७५ साल हो चुके हैं और जबकि वह पिछले वर्षों में काफी सुधार करने में सक्षम हुआ है, भारत अभी भी खुद को और सक्षम रखने के लिए बहुत कुछ कर सकता है। तो, यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे भारत और बेहतर कर सकता है।

भारत के लिए सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नागरिकों के बीच एकता हो। भारत को अंदर और बाहर से मजबूत होना चाहिए। एक ऐसा विचार जिसे लागू किया जा सकता है, वह है कि पड़ोस और समुदायों के लिए आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को हल करने के तरीके पर चर्चा करने के लिए बैठकें आयोजित करना।

लोगों को संविधान और कानून परिवर्तन का भी पालन करना चाहिए। इस तरह के सामान्य ज्ञान जैसे कि न्यायपालिका प्रणाली कैसे काम करती है, का ज्ञान पाठशालाओं में करवाना चाहिए ताकि छात्रों को

बेहतर नागरिक बनने के लिए शिक्षित किया जा सके। यह भविष्य में अपराध दर को कम करने में भी मदद कर सकता है।

भारत की सेना और तकनीक को भी आगे बढ़ना चाहिए। सैन्य उपकरणों पर अधिक खर्च किया जाना चाहिए और क्षमता का विस्तार किया जाना चाहिए। इंटरनेट का उपयोग करने के सुरक्षित तरीके भी खोजने चाहिए, साथ ही नई तकनीकों का भी आविष्कार करना चाहिए, जैसा कि भारत पिछले वर्षों से करता आ रहा है। पर्यावरणीय समस्याओं की बात करें तो प्रदूषण अब तक सबसे महत्वपूर्ण है। हमें भारत में वायु प्रदूषण की मात्रा को कम करना होगा। यह कम पटाखों का उपयोग करके, जरूरत न होने पर लाइट बंद करके और पेड़ लगाकर किया जा सकता है। ये कुछ तरीके हैं जिनसे हम मदद कर सकते हैं। साथ ही हमें प्राकृतिक संसाधनों पर अपनी निर्भरता को कम करने का प्रयास करना चाहिए। इनका प्रयोग जितना हो सके कम से कम करना चाहिए।

अंत में, सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक यह है कि सभी जातियों, लिंगों और धर्मों के लिए समान मानव अधिकार होने चाहिए। इससे न केवल नागरिकों के बीच एकता आएगी (जैसा कि पहले बताया गया था), बल्कि भारत को अक्षुण्ण बनाए रखेगा। इन सभी सकारात्मक परिवर्तनों से भारत की जनता में एक संतुष्टि भाव होगा और भारत हमेशा की तरह एक मजबूत और शक्तिशाली देश बना रहेगा।



साउथ ब्रंसविक – उच्चस्तर-२

आजादी से पहले और बाद का भारत

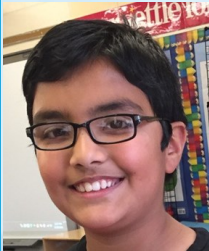


मेरा नाम संस्कार श्रीवास्तव है। मैं हिंदी कक्षा उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी पढ़ना, लिखना और बोलना सीख रहा हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना पसंद है। मेरा पसंदीदा विषय गणित है।

गहनों और वस्त्रों में समृद्ध था। ब्रिटिश राज में भारत के सैनिकों ने ब्रिटेन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बहुत सारे भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़े। इन नायकों में महात्मा गांधी, चंद्र शेखर आजाद, रानी लक्ष्मी बाई, और बाल गंगाधर तिलक सम्मिलित थे।

भारत १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता है। १८५८-१९४७ के समय में अंग्रेजों का भारत पर राज था, जिसे ब्रिटिश राज कहा जाता है। २६ जनवरी, १९५० को भारत का संविधान लिखा गया जिसे गणतंत्र दिवस के रूप में माना जाता है। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत मसालों,

जब १९४७ में ब्रिटिश शासन का अंत हुआ तो महादीप दो भाग में बँटा, भारत और पाकिस्तान। आजादी के बाद भारत ने बहुत प्रगति की। १९४७ में साक्षरता दर केवल १२ प्रतिशत थी। २०११ में यह बढ़कर ७४.०४ प्रतिशत हो गई। आजादी से पहले और बाद में भारत में इस तरह से बदलाव आया।



मेरा नाम समर्थ शर्मा है। मैं तेरह साल का हूँ। मैं साउथ ब्रंसविक हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना और तैरना पसंद है। मैं यहाँ पर “भारत-परतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भारत” के बारे में लिख रहा हूँ।

गरीब थे और उन्हें मुश्किल से खाना मिलता था। स्वतंत्रता के बाद वाला भारत खुशहाल भारत है। सरकार लोगों के लिए हर कोशिश कर रही है, लोग पढ़ रहे हैं, अमीर बन रहे हैं और सबसे जरूरी बात है कि वे स्वतंत्र हैं। भारत के नौजवान लोग भारत को खुशहाल बना रहे हैं और आगे ले जा रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब भारत एक ताकतवर देश बनेगा।

अगर मुझे भारत स्वतंत्रता के पहले कैसा था सोचना पड़े तो मुझे हिंदी फिल्म ‘लगान’ याद आती है। उसमें दिखाई देने वाले भारतवासी जो गरीब हैं और अंग्रेजों के द्वारा हर समय तंग किए जाते हैं, देखने को मिलते हैं। मुझे लगता है कि पहले ज्यादातर लोग



भारत की शान

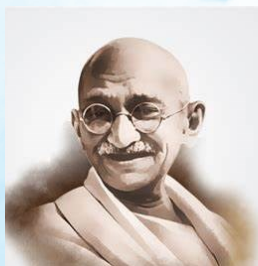


मेरा नाम ईक्षिता अल्लिपिल्लि है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ कक्षा की छात्रा हूँ। हालाँकि मेरी मूल भाषा तेलुगु है, मैं अपनी राष्ट्रीय भाषा में बातचीत करने के लिए हिंदी सीख रही हूँ।

जब लोग भारत की स्वतंत्रता का नेतृत्व करने वाले लोगों के बारे में सोचते हैं तो कई लोग **महात्मा गांधी** के बारे में सोचते हैं। महात्मा गांधी ब्रिटिश उपनिवेशिक शासन के खिलाफ स्वतंत्रता के प्रमुख व्यक्ति हैं। वे अपने अहिंसावाद के लिए प्रसिद्ध हैं। हालांकि हमारे देश में कई अन्य लोग प्रभावशाली थे और उन्होंने स्थिति को प्रभावित किया। लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन के अन्य क्रांतिकारियों को पहचानने की जरूरत है।

वल्लभभाई पटेल एक क्रांतिकारी भारतीय नेता थे जिन्हें भारत की स्वतंत्रता के राष्ट्रीय नायकों में से एक माना जाता है। उन्होंने गांधी के आदर्शों के आधार पर अंग्रेजों के खिलाफ किसान आंदोलनों का आयोजन किया। उनके प्रयासों से ५२ राज्यों का एकीकरण हुआ। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने भारत के पहले गृह मंत्री और उप प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया।

राम प्रसाद बिस्मिल एक देशभक्त कवि थे। एक भारतीय राष्ट्रवादी और आर्य समाज मिशनरी भाई परमानंद को दी गई मौत की सजा के



बाद १८ साल की उम्र में स्वतंत्रता और क्रांति के आदर्श उनके दिमाग में बस गए। उनके गुस्से ने उनकी कविता मेरा जन्म का रूप ले लिया। उनकी सबसे प्रसिद्ध पंक्ति "फिर आएंगे" है।

उधम सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने भारत के परिवारों के लिए

प्रसिद्ध भगत सिंह के साथ लड़ाई लड़ी। उधम सिंह पंजाब के एक राजनीतिक कार्यकर्ता थे। हालांकि उनकी और कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की हरकतें प्रतिशोधी हैं, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता

कि उनके खून में देशभक्ति दौड़ती थी। उन्होंने अपने देश और आने वाली पीढ़ियों के लिए लड़ाई लड़ी।

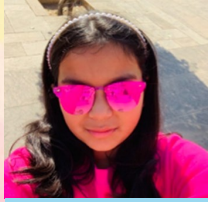
रानी लक्ष्मी बाई गर्वित सेनानी हैं जिन्होंने एक बार कहा था "मैं अपनी झांसी को आत्मसमर्पण नहीं करूंगी।" उन्हें १८५७ के भारतीय विद्रोह के दौरान उनकी ताकत और वीरता के लिए याद किया जाता है। उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों से अभिभूत होने के बाद भी आत्मसमर्पण नहीं किया।

इन लोगों के सफल प्रयासों के बाद अंग्रेज इस क्षेत्र से हट गए। धार्मिक आधार पर भारत का विभाजन हुआ। तब से भारत का विकास हुआ। संस्थापक पिताओं और माताओं द्वारा लोकतांत्रिक नीतियों की स्थापना हुई। यह सुनिश्चित करता है कि भारत के प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक राज्य, प्रत्येक व्यक्ति का भारत में प्रतिनिधित्व हो।

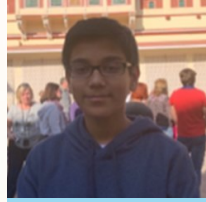


चैरी हिल – उच्चस्तर-१

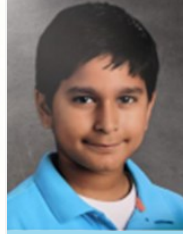
हमारे सपनों का भारत



अन्वी सिंह



अर्नव सिंह



अंश जग्गी

मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे टेनिस खेलने में और कम्प्यूटर में बहुत रुचि है। खाली समय में मैं शतरंज भी खेलता हूँ।

भारत का अतीत बहुत गौरव पूर्ण रहा है। इस देश में बड़े-बड़े ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि मुनि, और महात्मा हुए हैं। हमारे देश में महावीर जैन, गौतम बुद्ध, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, कृष्ण जैसे महापुरुष हुए हैं। हमारे देश की यही विशेषता रही है कि हम हमेशा विश्व कल्याण की भावना से अभिभूत रहे हैं। हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता रहा है। ऐसे गौरवपूर्ण देश का वासी होने के नाते हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम इसकी उन्नति के लिए हमेशा सजग रहें। भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के लोग एक दूसरे के साथ शांति से रहते हैं। लेकिन आज भी देश के कई हिस्सों में व्यक्ति के लिंग, जाति, और धर्म के आधार पर भेदभाव किया जाता है। हमारे सपनों का भारत ऐसा होगा जहाँ किसी भी तरह का भेदभाव नहीं होगा। हम ऐसे भारत का सपना देखते हैं जहाँ हर नागरिक शिक्षित होगा और किसी को भी शिक्षा प्राप्त करने से रोका नहीं जाएगा। हमारे सपनों का भारत भ्रष्टाचार से मुक्त होगा। हम ऐसे भारत का सपना देखते हैं जहाँ महिलाओं को बराबरी का स्थान प्राप्त हो। यह सब तब ही संभव हो सकेगा जब देश का हर नागरिक भारत को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा। जय हिंद।

मेरे सपनों का भारत होगा सुन्दर और एकदम साफ सुथरा

सब लोग मिल जुल कर रहेंगे, नहीं करेंगे आपस में झगड़ा

मेरे सपनों के भारत में अमीर और गरीब का भेद मिट जाएगा

सड़क पर कोई भीख न मांगे, हर भारतवासी सक्षम हो जाएगा

मेरे सपनों के भारत में आरक्षण भी समाप्त हो जाएगा

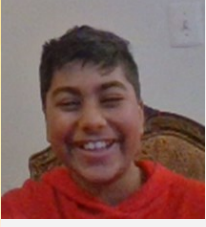
सब को एक समान अवसर मिले, कोई विद्यार्थी दुख न पाएगा

मेरे सपनों के भारत में सब नेता और अधिकारी होंगे सत्यवादी और निष्कपट

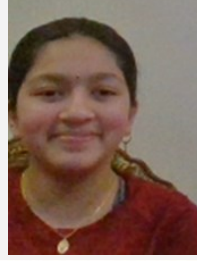
देश को आगे बाना, होगा इनका एकमात्र मकसद

मेरे सपनों के भारत में भ्रष्टाचार पूर्णतः मिट जाएगा
पूरे विश्व में लहराए तिरंगा, भारत फिर से सोने की चिड़िया बन जाएगा

भारत की आजादी



मेरा नाम कुणाल प्रभाकर है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। साहसिक किताबें मेरी पसंदीदा किताबों में से एक हैं। मुझे टेनिस खेलना और टीवी देखना भी पसंद है।



मेरा नाम वैष्णवी है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। मैं किताबें पढ़ना पसंद करती हूँ। मुझे टेबल टेनिस खेलना पसंद है। मुझे अपने दोस्तों के साथ खेलना और टी.वी. देखना पसंद है।

हम भारत की आजादी के पचहत्तर साल के बारे में बात करने जा रहे हैं। ब्रिटिश पहली बार सत्रहवीं शताब्दी में व्यापार, संसाधनों और मसालों की तलाश में भारत आए थे। उन्होंने भारत में छावनी की स्थापना की और ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। उन्होंने जल्द ही एक अवसर देखा और स्थानीय राजनीति में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। उसके बाद अंग्रेजों ने छोटी सरकारों और राज्यों पर हमला करना और कब्जा करना शुरू कर दिया। अधिकांश भारत पर कब्जा करने में उन्हें लगभग एक सदी लग गई। भारत पर ब्रिटेन का पूर्ण शासन १८५७ में शुरू हुआ। फिर १८५७ का विद्रोह हुआ। अंग्रेजों ने सुआर और गाय की चर्बी से अपनी बंदूक का कारतूस बनाकर धर्मों का अपमान किया था। रानी लक्ष्मी बाई एक स्वतंत्रता सेनानी थीं जिन्होंने १८५८ में विद्रोह की लड़ाई लड़ी। वीर कुंवर सिंह ने १८५८ में बिहार में विद्रोह का नेतृत्व किया था। पूरे भारत के कई लोगों ने अपनी स्वतंत्रता वापस पाने के प्रयास में लड़ाई लड़ी। हालाँकि, विद्रोह विफल हो गये क्योंकि वे सभी अलग-अलग राज्यों के रूप में लड़े, बजाय एकसाथ लड़ने के। उसके बाद भारत हताश हो गया था। भारत को बहुत सारे करों का भुगतान करना पड़ा और उसे

गरीबी की ओर धकेल दिया गया। एक सदी बाद भारत भर में कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए फिर लड़ाई लड़ी। मदद करने वाले कुछ स्वतंत्रता सेनानियों में महात्मा गांधी, भगत सिंह और जवाहर लाल नेहरू थे। महात्मा गांधी एक अहिंसक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने शांतिपूर्ण मार्च का नेतृत्व किया और अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाई। लगभग एक सदी तक लड़ने के बाद भारत १९४७ में अंग्रेजों के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम हुआ। अंग्रेजों ने जाते-जाते भारत को दो भागों में विभाजित कर दिया, भारत और पाकिस्तान। भारत बहुसंख्यक हिंदूओं और पाकिस्तान मुस्लिम बहुमत से बना था। इसके बाद ब्रिटेन पीछे हट गया और आखिरकार भारत को उसकी आजादी वापस दे दी। भारत अपनी सरकार में सुधार करने में सक्षम था। पंद्रह अगस्त को राष्ट्रीय अवकाश का दिन मनाया जाता है, जिस दिन भारत ने अपनी स्वतंत्रता वापस प्राप्त की थी। इस दिन भारत में स्कूल, ऑफिस और कॉलेज बंद रहते हैं। २०२२ में ब्रिटेन से भारत की आजादी का पचहत्तरवां वर्ष होगा।

"एक व्यक्ति एक विचार के लिए मर सकता है, लेकिन वह विचार, उसकी मृत्यु के बाद, एक हजार जन्मों में अवतरित हो जाएगा - नेताजी सुभाष चंद्र बोस"



सिया सुखानी



सरस सुखानी

भविष्य का भारत

उन्नत भारत, सशक्त भारत

हमारे सपनों का भारत संस्कृति और सभ्यता से भरपूर, बहुत सुंदर, साफ, विज्ञान आधारित तकनीकी से भरा हुआ है और हमारे खजानों, स्मारकों और



मंदिरों को पुनर्स्थापित करता है। हर शहर में बहुत से पीपल और बरगद के पेड़ लगाए हैं, क्योंकि वे दिन-रात

ऑक्सीजन दे सकते हैं और ओजोन परत के निर्माण में मदद करते हैं जो जलवायु परिवर्तन अच्छा करने में भी मदद करता है। हमारा सपनों का भारत साफ है। सड़कों में गड्ढे या दरारें नहीं हैं, फुटपाथ भी नए हैं। मीलों और मीलों का जंगल है। पशु अपने जंगल में घूमते हैं। सूरज की रोशनी और पानी के उपयोग से घर, उद्योग सोलार पैनल और हाइड्रोएलेक्ट्रिक पावर से चलते हैं। प्राकृतिक भंडार का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। वह पैसा उन्नत तकनीक के शोध में प्रयोग करते हैं।

जिन देशों ने इतने लंबे समय तक हमारे खजाने को अपने पास रखा है, उन्होंने उन्हें वापस दे दिया है। अंग्रेजों ने हमारा कोहिनूर दिया, जो दुनिया का सबसे बड़ा हीरा है, जिसने लंबे समय तक अपने ताज को सजाया है। वर्तमान में लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में प्रदर्शित अमरावती संगमरमर की मूर्तियों का संग्रह भी वापस कर दिया गया है। वर्तमान में, कुछ ही देशों ने भारत को अपना खजाना वापस दिया है, लेकिन खरबों डॉलर मूल्य की कला, जवाहरात और इतिहास जो ले लिया गया है वह अभी भी अछूता है।

हमारे सपनों के भारत में हमारे सभी खजानों को उनके उचित स्थान पर पुनर्निर्माण किया जाता है। सूर्य मंदिर कश्मीर हो, काशी विश्वनाथ वाराणसी हो या कृष्णा जन्म का जेल सब मंदिरों और स्मारकों को भी पुनर्निर्माण किया गया है।



अजंता गुफाएं महाराष्ट्र, सांची स्तूप, एम.पी जैसे प्राचीन समय की स्मारकों का प्रचार हो।



भारत एक बार फिर धन, संस्कृति और वैभव से भरा हुआ है।

पुनः हमारे पास तक्षशिला जैसा बड़ा विश्वविद्यालय है जिसमें सभी के लिए निःशुल्क ज्ञान हो, वह पूरी दुनिया में प्रसिद्ध भी हो और सब का स्वागत करे। भारत के हर क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की कलाएँ शामिल हैं, जिनमें नृत्य, चित्रकारी, मूर्तिकला, मिट्टी के बर्तन और कपड़ा कला जैसे बुने हुए रेशम शामिल हैं जो बहुत सुप्रसिद्ध प्राचीन काल से हैं। भारत ५० से अधिक पारंपरिक लोक और जनजातीय कलाओं का घर है। ये भारतीय लोक कलाएँ ३००० से अधिक वर्षों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं। हमें इन कलाओं को बढ़ावा देना चाहिए।

हमारे सपनों का भारत उतना ही सुंदर है जितना पहले हुआ करता था, सोने की चिड़िया की तरह।

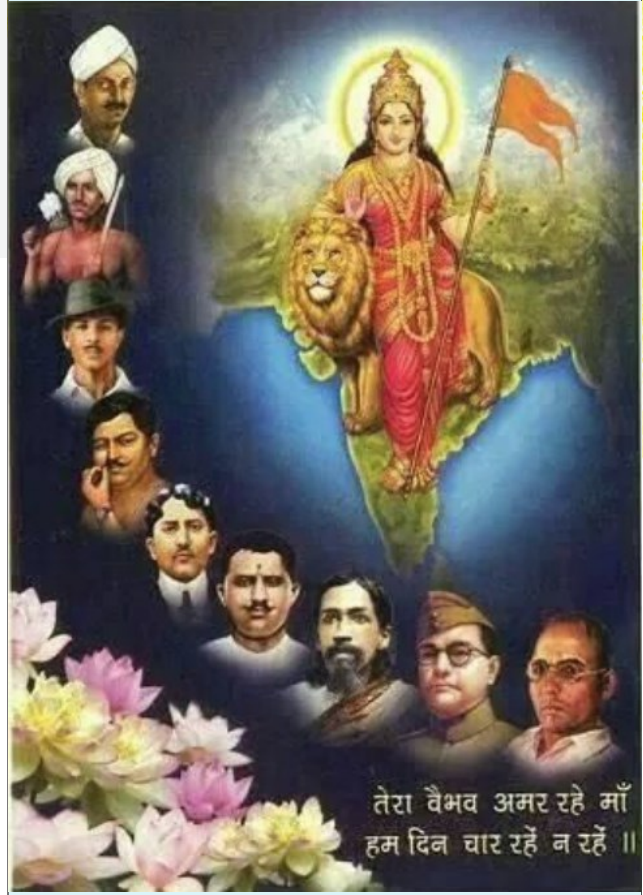
उच्चस्तर-१, वेस्ट विंडसर-प्लैसबोरो हिंदी पाठशाला



तरन सिंह

नमस्ते, मुझे पेंटिंग करना, पुस्तकें पढ़ना और टेनिस खेलना अच्छा लगता है। मैं हिंदी के साथ-साथ संस्कृत और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत भी सीखता हूँ।

भारत देश महान है
यह प्यारा हिंदुस्तान है
भारत सबसे आगे बड़े
सारे जन का राजा बने
सबकी आँखों का तारा
विज्ञान, तकनीक का ज्ञाता
मेरे सपनों का भारत है ऐसा
पूरी दुनिया का हो परिवार जैसा
इस दुनिया में प्रेम भर दे
मेरे सपनों का भारत, संसार में खुशियाँ भर दे



उच्चस्तर-१, वुडब्रिज हिंदी पाठशाला



उर्वी अखौरी

नमस्ते, मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी सीखना अच्छा लगता है क्योंकि यह मेरी मातृ भाषा है। मुझे चित्रकारी करना, किताबें पढ़ना, सजावट करना बहुत पसंद है।

भारत देश सबसे प्यारा और न्यारा है। भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के लोग एक दूसरे के साथ मिलजुल कर सद्भाव से रहते हैं। मैं ऐसे

भारत का सपना देखती हूँ जहाँ हर व्यक्ति शिक्षित हो और सब के पास रोजगार हो। किसी भी व्यक्ति के साथ लिंग, जाति, धर्म, भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाये। आने वाले समय में भारत का विज्ञान, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में ऐसा विकास हो ताकि भारत भी विकसित देशों की श्रेणी में शामिल हो जाए। भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का गुणगान हो। भारत पूरे संसार को एकता, शांति और विकास कि नई ऊंचाइयों में ले जाने का मार्गदर्शन करे।



हमारे सपनों का भारत

एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-१



नील जैन

भारत, एक देश के रूप में, स्वतंत्रता के समय से बहुत आगे बढ़ गया है। इसने कई महान गणितज्ञों, ज्योतिषियों, वैज्ञानिकों और व्यापारियों को जन्म दिया है। शकुंतला देवी एक महान गणितज्ञ थीं। सी. वी. रमन एक महान

वैज्ञानिक थे जिन्होंने प्रकाश के साथ काम किया। वर्तमान समय में भी गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और ट्विटर जैसी कंपनियों के प्रमुख भारतीय हैं। भारत एक महान देश है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में यह और बेहतर हो सकता है। मेरे सपनों के भारत में कुछ ऐसा हो ...

भारत में गरीबी बहुत बड़ी चीज है। वहाँ की लगभग ७५% आबादी गरीबी में रहती है। मेरे सपनों में, भारत से गरीबी की समस्या कम हो जाएगी। सभी के पास उचित रहने का स्थान, खाने में स्वस्थ भोजन

और पीने के लिए स्वच्छ पानी होगा। सभी बच्चे स्कूल जाएँगे और अपने भविष्य के लिए खुद को शिक्षित करेंगे। मेरे सपनों में भारत की प्रदूषण की समस्या कम होगी और सभी को स्वच्छ हवा मिलेगी। भारत में मलेरिया जैसी बीमारियों पर रोक लग जाएगी। अंतरिक्ष बहुत बड़ा है, और भारत को आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए। हमें चंद्रमा पर रोवर्स और लोगों, दोनों को भेजना चाहिए। यह भारत की ज्योतिषीय उपलब्धियों में एक बड़ा कदम बनाएगा। भारत में महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार मिले। महिलाओं को उचित समानता मिलनी चाहिए ताकि वे पुरुषों से न डरें।

एक ऐसी जगह जहाँ हर कोई खुश हो, एक ऐसी जगह जहाँ हर कोई शामिल हो, एक ऐसी जगह जहाँ हम नेतृत्व कर सकें। मेरे सपनों में यह भारत है।



प्रिशा मजुमदार

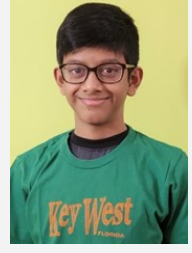
मेरे सपनों के भारत में हर भारतीय खुश होगा। सभी लोग लड़ाई और परेशानी से मुक्त होंगे। भारत शांति और खुशी से भरा होगा। हर इंसान स्वस्थ और पढ़ा लिखा होगा। भारत में अच्छी सड़कें होंगी। सभी के लिए भरपूर पानी होगा। सभी स्वच्छ हवा में सांस ले सकेंगे। हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी।

भारत में सबके लिए ढेरों नौकरियाँ होंगी। सभी लोगों के लिए मुफ्त स्वास्थ्य सेवा होगी। भारत, कंप्यूटर और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सब से आगे होगा। अपने पड़ोसियों के साथ भारत का विवाद सुलझा जाएगा। भारत, ओलंपिक में भी कई खेल पदक जीतेगा। भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा। मुझे विश्वास है कि भारत के लिए मेरे सपने सच होंगे।



नमस्ते। मेरा नाम सार्थक कुमार है। मैं मैं "वुद्रो विल्सन मिडल स्कूल" की सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एडिसन में रहता हूँ और मुझे खेल खेलना और भाषाएँ सीखना अच्छा लगता है।

नमस्ते। मेरा नाम सार्थक कुमार है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं "वुद्रो विल्सन मिडल स्कूल" में पढ़ता हूँ। मैं एडिसन में रहता हूँ और मुझे खेल खेलना और भाषाएँ सीखना अच्छा लगता है।



नमस्ते! आज हम अपने सपनों के भारत के बारे में बात करेंगे। आइए पहले बात करते हैं कि भारत ने अपनी स्वतंत्रता कैसे प्राप्त की। २०० वर्ष ब्रिटेन के कब्जे में रहने के बाद भारत को अपनी स्वतंत्रता मिली। यह वर्ष भारतीय स्वतंत्रता का ७९वाँ वर्ष है। भारत ब्रिटिश राज का हिस्सा था और फिर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए मुस्लिम लीग (पाकिस्तान और बांग्लादेश) के साथ लड़ा। भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करने वाले कई नेता भगत सिंह, महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू थे।

भारत की आज़ादी की बात करने के बाद अब हम हमारे सपनों के भारत के बारे में बात करते हैं। हमारे

सपनों के भारत में लोग गरीब नहीं रहते। हमारे सपनों के भारत में पक्की और साफ़ सड़कें होंगी। हमारे सपनों के भारत में लोग एक दूसरे को उनके व्यक्तित्व पर राय बनाएँगे और उनके तन के रंग पर राय नहीं बनाएँगे। लोग एक दूसरे से ठीक से बर्ताव करेंगे। हमारे सपनों के भारत को पूरी दुनिया का सम्मान मिलेगा। हमारे सपनों का भारत अमीर रहेगा और लोग दूर-दूर से आएँगे। हमारे सपनों के भारत में लोग खुश रहेंगे। हमारे सपनों के भारत के पास एक सरकार होगी जो लोगों की भलाई के लिए सोचेगी और भ्रष्ट नहीं होगी। हमारे सपनों के भारत में लोग गरीब नहीं रहेंगे, लेकिन लोग अमीर और खुश रहेंगे।

मेरा नाम विजेता गर्ग है। मैं उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। मैं भारत में पैदा हुई थी और छह साल की उम्र में अमेरिका आयी थी। मुझे अपने खाली समय में पढ़ना, ताश खेलना और अपने दोस्तों के साथ समय बिताना पसंद है।

महात्मा गांधी: "मेरे सपनों के भारत में, शांति और एकता होगी। मेरे सपनों के भारत में भारत महानता की ऊंचाइयों तक पहुँचेगा।"

मेरे सपनों के भारत में गांधी का सपना पूरा होता है। उनके आदर्श वही विचारधारा है जो भारत को उनकी स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए एक साथ लाई थी और यह वही आदर्श हैं जो हमें आगे बढ़ा सकते हैं।

क्या भूख, आतंकवाद और पीड़ा के बिना एक देश, सुख और करुणा से भरा एक देश स्वर्ग नहीं लगता लोग इस स्वर्ग के एक टुकड़े के लिए भारत से बाहर नहीं, बल्कि भारत के अंदर आकर बसेंगे। इसके साथ ही स्वार्थ का नाश भी होना चाहिए - करुणा का प्रसार होना चाहिए। एक नेक सरकार भारत के नेताओं को अपने लिए नहीं, बल्कि देश के लिए सोचने देगी। यह भारत की महानता के द्वार खोल पाएगा। ऐसा करने से, हम वही गलतियों में नहीं पड़ेंगे जो हमने इतिहास में की हैं - जहाँ विवाद ने राष्ट्र के बीच अविश्वास पैदा किया था। हम एक साथ खड़े होंगे, एक साथ काम करेंगे और एक साथ सफल होंगे। यही मेरे सपनों का भारत है।

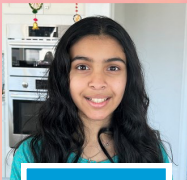


नमस्ते, मेरा नाम धृतिश्री भामीडीपाटी है। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में अपनी माँ, पिता और बहन के साथ रहती हूँ। मैं जॉन पी. स्टीव्स हाई स्कूल में नौवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं बी-१ से हिंदी की क्लास कर रही हूँ। मैं चौथी कक्षा से वायलिन बजा रही हूँ। मुझे गाना गाने में बहुत आनंद आता है।

भारत का भविष्य, बहुत स्पष्ट है। अधिकाधिक रोबोट हर दिन जन्म ले रहे हैं। तकनीकी प्रगति, हमारे जीवन को निगल रही है। इंस्टा, व्हाट्सएप और स्नैप पर भरोसा करते हुए, हमने खुद को क्या बना दिया है। अब जब हम ट्वीट शब्द सुनते हैं, तो हम उस खूबसूरत कोयल के बारे में नहीं सोचते हैं, जो हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए खूबसूरती से गाती है। इसके बजाय हम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को याद करते हैं। जब हम एपल सुनते हैं, तो हम उस सुंदर फल के बारे में नहीं सोचते हैं, जो कि खाने में बहुत स्वादिष्ट है। इसके बजाय हम सोचते हैं, हाँ, नया उत्पाद लॉन्च किया जा रहा है, अब मैं अपग्रेड कर सकती हूँ और वास्तविकता में रह सकती हूँ। हाँ, यह भारत का भविष्य है, जो मैं देख रही हूँ। इतने फंस गए हैं, इन दिनों तकनीकी में कि हम भूल गए हैं कि हमारे पास वास्तव में और भी बहुत कुछ है। बहती नदियाँ जैसे, गंगा, यमुना, सरयू और गोदावरी – जो हमें शीतलता प्रदान करती हैं। ऊँचे पहाड़ जैसे, हिमालय, विंध्य या पूर्वांचल – जो कठिन समय पर मजबूती से खड़े रहते हैं। वह सभी पेड़ जो, मनुष्य

को छाया और आराम देते हैं। फूलों की मीठी सुगंध, जो हमें खुशबू देती है। ऐसी सुंदरता का ख्याल रखना, हमारा कर्तव्य है।

ऐसा है भारत का भविष्य, जिसे मैं देखना चाहती हूँ। भारतीय संस्कृति का एक गहरा इतिहास है। हमारी जड़ें गहरी हैं, समय के साथ गहरी और मजबूत होती जा रही हैं। हमें कभी भी कुछ कम के लिए समझौता नहीं करना है, केवल, शांति की कामना करना और उसे प्राप्त करना है। बुराई पर अच्छाई की विजय, एक मुहावरा जिसके साथ हम बड़े हुए हैं। आइए, हम सब एक साथ उठें, और अपने साथी मित्रों और पड़ोसियों के जीवन में, बदलाव की कामना करें। एक साथ इस तरह जुड़ें कि हम में से कोई भी अकेला न रह जाए। हमारे हाथ की उंगलियाँ अलग हैं, लेकिन जब एक साथ जोड़ दिया जाए, तो यह मजबूत मुट्ठी बन जाती है। हम सब को एक होना चाहिए और, एक दूसरे का हाथ थामना चाहिए। और एक ऐसा समाज बनाना चाहिए, जहाँ सभी समान हों और सभी एक हों। यही भारत का भविष्य है, जिसकी मैं कल्पना करती हूँ।



नेहा निरगुडे

हमारे सपनों के भारत में कम प्रदूषण और कम गरीबी होगी। उम्मीद है कि भारत यह सुधार कर सकता है। भारत एक महान देश है। इन समस्याओं के समाधान से ही भारत आर्थिक और सामाजिक रूप से विकसित होगा।



शिव्या रंजन

भारत में एक समस्या है कि भारत

में बहुत गरीबी है। इसका उपाय है कि छोटे कस्बों तक उचित शिक्षा पहुँचाना। जब इन बच्चों को शिक्षा मिलती है तो उन्हें नौकरी मिलेगी। जब ९०% लोग काम करेंगे तो गरीबों की संख्या घटेगी। भारत सरकार को भारत के ग्रामीण क्षेत्रों का औद्योगीकरण भी करना चाहिये। भारत सरकार को नई इमारतों के लिए वित्तीय सहायता देनी चाहिए। साफ पानी और खाने का इंतज़ाम भी करना चाहिए। ये ज़रूरी है क्योंकि लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रहे। ये गरीबी कम

मेरी भारत माता



रितिका मौर्या उच्चतर-१ की छात्रा हैं। उन्हें कहानियाँ लिखना पसंद है। भारत की प्रमुख समस्या को देखते हुए उन्हें कविता लिखने की प्रेरणा मिली। यह कविता बताती है कि रितिका कैसा भारत देखना चाहती है।



मेरे सपनों की भारत माता,
जहाँ धर्म की विविधता जीवन में आती है,
जहाँ अनेक संस्कृतियां फलती-फूलती हैं,
जहाँ शुद्धता और शांति की प्राथमिकता है,
हिमालय के मस्तक से
गंगा के चरणों तक
मेरे मन की भारत माता,
जहाँ नदी की लहरों पर कमल खिलते हैं,
जहाँ मोर पंख खोलकर नाचते हैं,
जहाँ सभी दिल एक साथ जुड़ते हैं,
दिल्ली के केंद्र से,
भारत की सीमाओं तक।
भारत माता, मैं इसे कैसे देखती हूँ,
सभी नागरिक रोग मुक्त और स्वस्थ मन के,
जैसे टहनी से लटके हुए ताज़े आम,

बीमारों के लिए अस्पताल में सुलभ इलाज,
प्रत्येक व्यक्ति के छोटे-छोटे प्रयासों से निर्मित,
जो उन विशाल नींवों को भी प्रभावित करें।

भारत माता, मेरे ख्वाबों में,
जहाँ अमीर, अमीर ही रहते हैं,
जहाँ गरीब समय के साथ अमीर होते हैं,
जहाँ समृद्धि बसती है,
गाँव की कच्ची गलियों से,
शहर की पक्की सड़कों तक।

भारत माता मेरे हृदय में,
जहाँ सब के पास घर में बुलाने की जगह हो,
जहाँ जन-गण-मन समृद्ध, और आत्म निर्भर हों।

करने के कुछ उपाय हैं।

भारत की दूसरी मुसीबत प्रदूषण है। भारत दुनिया का तीसरा सर्वाधिक प्रदूषित देश है। यह लोगों के स्वास्थ्य के लिए बहुत बुरा है क्योंकि लोग विषाक्त हवा में सांस ले रहे हैं। यह फेफड़ों की गंभीर स्थिति पैदा कर सकता है। इसे ठीक करने के लिए हम सौर ऊर्जा और जन परिवहन का उपयोग कर सकते हैं। ऐसा करने से कम ईंधन जलाया जाएगा जिससे हवा

कम प्रदूषित होगी। हम अगर यह सब करते हैं तो हम प्रदूषण को कम कर सकते हैं और लोगों के स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर हम अपने सपनों के भारत में कम प्रदूषण और कम गरीबी देखना चाहते हैं। इससे भारत अपने निवासियों के लिए एक बेहतर जगह बनेगा।

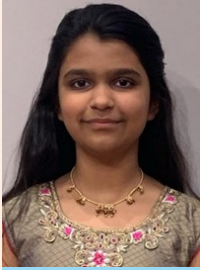
नार्थ बुंस्विक, उच्चस्तर-१

योगिता मोदी

मेरे सपनों का भारत कैसा हो

शिक्षिका एवं पाठशाला संचालिका

नमस्ते, भारत की स्वाधीनता के ७५ वें वर्ष जोकि हम अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं, की आप सभी को बधाई और हार्दिक अभिनंदन। इस सुअवसर पर कर्मभूमि में लेख भेजने के लिए मेरी कक्षा के विद्यार्थी बहुत उत्साही थे। कक्षा में उनसे इस विषय पर वार्तालाप हुआ कि वे भारत के बारे में क्या जानते हैं और भारत का आने वाला कल कैसा हो। थोड़े से मार्गदर्शन और उनकी स्वयं अपनी सोच के फलस्वरूप इन विद्यार्थियों ने अपने विचार हिंदी में लिखने का अपना लक्ष्य पूरा किया। जिस सरल और निश्छल भाव से इन बच्चों ने अपने भाव व्यक्त किए हैं उस पर मुझे गर्व है। मैं इन विद्यार्थियों को ऐसे ही भारत के बारे में जानने और लिखने के लिए प्रेरित करती रहूँगी।



आरना मेहरा

मेरे सपनों का भारत एक सामान्य भारतीय के स्वप्न ही की तरह है - जहाँ शांति, प्रेम, और सदभाव हो। मेरे सपनों के भारत में सब के पास अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधा हो, सब अपने गाँव या शहर में एक दूसरे के साथ मिलजुल कर

रहें, कोई भूखा न हो, न कोई बेघर हो। लड़के और लड़कियों में कोई भेदभाव न हो और दोनों को एक जैसा अवसर मिले। सब लोग वातावरण का ख्याल रखें जिससे हवा और नदियाँ साफ़ रहें। समाज में कोई धर्म के नाम पर न लड़े और सब यह सोचें कि हम अपने भारत को और अच्छा, और सुंदर, तथा और शांतिपूर्ण कैसे बनाएं। मैं आशा करती हूँ कि सब बड़े और मेरे जैसे बच्चे मेरे इस सपने को पूरा करने में मेरा साथ देंगे और भारत फिर से इस दुनिया का सबसे बड़ा तारा बन जाएगा।



आरव देसाई

मेरे सपनों का भारत महान होगा। सब लोग एकता से रहेंगे। कोई एक जाति दूसरी जाति से महान नहीं होगी। सब लोग अपने काम ईमानदारी से करेंगे। सब लोग अपने कर्मों को अच्छी तरह से निभाएंगे। कोई किसी से पैसों का

लालच देकर काम नहीं करवाएगा। देश का हर एक नागरिक देश की रक्षा को अपना कर्म मानेगा। सब लोग देश को साफ और नया जैसा रखेंगे। देश के ज्यादातर लोग जितना हो सके उतना भारत में बनी हुई चीज़ें खरीदें और देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान दें। हर एक क्षेत्र में भारत का विकास विश्व में सबसे तेज हो। मेरी आशा है कि आज के बच्चे जो भविष्य के नागरिक होंगे वे मेरे सारे सपनों को साकार करेंगे। भारत माता की जय। जय हिन्द।

“अभी भी जिसका खून ना खोला, वो खून नहीं पानी है जो देश के काम ना आए, वो बेकार जवानी है”

- चन्द्र शेखर आजाद

दांडी मार्च

राधा पंत

चेस्टरफील्ड पाठशाला



राधा पंत

दांडी मार्च गांधी जी ने १२ मार्च, १९३० को साबरमती आश्रम से शुरू किया था। इस मार्च का उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य के कठोर नमक कानून को तोड़ना था। अंग्रेजों ने एक सबसे बुनियादी चीज, नमक पर अनुचित कर लगाकर भारत की

नब्ज को अपने आधीन रखा था। इस मार्च के द्वारा गांधी जी ने अंग्रेजों को खुली चुनौती दी और उनकी बुनियाद को हिला दिया था।

मार्च साबरमती आश्रम में ७८ लोगों के साथ शुरू हुआ, लेकिन दो सौ चालीस मील के दौरान लगभग पचास हजार लोग उनके साथ शामिल हो गए। ६ अप्रैल की सुबह दांडी में गांधी ने समुद्र के किनारे मुट्ठी भर नमक को उठाया और ब्रिटिश राज के

नमक कानूनों को तोड़ दिया। गांधीजी ने फिर सभी देशवासियों को नमक बनाने की आज्ञा दी।

गांधीजी के सभी प्रयासों के बावजूद नमक कर आजादी मिलने तक बना रहा, लेकिन दांडी मार्च से भारत के स्वाधीनता आंदोलन को नई दिशा तथा ताकत मिली।



महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू मार्च के दौरान



साउथ ब्रुंस्विक उच्चस्तर-१

भारत की स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष

सामाजिक, आर्थिक, एवं तकनीकी क्षेत्र में भारत का विकास



मेरा नाम ओजस श्रीवास्तव है। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-१ का छात्र हूँ। निकिता जैन जी और ममता अग्रवाल जी मेरी हिंदी कक्षा की शिक्षिका हैं। मुझे शतरंज खेलना, क्लैरनेट बजाना, हिंदुस्तानी सर्गीत एवं गाना सीखना और किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

सन् १९४७ में स्वतंत्रता मिलने के बाद से भारत ने बहुत सारी महान उपलब्धियाँ हासिल की हैं। आज हमने कृषि से लेकर न्यूक्लीयर एवं अंतरिक्ष तक, विश्व प्रसिद्ध अस्पताल से शिक्षा संस्थानों तक, स्टील कारखानों से लेकर सूचना एवं तकनीकी उद्योग तक, सभी क्षेत्रों में अपना उच्च स्थान बना लिया है। १९६९ में भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन (ISRO) की स्थापना की गई थी। इसरो दुनिया की छह सबसे बड़ी सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है। १९७५ में

इसरो ने अपना पहला उपग्रह, आर्यभट्ट लॉन्च किया था। १९८० में रोहिणी-१ को पहले भारतीय उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी (SLV) से प्रक्षेपित किया गया था। इसरो का एक अत्याधिक प्रमुख मिशन, चंद्रयान-१ नवंबर २००८ में चन्द्रमा के चारों ओर कक्षा में स्थापित किया गया था। इससे भारत को चन्द्रमा के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान करने में सहायता मिली जो भारतीय प्रौद्योगिकी के लिये एक बहुत बड़ा योगदान रहा था।

भारत ने २०२०-२१ के इस कोविड काल में वैक्सीन के क्षेत्र में भी बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की है। आज भारत दो सफल कोविड वैक्सीन - कोवीडशील्ड और कोवैक्सीन का उत्पादक देश है। सूचना तकनीकी के क्षेत्र में भारत आज अग्रणी देशों में गिना जाता है। देश के डिजिटल इंडिया प्रोग्राम का सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में बड़ा योगदान रहा है। आने वालों सालों में मैं अपने प्रिय देश भारत को सोने की चिड़िया नहीं सोने का शेर देखना चाहता हूँ।

मेरा भारत महान



मेरा नाम अर्नव रस्तोगी है। मैं ११ वर्ष का हूँ और उच्च स्तर-१ में हूँ। मुझे विडयो गेम खेलने और दोस्तों के साथ बातचीत करने में मजा आता है। मुझे नई चीजें सीखने और गतिविधियों में शामिल होना बहुत पसंद है। मेरा प्रिय खेल बास्केटबॉल है।

ब्रिटिश राज के अधीन रहने के बाद १५ अगस्त १९४७

के दिन भारत को स्वतंत्रता मिली। हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के लिये लड़ाई लड़ी। आजादी के ७५ वर्ष पूरे होने पर आइए कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों को याद करें, जिनका साहस और देशभक्ति हमें एक समृद्ध और मजबूत भारत के लिये काम करने के लिये प्रेरित करता है।

भगत सिंह - एक भारतीय समाजवादी क्रांतिकारी जो

अंग्रेजों के खिलाफ नाटकीय हिंसा के अपने कृत्यों के लिये जाने जाते हैं। उन्हें २३ साल की उम्र में मार दिया गया, जिसने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का लोकनायक बना दिया।

रानी लक्ष्मीबाई - झाँसी की शासक १८५७ के भारतीय विद्रोह के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थी और भारतीय राष्ट्रवादियों के लिये ब्रिटिश राज के प्रतिरोध का प्रतीक थी।

सरोजजनी नायडू - वे लोकप्रिय रूप से भारत की कोकिला के रूप में जाने जाने वाली महीला हैं। नायडू जी ने औपनिवेशिक शासन और सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति पाने की दिशा में काम किया।

बी. आर. अम्बेडकर - अम्बेडकर जी ने अछूतों (दलितों) के प्रति सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दों के खिलाफ अभियान चलाया और महिलाओं के सामाजिक अधिकारों का भी समर्थन किया।

मंगल पांडे - वे १८५७ के विद्रोह के प्रारंभिक शहीद थे। वे ब्रिटिश भारतीय सेना के एक सैनिक थे, लेकिन उन्होंने अपने कमांडरों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। ८ अप्रैल, १८५७ को बैरकपुर में उन्हें फाँसी दे दी गई।

चंद्रशेखर आजाद- आजाद एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) को हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (एचएसआरए) के अपने नए नाम के तहत पुनर्गठित किया।

वल्लभ भाई पटेल - वे सरदार पटेल के नाम से लोकप्रिय थे। वे अहिंसक सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों में शामिल थे।

सुभाष चंद्र बोस- नेता जी ने भारतीय सेना की स्थापना की और भारतीय राष्ट्रीय सेना को नया रूप दिया। वे असहयोग आंदोलनों के भागीदार और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता थे। उन्होंने स्वतंत्रता के लिये जवाहर लाल नेहरू के साथ काम किया।

महात्मा गांधी - राष्ट्रपिता, ब्रिटिश शासित भारत में भारतीय आंदोलन के प्रमुख नेता थे। अहिंसक सविनय अवज्ञा को नियोजित करते हुए गाँधी जी ने भारत को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया और दुनिया भर में नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता के लिये जन आंदोलनों को प्रेरित किया।

भारत - मेरी नज़र से



अर्थव अभ्यंकर

बचपन से मैं अपने दादा दादी, नाना नानी और माता पिता से भारत की स्वतंत्रता एवं और स्वतंत्रता के पश्चात की कहानियाँ पढ़ते और सुनते आ रहा हूँ। जब १९४७ में ब्रिटिश राज्य खत्म हुआ और ब्रिटिश लूट कर और भारत का बटवारा कर वापस लौटे तो अगले करीब ५० साल भारत को संभलने में ही गुजर गए। उसके बाद पिछले करीब २५ सालों में भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाकर कई ऐसे कदम उठाए हैं जिससे भारत का आर्थिक, सामाजिक, तथा तकनीकी क्षेत्र में अद्भुत विकास हुआ है। छुटियों में भारत की यात्रा के दौरान मैंने यह देखा है कि भारत एक अत्यंत समृद्ध देश है। यहाँ लोगों को हजारों साल पहले की पीढ़ियों से प्राप्त वेदों का ज्ञान, आयुर्वेद का शास्त्र, तथा तन और मन को स्वस्थ रखने वाले योगाभ्यास की ऐसी अमूल्य देन मिली है जो आज पूरे विश्व में जानी जाती है। भारत के हर कोने में अलग-अलग भाषा, सभ्यता, संगीत, नृत्य, पहनावा, तथा भोजन का भण्डार है। विश्व के अनेक देशों में बसे हमारे जैसे प्रवासी भारतीय, भारत के विकास में और भारत की विश्व में पहचान बनाने में कई दशकों से अपना योगदान देते आ रहे हैं। इनमें सुंदर पिचाई, सत्या नडेला, कमला हैरस, और कई ऐसे नाम हैं जिन पर भारत को गर्व है। मुझे भी अमरीका की इस कर्मभूमि में रहकर अपनी मातृभूमि भारत की संस्कृति से जुड़े रहने में बहुत गर्व महसूस होता है।

दांडी यात्रा - स्वतंत्रता संग्राम की नींव



मेरा नाम सौजस कान्त है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एवॉन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ का छात्र हूँ।

गाँधी जी की दांडी यात्रा आंदोलन ने मुझे दिल से प्रभावित किया। अंग्रेजों के नमक उत्पादन पर एकाधिकार को खत्म करने के लिए महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा का आह्वान किया था। दांडी यात्रा १२ मार्च १९३० को प्रारम्भ हुई थी और ६ अप्रैल को यह यात्रा दांडी पहुंची थी। इसे नमक मार्च भी कहते हैं क्योंकि इसका प्रमुख कारण ब्रिटिश सरकार के नमक कर कानून का विरोध करना था। गाँधी जी अपने ७८ अनुयायियों के साथ साबरमती से दांडी का २४० मील लम्बा पैदल सफर तय किया। वहाँ उन्होंने समुद्र के पानी से नमक बनाकर अंग्रेजों

की नींव हिलाने की प्रतिज्ञा ली। यह घटना मेरे दिल को छू गई क्योंकि इस यात्रा में ६०,००० समर्थक स्वतंत्रता के उद्देश्य को समझते हुए जुड़े।

गाँधी जी की अनुमति से एक प्रतिज्ञा पत्र बनाया गया। इसमें जेल जाने और आंदोलन में कष्ट झेलने के लिए तैयार रहने की प्रतिज्ञा ली गई। दांडी यात्रा कठिन समय में त्याग का महत्व समझाता है। इस घटना में गाँधी जी के आत्मविश्वास भरे प्रण ने भारत की जनता को एक जुट किया। इस उत्साह से भारतीयों को स्वतंत्रता का सपना साकार होता दिखा। गाँधी जी के जेल जाने पर भी यह सत्याग्रह नहीं रुका और इसी के बाद देश भर में असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई। दांडी यात्रा हमें यह सिखाती है की एक अकेला व्यक्ति इस संसार में बड़ा परिवर्तन ला सकता है।



मेरा नाम हर्ष शिंदे है। मैं ग्यारह साल का हूँ। मैं चेरी हिल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे विडीओ गेम्ज़ खेलना और

कोडिंग करना पसंद है।

दांडी यात्रा भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख आंदोलन माना जाता है। यह आंदोलन सन १९३० में १२ मार्च से ६ अप्रैल के बीच में हुआ था। इस यात्रा का उद्देश्य ब्रिटिश शासन द्वारा नमक पर लगाए गए कर का विरोध करना था। इसलिए इसे नमक सत्याग्रह के नाम से भी जानते हैं। गांधी जी के नेतृत्व में यह पद-यात्रा कुछ स्वयंसेवकों के साथ

अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से शुरु हुई और लाखों लोगों के साथ दांडी में समाप्त हुई। यह आंदोलन मेरे लिए इसलिए विशेष है क्योंकि पहली बार इतने भारतीय लोगों ने एकत्रित रूप से ब्रिटिश शासन का विरोध किया था।



अहिंसा के प्रतीक - महात्मा गांधी



मेरा नाम प्रशम जैन है। मैं चेरी हिल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-3 का छात्र हूँ। मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे सॉकर खेलना बहुत पसंद है। मुझे संगणक पर काम

करना भी बहुत पसंद है। मुझे अलग-अलग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना पसंद है। मुझे जैन फ़िलासफी, हिंदू फ़िलासफी एवं ग्रीक मिथॉलजी पढ़ने में रुचि है। मेरा पसंदीदा विषय गणित है। इसके अलावा मुझे अलग-अलग स्वादिष्ट व्यंजन खाने का शौक है।

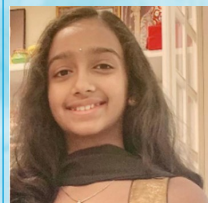
भारत की पराधीनता और स्वतंत्रता की कहानी यदि हम पिछले हजार वर्ष से शुरू करें, तो हम देखते हैं कि मुगलों और अंग्रेजों की पराधीनता के दौरान, समय पर अनेक देशभक्त, भारत देश के हित के लिए अपने प्राणों तक का नयौंछावर कर गए। भारत देश का समृद्ध इतिहास ऐसे ही महान वीरों से भरा पड़ा है।

ऐसे ही एक वीर, भारत माता के सच्चे सपूत, जिनके स्वतंत्रता के लिए किए गए अहिंसामयी प्रयासों ने मेरे

अंतर्मन को अत्यंत प्रभावित किया, वह हैं "महात्मा गांधी"। 1919 में दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के बाद गांधी जी ने भारत को

स्वच्छ बनाने, किसानों का जीवन स्तर सुधारने तथा अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए अनेक शांतिपूर्ण आंदोलन किए। गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा एवं शांतिपूर्ण विरोध को अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार के रूप में प्रयोग किया। लोग उनके इस अविश्वसनीय शस्त्र से प्रभावित होकर उन्हें "महात्मा" गांधी पुकारने लगे।

गांधी जी ने अपने अहिंसात्मक मंच से स्वदेशी आंदोलन चलाया और अंग्रेजों की बनाई हुई वस्तुओं एवं वस्त्रों का बहिष्कार कर भारतीयों द्वारा निर्मित खादी को प्रोत्साहन दिया। गांधी जी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" शुरू करके आज़ादी के संघर्ष को सर्वाधिक शक्तिशाली बना दिया। लस्वरूप, अंग्रेज न सिर्फ़ घबरा गए बल्कि 19 अगस्त 1947 को भारत छोड़कर इंग्लैंड वापस लौट गए।

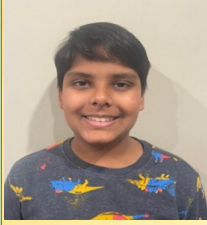


मेरा नाम अनन्या रेलिया है। मैं ग्यारह साल की हूँ। मैं छठी कक्षा में हूँ। मैं वूरहीस में रहती हूँ। मैं चेरी हिल हिंदी यू.एस.ए. स्कूल की मध्यमा-3 कक्षा में हूँ।

2 अक्टूबर को हम हर साल गांधी जयंती मनाते हैं। यह भारत में एक अहिंसा दिवस के रूप में मनाया

जाता है। हम महात्मा गांधी जी को राजपथ, दिल्ली में उनके स्मारक पर श्रद्धांजलि देते हैं। महात्मा गांधी जी ने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराया। गांधी जी ने जो किया उसके लिए उन्हें कभी जेल भी जाना पड़ा था। कई अन्य लोग गांधी जी से प्रेरित थे। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी जी के अहिंसक विरोध के बारे में सीखा और अफ्रीकी अमेरिकियों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड



मेरा नाम आरुष वर्मा है। मैं चेरी हिल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-3 का छात्र हूँ। मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे सॉकर खेलना बहुत पसंद है। मुझे संगणक पर काम

करना भी बहुत पसंद है। मैं वीडियो गेम्स भी खेलता हूँ। मुझे अलग-अलग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना पसंद है। मेरी मम्मी ने जब जलियाँवाला बाग के बारे में मुझे बताया तो मुझे बहुत दुख हुआ और यह घटना मेरे दिल को छू गयी। इसी के बारे में मैंने और खोज बीन की और लिखा।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के स्वतंत्रता इतिहास से जुड़ी हुई एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। यह घटना 13 अप्रैल 1919 को घटी थी। इस दिन बैसाखी का त्योहार भी था। उस दिन लगभग 20,000 लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठा हुए थे। वे रॉलेट कानून का विरोध करने के लिए शामिल हुए थे। 2 नेताओं की भी गिरफ्तारी में लोगो का विरोध जारी था। इन

नेताओं के नाम चौधरी बुगा मल और महाशा रतन चंद था। जब जनरल डायर को जलियाँवाला बाग में होने वाली सभा की सूचना मिली तो डायर करीब 8 बजे अपने दफ्तर से करीब 150 सिपाहियों के साथ इस बाग के लिए रवाना हो गया। डायर को लगा कि यह सभा दंगे फैलाने के उद्देश्य से की जा रही थी। इसलिए उसने इस बाग में पहुंचने के बाद लोगों को बिना कोई चेतावनी दिए अपने सिपाहियों को गोलियां चलाने के आदेश दे दिया। कहा जाता है कि इन सिपाहियों ने करीब 10 मिनट तक गोलियां चलाई थीं। वहीं गोलियों से बचने के लिए लोग भागने लगे। लेकिन इस बाग के मुख्य दरवाजे को भी सैनिकों द्वारा बंद कर दिया गया था और यह बाग चारों ओर से 10 फीट तक की दीवारों से बंद था। ऐसे में कई लोग अपनी जान बचाने के लिए इस बाग में बने एक कुएं में कूद गए। लेकिन गोलियां थमने का नाम नहीं ले रही थीं और कुछ समय में ही इस बाग की जमीन का रंग लाल हो गया था।



मेरा नाम इशान्नी जायसवाल है। मैं विल्टन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-3 की छात्रा हूँ और कक्षा सात में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है।

भारत वर्ष के स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक शहीदों ने अपने प्राण न्योछावर किए। इस आंदोलन में अंग्रेजों के विरुद्ध जो घटनाएँ घटित हुईं उसमें जलियाँवाला बाग हत्याकांड मेरे मन को छू गया। अंग्रेजों के काले कानून 'रोलेट ऐक्ट' के विरुद्ध शांतिपूर्वक प्रदर्शन

करने के लिए बैसाखी वाले दिन तेरह अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सभा रखी गयी थी जिसमें कुछ स्वतंत्रता संग्राम के नेता भाषण देने वाले थे। इसमें सैकड़ों लोग ऐसे भी थे जो बैसाखी के पर्व पर मेला देखने परिवार के साथ आए थे। जनरल डायर के आदेश से बेकसूर लोगों को गोलियों से भून दिया गया था। ये अंग्रेजी शासन का एक क्रूर हत्याकांड था जिसे याद कर मन दुख से भर जाता है और शहीदों को मन बार-बार नमन करता है।



नमस्ते, मेरा नाम अंश सोनी है। मैं दस साल का हूँ। मैं चेरी हिल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे बास्केटबॉल खेलना तथा किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। भारतीय इतिहास की जो घटना मेरे दिल को छू गई उस घटना का नाम "जलियाँवाला बाग हत्याकांड" है।

१३ अप्रैल, १९१९ को बैसाखी वाले दिन पंजाब में स्थित अमृतसर शहर के प्रसिद्ध जलियाँवाला बाग में एक हजार से ज्यादा लोगों की निर्दोष हत्या हुई और

बहुत से लोग घायल हुए। यह घटना मेरे दिल को सबसे ज्यादा छू गयी क्योंकि उस दिन सब लोग भारतीयों का महत्वपूर्ण त्यौहार "बैसाखी" मनाने के लिए बाग में जमा हुए थे। जनरल डायर के आदेशों पर लोगों पर गोलियां चलाई गईं और बहुत से मासूम लोगों की हत्या हुई। जनरल डायर लोगों को डराना चाहता था ताकि वे अपनी आजादी की लड़ाई को भूल जायें। कहा जाता है कि गोलियां लगातार चलतीं रहीं और मासूम लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। हर वर्ष १३ अप्रैल को जलियाँवाला बाग हत्याकांड दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज वहाँ पर इन शहीदों की याद में एक स्मारक भी बनाया गया है।



मेरा नाम रुद्र कस्बा है। मैं विल्टन हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे तलवारबाजी करना, ढोल बजाना, वीडियो गेम खेलना और खाना पकाने की कला में लिप्त होना पसंद है।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड वास्तव में मेरे दिल को छू गया। नरसंहार क्रूर था और मारे गए या घायल हुए लोगों की संख्या मन स्तब्ध कर देने वाली थी। न केवल कई लोगों ने अपने परिवारों को खो दिया, बल्कि बैसाखी त्यौहार पर जश्न मनाने के बजाय लोगों को शोक मनाना पड़ा था। यह हत्याकांड एक बंद बगीचे में हुआ जहाँ निर्दोष लोग लोहड़ी मना रहे थे और शांति से दो स्वतंत्रता सेनानियों की गिरफ्तारी का विरोध कर रहे थे। माना जाता है कि जनरल डायर ने बाग में प्रवेश किया, अपने सैनिकों को तैनात किया और उन्हें बिना किसी चेतावनी के गोलियां चलाने का आदेश दिया। लोग बाहर निकलने के लिए दौड़े लेकिन डायर ने अपने सैनिकों को गोली चलाने का निर्देश दिया। १०-१५ मिनट तक गोली चलती रही और गोला बारूद खत्म होने के बाद ही

फायरिंग बंद हुई।

अंग्रेजों के प्रति अपनी पिछली वफादारी को त्यागने के लिए कई भारतीय आगे आये और लोगों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आक्रामक बनने के लिए प्रेरित किया, जिसका सर्वश्रेष्ठ उद्धरण हैं सरदार उधम सिंह। कहा जाता है कि इस हत्याकांड के वे साक्षी थे और प्रेरित हो कर उन्होंने मुख्य अपराधी को मारने की प्रतिज्ञा कर ली। एक उपयुक्त क्षण के लिए उन्होंने धैर्यपूर्वक २१ वर्षों तक प्रतीक्षा की और जनरल माइकल डायर को गोली मार कर उन सैकड़ों परिवारों का बदला लिया जो कि इस दर्दनाक हादसे से प्रभावित थे। सरदार उधम सिंह जैसे लोगों के दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता से मैं चकित हूँ।

क्या आपको नहीं लगता कि हम अपनी आजादी को हल्के में लेते हैं क्योंकि ये घटनाएं इस बात की गंभीर याद दिलाती हैं कि हमारी आजादी के लिए वास्तव में हमने क्या खोया है। हम उन गुमनाम लोगों के कर्जदार हैं जिनकी कहानियाँ शायद हम कभी नहीं जान पाए।



भारतीय स्वतंत्रता संग्राम — महिलाओं का योगदान

सिद्धार्थ अग्रवाल, विल्टन पाठशाला, मध्यमा-3

स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई भारतीय महिलाओं के योगदान के बिना अधूरी है। कई भारतीय महिलाओं ने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में कार्य कर देश को आज़ादी दिलाई। उनके इस त्याग को भुलाया नहीं जा सकता।



कमला देवी

कमला देवी का स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान है। वे एक विचारक थीं। वो कमलादेवी ही थी जिन्होंने महात्मा गांधी से सत्याग्रह में औरतों को शामिल करने की मांग की थी। आज़ादी मिलने तक कमलादेवी कई बार जेल गयीं, कभी गाँधी के नाम का नारा लगाते हुए नमक बेचने के लिए तो कभी भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के लिए।



सरोजिनी नायडू

इतिहास के पन्नों में भारत को किला नाम से मशहूर सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं। इन्होंने समाज की कुरीतियों के खिलाफ महिलाओं को जागरूक किया और लगातार आज़ादी के आंदोलनों में भाग लेती रहीं। सरोजिनी का राजनीति के अलावा लेखन में भी गहरा रुझान था। इन्होंने अपने जीवन काल में महिलाओं के लिए संघर्ष करने के साथ कई मशहूर किताबें भी लिखीं। इन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में अपना कैसर-ए-हिंद सम्मान लौटा दिया था।



सावित्री बाई फुले

“अगर आप किसी लड़के को शिक्षित करते हैं तो आप अकेले एक व्यक्ति को शिक्षित कर रहे हैं, लेकिन अगर आप एक लड़की को शिक्षा देते हैं तो पूरे

परिवार को शिक्षित करते हैं।” यह वह विचार है जिसमें सावित्री बाई फुले विश्वास करती थीं। महिला उत्पीड़न और लड़कियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखने के चलन को देखते हुए फुले ने विरोध और अपमानित होने के बावजूद लड़कियों को आधारभूत शिक्षा देने का बीड़ा उठाया।



विजयलक्ष्मी पंडित

अपने भाई जवाहरलाल नेहरू की ही तरह विजयलक्ष्मी भी देश के लिए काफी भावुक थीं। बरसों तक देश की सेवा करने के बाद वे संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली की पहली महिला अध्यक्षा बनीं। लेखक, डिप्लोमैट, राजनेत्री के रूप में उनका हर काम युवा महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।



सुचेता कृपलानि

सुचेता कृपलानि भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल रहने वाली गांधीजी के करीबियों में से एक थीं। उस दौरान वे कई भारतीय महिलाओं के लिए रोल मॉडल रहीं और स्वतंत्रता संग्रह में हिस्सा लेने के लिए उन्हें प्रेरित करने में सफल रहीं। सुचेता एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञ थीं। ये उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं और भारत की पहली महिला मुख्य मंत्री थीं।

ये सभी भारत की वे वीरांगनाएं थीं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और नवभारत के निर्माण में अहम योगदान दिया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

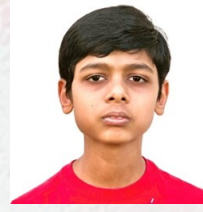
सेनानियों का योगदान



मेरा नाम प्रचेत पाधि है। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं चेरी हिल की मध्यमा-3 हिन्दी कक्षा का छात्र हूँ। मुझे किताबें पढ़ना, फुटबॉल और बास्केटबॉल खेलना अच्छा लगता है।

मैं ट्रंपेट और पियानो बजाना पसंद करता हूँ।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी आंदोलन एक ऐसी घटना है जो मेरे दिल को छू गई है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी आंदोलन का एक विशेष स्थान है। स्वदेश का अर्थ है अपने देश का। इस आंदोलन का प्रारम्भ 6 अगस्त, 1909 को कोलकाता के टाउन हॉल में हुआ था। ब्रिटिश भारत में चले इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अपने देश की वस्तुओं को अपनाना था और ब्रिटेन में बनी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। इसका उद्देश्य ब्रिटेन को आर्थिक हानि पहुँचाना था और भारत के लोगों के रोजगार में वृद्धि करना था। इस आंदोलन की वजह से कई अच्छे बदलाव आए। पहली बार बहुत सारे भारतीयों ने आंदोलन में हिस्सा लिया था, खास करके महिलाएँ जिन्होंने बड़ी संख्या में इस आंदोलन में अपना योगदान दिया था। इस आंदोलन के प्रभाव से लोकमान्य गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में गणपति उत्सवों की प्रथा शुरू की जो राष्ट्रीय एकता के लिए बहुत प्रभावशाली रहा। गांधीजी ने स्वदेशी को "स्वराज की आत्मा" बताया था।



मेरा नाम रेयांश गुप्ता है। मैं ग्यारह साल का हूँ। मुझे किताबें पढ़ने का और सॉकर खेलने का शौक है। मुझे रोबोटिक्स में भी काफी दिलचस्पी है। मेरा प्रिय

विषय विज्ञान है। मुझे इतिहास और भूगोल के बारे में जानना अच्छा लगता है। मुझे अपनी माँ की खाना पकाने में मदद करना भी अच्छा लगता है।

चंद्रशेखर आजाद

चंद्रशेखर आजाद का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान था। चंद्रशेखर आजाद ने मात्र चौदह वर्ष की उम्र में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन में भाग लिया और पकड़े जाने के बाद उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया था। जब चंद्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम स्वतंत्रता बताया था। इस घटना के बाद चंद्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चंद्रशेखर आजाद पड़ गया था। उन्हें पन्द्रह कोड़ों की सज़ा दी गई और उन्होंने हर कोड़े के वार पर भारत माता की जय का नारा लगाया था। इन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि दुश्मन के हाथों से नहीं मारा जाऊँगा। अंत में इस संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने स्वयं को गोली मारकर अपने प्राणों को मातृभूमि के लिये न्योछावर किया था। उनकी यह साहस और निडरता भरी घटना मेरे दिल को छू गई कि एक चौदह साल के बच्चे ने कितना साहस दिखाया था।



मेरा नाम सुदीप्ति रेड्डी है। मैं छठी कक्षा में हूँ। हिंदी स्कूल में मध्यमा-3 में पढ़ रही हूँ। डाइंग और पढ़ना मेरा शौक है। मुझे अपने दोस्तों से बात करना भी पसंद है।



मेरा नाम खुशी खुराना है। मैं ग्यारह साल की हूँ और छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चेरी हिल पाठशाला की मध्यमा-3 की छात्रा हूँ।

वीर महिला कित्तूर चन्नम्मा

कई लोगों ने प्रसिद्ध रानी लक्ष्मी बाई के बारे में सुना है, लेकिन बहुत कम लोगों ने एक और रानी के बारे में सुना है जिन्होंने उनसे पहले स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उनका नाम रानी कित्तूर चन्नम्मा है और वे कर्नाटक से थीं।

रानी कित्तूर चन्नम्मा अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करने वाली भारत की पहली महिला थीं। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई से भी पहले १८२४ में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्होंने डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स नियम के खिलाफ लड़ाई लड़ी। रानी चन्नम्मा का जन्म २३ अक्टूबर १७७८ को हुआ था। रानी चन्नम्मा ने राजा मल्लसरजा देसाई से विवाह किया और कित्तूर की रानी बन गईं। अपने बेटे और पति दोनों की मृत्यु के बाद वह कित्तूर की शासक बनी और शिवलिंगप्पा को अपना उत्तराधिकारी बना लिया।

अंग्रेज डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स शासन पर थोपना चाहते थे और कित्तूर पर अधिकार करना चाहते थे। रानी चन्नम्मा ने कित्तूर की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उसने अपनी पहली लड़ाई जीती लेकिन दूसरी हार गई। उसे बंदी बना लिया गया और २१ फरवरी १८२९ को जेल में उनकी मृत्यु हो गई। रानी चन्नम्मा की जीत और अंग्रेजों के खिलाफ वीरता को आज भी कित्तूर में कित्तूर उत्सव के रूप में मनाया जाता है। आप उनकी प्रतिमाएं बेंगलुरु, कित्तूर और भारतीय संसद परिसर, नई दिल्ली में देख सकते हैं। रानी चन्नम्मा ने कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में **भगत सिंह, सुखदेव थापर, और शिवराम राजगुरु** की कहानी मेरे दिल को छू गई। उन्होंने लाला लाजपत राय जी की मौत का बदला लेने के लिए अपनी जान दे दी।

लाला लाजपत राय एक देशभक्त, ब्रिटिश विरोधी, राष्ट्रवादी थे और एक सम्मानित स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे जिन्होंने भारत में कई देशभक्तों को प्रेरित किया। लाला लाजपत राय अखिल ब्रिटिश साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध मार्च कर रहे थे। पुलिस अधीक्षक जेम्स स्कॉट ने अपने सैनिकों को लाला जी को लाठी से मारने का आदेश दिया। घायल होने के कारण लाला जी का कुछ हफ्ते बाद निधन हो गया। भगत, शिवराम, और सुखदेव के मन में लाला लाजपत राय जी के लिए बहुत इज्जत और निष्ठा थी।

भगत सिंह और शिवराम राजगुरु ने बदला लेने के लिए अनजाने में गलत आदमी की हत्या कर दी। जेम्स स्कॉट के बजाय उन्होंने सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन सांडर्स की सत्रह दिसंबर उन्नीस सौ अट्ठाईस को हत्या कर दी। इस अधिनियम के कारण भगत सिंह, सुखदेव थापर, और शिवराम राजगुरु को तेईस मार्च, उन्नीस सौ इकतीस को फांसी दे दी गई। मौत के समय सिंह और थापर केवल तेईस वर्ष के और राजगुरु बाईस वर्ष के थे। ब्रिटिश शासन का हमारे देश पर भयानक प्रभाव रहा। कितने ही सेनानियों ने अपनी जान दे दी। भगत सिंह, सुखदेव थापर, और शिवराम राजगुरु जैसे कितने ही देश भक्तों ने अपनी जान देश पर न्योछावर कर दी।



मेरा नाम मिहिका वानरसे है। मैं १३ साल की हूँ और ७वीं कक्षा में हूँ। मैं कनेक्टिकट में रहती हूँ। मैं अभी मध्यमा-३ कक्षा में हूँ।

सैनिक विद्रोह

ऐसी कई घटनाएं थीं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता में मदद की। सैनिक विद्रोह उनमें से एक थी। सिपाही विद्रोह तब हुआ जब बंगाल की सेना में भारतीय सैनिकों को पता चला कि गोलियों पर (जिसे उन्हें काटना था), सूअर और गाय के मांस की चर्बी थी। इससे बगावत हो गई।

१८२० में भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत हुई थी। उन्होंने हिंदुओं पर नियंत्रण रखने के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल किया। हिंदुओं को पश्चिमी विचार सिखाए जा रहे थे और मिशनरी भारतीयों के विचारों को बदलने की कोशिश कर रहे थे। पुराने भारतीय राजघरानों को ब्रिटिश अधिकारियों से बदला जा रहा था।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में सेवा करने वाले भारतीयों को "सिपोय" कहा जाता था (यही वजह है कि इसे सिपोय विद्रोह भी कहा जाता था।) एनफील्ड राइफल की शुरुआत के कारण सिपाही विद्रोह शुरू हुआ। इसे भरने के लिए सिपाहियों को कारतूसों के सिरों को काटना पड़ा, लेकिन एक कहानी फैल गई कि कारतूसों को ढंकने के लिए सूअर और गाय की चर्बी के मिश्रण उपयोग किया गया था। इससे सभी भारतीयों को बुरा लगा।

उनका गुस्सा तब तक बढ़ता गया जब तक १८५७ में एक सिपाही ने ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला कर दिया। उस वर्ष के बाद में मेरठ में सिपाहियों ने

एनफील्ड कारतूसों के प्रयोग से इनकार कर दिया और सजा के रूप में उन्हें जेल में डाल दिया गया, जिससे उनके दोस्त नाराज हो गए। उसी वर्ष मई में उन्होंने अपने ब्रिटिश अधिकारियों को गोली मार दी। फिर वे दिल्ली की ओर गये और उस पर अधिकार कर लिया। विद्रोह को रोकने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को भेजा गया। वे १८५७ से १८५८ तक लड़े और १८५९ में अंग्रेजों की जीत हुई।

इसके बाद भारतीय लोगों को एहसास हुआ कि उन्हें अंग्रेजों के सामने खड़ा होना होगा और अपने देश को वापस लेना होगा। यह भारतीय क्रांति की शुरुआत थी।



मेरा नाम निधि बांगड़ है। मैं ११ साल की हूँ और मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ। मेरी रुचि गणित, चित्रकला, और हिन्दी भाषा है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. का धन्यवाद करती हूँ जिसके कारण मैं हिन्दी सीख रही हूँ।

सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू एक बहुत वीर स्वतंत्रता सेनानी थीं। वे कांग्रेस का हिस्सा बनने वाली पहली भारतीय महिला थीं। वे दो आंदोलनों से जुड़ी हुई थीं। पहला, भारत का कांग्रेस आंदोलन और दूसरा, महात्मा गांधी जी का असहयोग आंदोलन, जिससे अंग्रेजों से भारत को आजादी मिली। भले ही ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के कारण सरोजिनी नायडू को कई बार सज़ा मिली, पर वे भारत के कांग्रेस आंदोलन और असहयोग आंदोलन से जुड़ी रहीं। मुझे उनकी बहादुरी पर बहुत गर्व है। मैं उनसे बहुत प्रभावित और प्रेरित हूँ कि वे भारत की स्वतंत्रता सेनानी थीं।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का स्वतंत्र भारत का सपना

अनिष्का जिंदाल

मध्यमा-3

स्वतंत्रता सेनानी कौन हैं? और हम सभी को उनके प्रति आभारी क्यों होना चाहिए?



नमस्ते! मेरा नाम अनिष्का जिंदाल है। मैं मध्यमा-3 में पढ़ती हूँ। इस साल मैं जिस विषय पर प्रकाश डालना चाहती हूँ वह है 'हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का

स्वतंत्र भारत का सपना'। मैं हमेशा भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से प्रभावित रही हूँ, जिन्होंने अपने स्वयं के जीवन के बारे में सोचे बिना अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी। इस विषय के द्वारा मुझे उनके योगदानों के बारे में पढ़ने और अनुसंधान करने का मौका मिला।

यूँ तो स्वतंत्रता सेनानियों की बड़ी सूची है, लेकिन एक स्वतंत्रता सेनानी जिनके जीवन से मैं प्रभावित हुई हूँ, वे हैं **महात्मा गांधी**।

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, भारत में हुआ था। लोग महात्मा गांधी को महात्मा इसलिए कहते थे क्योंकि उन्होंने हिंसा के रास्ते को अपनाए बिना अंग्रेजों से भारत को स्वतंत्रता दिलाने में लोगों की मदद की। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी प्रमुख भूमिका के कारण उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में भी जाना जाता है। लेकिन अपने देश के लिए लड़ने की यह भावना उनके अंदर कैसे पैदा हुई, यह एक दिलचस्प कहानी है। महात्मा गांधी 23 वर्ष के थे जब उन्हें अपनी वकालत के काम से दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। एक बार काम के सिलसिले से रेल में यात्रा करते हुए वे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में

बैठ गये जो सिर्फ अंग्रेजों के लिए आरक्षित था। उनके भारतीय होने के कारण उस श्रेणी से उन्हें धक्के मारकर ट्रेन के बाहर फेंक दिया गया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपने कार्यकाल के दौरान अपनी त्वचा के रंग, अपनी विरासत के कारण बहुत जातिवाद और भेदभाव का सामना किया। इसी भेदभाव के चलते उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि वे अपने भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनायेंगे। उन्होंने इसी निश्चय से बहुत सारे विरोध प्रदर्शन भी किए, कई बार जेल भी गए, लेकिन इससे उनके भारत को स्वतंत्र देश बनाने की और अन्याय के खिलाफ लड़ने की कोशिश में कोई भी नहीं रोक पाया।

महात्मा गांधी भारत के अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ थे और भारतीय नागरिकों को अधिकार दिलवाना चाहते थे।

महात्मा गांधी बहुत ही होशियार और बुद्धिमान सेनानी थे। उनकी होशियारी के कारण ही पुलिस बहुत देर तक उन्हें जेल में नहीं रख पाती थी। महात्मा गांधी जेल में अपना भोजन नहीं खाते थे और पुलिस को ये डर था कि वे खाना नहीं खाएँगे तो उनके जीवन को हानि हो सकती है, इसलिए वह उन्हें जेल से बाहर निकाल देती थी।

भारत की स्वतंत्रता के लिए उनका एक महत्वपूर्ण योगदान नमक पर लगाए जाने वाले कर के लिए लड़ना भी था। जब अंग्रेजों ने नमक पर कर बढ़ाया तो महात्मा गांधी ने हिंद महासागर तक 241 मील की दूरी तय कर नमक की कटाई खुद की ताकि भारत के लोग इस कर से मुक्त नमक का उपभोग कर सकें। इस आंदोलन को दांडी यात्रा कहा जाता है, और यह

२४ दिवसीय यात्रा थी। इसे नमक सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। यह अंग्रेजों के खिलाफ और स्वतंत्रता संग्राम के लिए बड़ा कदम था। दुर्भाग्य से गांधी जी की हत्या नाथूराम विनायक गोडसे ने ३० जनवरी, १९४८ को बिरला हाउस में कर दी, जो मध्य नई दिल्ली में एक बड़ी हवेली थी। भारत के लिए गांधी जी का सपना देश में स्वराज्य लाना था। गांधी जी भारत में प्रचलित अस्पृश्यता और बाल विवाह की

प्रथा को दूर करना चाहते थे। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से सार्वभौमिक भाईचारे, मानवता की सेवा, सरल जीवन और सत्य और अहिंसा के मूल्यों की गहरी प्रतिबद्धता का प्रचार किया। गांधीजी का दर्शन प्रकृतिवाद, आदर्शवाद और व्यावहारिकता का एक समन्वय है। यदि हम सभी उनके जीवन के सिद्धांतों के अनुसार अपना जीवन बिताते हैं तो हमारा जीवन और यह दुनिया रहने के लिए महान जगह होगी।

श्री विनायक दामोदर सावरकर



सरगम गोडबोले

२८ मई १८८३ में नाशिक के भगूर गाँव में जन्मे स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर एक वीर देशभक्त, समाज सुधारक, विज्ञाननिष्ठ, बुद्धिवादी, नाटककार, महाकवि, कादंबरीकार, इतिहासकार, नेता और तत्त्वज्ञ थे।

सच्चे रूप से सावरकर सर्वस्पर्शी विचार करने वाले राष्ट्रशिल्पकार थे। उनके विचार हमेशा के लिए हम सब के लिए प्रेरणादायी और मार्गदर्शक रहेंगे। उनके पिताजी दामोदरपंत एक विद्वान धार्मिक सद्गृहस्थ और प्रतिभासंपन्न कवि भी थे। इस कारण उनके घर बहुत से लोग आते जाते रहते थे। राष्ट्रप्रेम की भावना और स्वतन्त्रता के प्रति उनके विचार बचपन से ही उनके मन में बस गए थे। उनकी माताजी उन्हें बचपन से ही ग्रन्थ और शास्त्रों के बारे में तथा विविध विषयों पर काव्य सिखाती थीं। दस साल की उम्र में ही पुणे के प्रसिद्ध पत्रक 'जगद्धितेच्छु' में उनकी रची कविताएँ प्रसिद्ध होने लगीं। १८९७ के आंदोलन में पुणे में बहुत सारी घटनाएँ घटीं। प्रतिदिन एक अद्भुत वार्ता सुनाई देती थी। इस कारण किशोर अवस्था के विनायक के मन में राष्ट्रोत्थार का सपना जाग उठा। फर्गुसन कॉलेज में उन्होंने ऐसे विद्यार्थी जो ऐश, आराम, पार्टी जैसी चीजों के आधीन थे, उन्हें देश भक्ति कविता, वक्तव्य जैसे सद्उद्गारों की तरफ

खींचा। सावरकर जी की स्वतन्त्र भारत की परिभाषा से सारी युवा पीढ़ी प्रभावित हो चुकी थी। सावरकर के इंग्लैंड पहुंचते ही वहाँ के हिन्दी समुदाय में एक स्फूर्ति निर्माण हो चुकी थी। रूस, आयरलैंड, इजिप्ट जैसे देश में रहने वाले देश भक्तों की लन्दन में आने के बाद गुप्त भेट और परिचय होता था। इंग्लैंड के चार वर्ष के निवास में उन्होंने दिन रात मातृभूमि के उद्धार के लिए साहस से अथक प्रयत्न किये। उनके बैरिस्टर बनने में कुछ ही समय था जब उन्हें कालापानी की पचास सालों की सज़ा सुनाई गई जो अति भयंकर थी। उन्हें राजद्रोही घोषित कर दिया था। उनके जेल से छूटने के दिन तक वे अन्य कैदियों को पढ़ाते थे। वहाँ के जेलर भी बताते थे कि सावरकर जी की प्रेरणा और श्रम से बहुत सारे बंदीजन शिक्षित हो गए थे और उनके विचारों में सकारात्मक भाव प्रकट हुए थे। सावरकर जी का अस्पृश्यता हटाने में बहुत बड़ा योगदान है। विनायक दामोदर जी का भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत ही बड़ा योगदान है जिसके लिए हम सदा उनके ऋणी रहेंगे। सावरकर जी एक बहुत ही उच्च कोटी के स्वतंत्रता कवि थे और उनके काव्यों के अजरामर गीतों का स्वरूप आया है। आप इस QR Code को scan कर के इन गीतों का आनंद ले सकते है।



विल्टन हिंदी पाठशाला

मध्यमा-२



मेरा नाम गरिमा अग्रवाल हूँ। मैं मध्यमा-२ की स्तर संचालिका के साथ-साथ विल्टन कनेक्टिकट पाठशाला में पिछले १२ वर्षों से अध्यापिका भी हूँ। मेरे पति व दोनों बच्चे भी हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। बच्चों को पढ़ाने के अलावा मुझे नए-नए व्यंजन बनाना व किताबें पढ़ने का बहुत शौक है।



अगस्त १९३० में ऑपरेशन फ्रीडम समूह ने, जिसमें ये तीन स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया, बंगाल के पुलिस इंस्पेक्टर जनरल लोमन को मारने की योजना बनाई। बेनॉय ने जनरल लोमन को ढाका मेडिकल अस्पताल में मारा। उसके बाद तीनों ने राइटर्स बिल्डिंग में और अंग्रेजी अफसरों को मारा। उसके बाद लड़ाई में बादल और बेनॉय मारे गए। दिनेश को मौत की सजा दी गई। बेनॉय कृष्ण बासु, सर सलीमुला मेडिकल कॉलेज के छात्र थे। वे हेमचन्द्र घोष की बात मानकर क्रांतिकारी संगठन, "मुक्ति संग" में भरती हो गए।

सिद्धांत रामाकृष्णन

दिनेश गुप्ता ढाका कॉलेज के छात्र थे। वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस के "बंगाल वालन्टीर्स" में भरती हो गए। बादल गुप्ता दिनेश से एक साल छोटे थे। बादल ने बनारिपारा पाठशाला के अध्यापक, निकुंजय सेन, की बात मानकर "बंगाल वालन्टीर्स" में भरती हो गए। इन तीनों का यह विश्वास था की भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों से लड़ाई करना आवश्यक है।



रिचा रावन

रानी लक्ष्मी बाई का जन्म १९ नवंबर १८२८ को वाराणसी के पास हुआ। रानी लक्ष्मी बाई भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में लड़ी थीं। रानी लक्ष्मी बाई ने १४००० सिपाहियों को इकट्ठा करा और झांसी की रक्षा के लिये एक सेना तैयार करी। १८५७ में वे बहुत बहादुरी से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ीं।



वीर गुलिया

आज़ादी की लड़ाई के अनगिनत अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों में से एक है अनंत लाल। वे रोहतक जिले हरियाणा के रहने वाले थे। इन्हें सेलुलर जेल, अंडमान में कैद करके रखा गया था। रिहा होने की बाद ये इंडियन इंडिपेंडंस लीग के सदस्य बने। जापानियों के अंडमान पर कब्जा करने के बाद इन पर जासूसी का इलज़ाम लगा और ३० जनवरी १९४० में जापानी सैनिकों ने इनकी गोली मारकर हत्या कर दी। इनके समर्पण को शत-शत प्रणाम।



रिया पेंडसे

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के कई गुमनाम सेनानियों में से एक थे मेरे परनानाजी श्री. सदानंद वर्ती। अठारह साल की उम्र में कॉलेज की पढाई करते वक़्त उन्होंने १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था। इस वजह से उन्हें अंग्रेज़ सरकार ने जेल कराई थी। जेल के कठिन कारावास के बावजूद मेरे परनानाजी ने हार नहीं मानी और वे आजादी की लड़ाई का हिस्सा बने रहे।



तनिश नाहटा

राम प्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी थे। वे मैनपुरी षडयंत्र और काकोरी कांड में भी शामिल थे। उनका जनम १८९७ में हुआ था और वे १९२७ में ३० की उम्र में शहीद हुए। बिस्मिल आठवीं तक ही पढ़े थे। वे एक अच्छे कवि, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे। उन्होंने अपने कारावास के समय २ दिन में ही अपनी आत्मकथा लिखी, क्योंकि वे चाहते थे की हर घर में क्रांति की मशाल जले, गुलामी का अँधेरा हटे और आजादी का सूरज चमके। बिस्मिल की फाँसी के समय उनका बोला गया नारा "सरफरोशी की तमन्ना", बाद में बाकी क्रांतिकारियों का मंत्र बन गया था।



सेजल गुप्ता

भगत सिंह का जन्म २७ सितंबर १९०७ को पश्चिमी पंजाब के लायलपुर में हुआ था। १९२९ में उन्होंने और उनके सहयोगी ने भारत की रक्षा अधिनियम के कार्यान्वयन का विरोध करने के लिए दिल्ली में केंद्रीय विधान सभा में बम फेंका और फिर आत्मसमर्पण कर दिया। भगत सिंह को २३ मार्च, १९३१ को पश्चिमी पंजाब के लाहौर में फाँसी पर लटका दिया गया था। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से माफी मांगने से इनकार कर दिया, जो उनको मृत्युदंड से बचा सकता था। बल्कि उन्होंने ब्रिटिश सरकार से कहा कि उन्हें फाँसी देने के बजाय गोली मार दें क्योंकि उनका दृष्टिकोण यह था कि वे एक स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्हें अन्य अपराधियों की तरह फाँसी की बजाय गोली मार दी जानी चाहिए।



आर्यन शर्मा

क्या आपने लक्ष्मी सहगल के बारे में सुना है वह कई गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में मदद की। उन्होंने आई.एन.ए. में एक महिला रेजिमेंट बनाई। भारत को आजादी मिलने के बाद उसने कई शरणार्थियों की मदद करने वाले बांग्लादेशी शरणार्थी शिविरों को चिकित्सा आपूर्ति दी। २०१२ में लक्ष्मी सहगल की मृत्यु हो गई, लेकिन उनके और कई अन्य भारतीयों के निस्वार्थ कार्यों ने भारत को आज बनाया, भले ही वे सभी इसके लिए याद नहीं किए गए हों।

“किसी भी क्षण मैं मातृभूमि की खातिर अपने प्राण न्योछावर करने से पीछे नहीं हटूंगा।”

- चन्द्र शेखर आजाद

भारत - एक महान देश

अध्यापिकाएँ: तोरल मुंद्रा, रिचा सिंह

स्टैमफोर्ड पाठशाला, मध्यमा-२



अमृतमयी पाना

मुझे अपने देश भारत पर गर्व है क्योंकि इतनी अलग-अलग भाषाओं, भोजन, संस्कृति और वेशभूषा के बावजूद भारत एक है। आप भारत के हर राज्य में विविध मौसम, भाषा, परंपराएं पा सकते हैं। भारत में कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक हैं जैसे ताज महल जो दुनिया के सात अजूबों में से एक है। भारत में कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक घूमने के लिए बहुत सारी खूबसूरत जगह हैं।



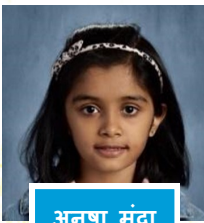
अद्वितिया माहेश्वरी

मेरा नाम अद्वितिया माहेश्वरी है। मैं विल्टन कनेक्टिकट में रहती हूँ। मैं कक्षा चार की विद्यार्थी हूँ। मेरी दृष्टि में भारत महान है क्योंकि यह विश्व में एक अकेला ऐसा देश है जहाँ अनेकता में एकता है। आज विश्व में योग और आयुर्वेद बहुत प्रसिद्ध है, जो विश्व को भारत की देन है। विश्व को शून्य भी भारत से प्राप्त हुआ है। विश्व का आठवां अजूबा ताजमहल भी भारत की धरती पर विराजमान है। आज विश्व में कई कंपनियाँ भारतीय मूल के प्रबंधकों द्वारा चलायी जा रही है। मेरा भारत महान!!!



वायून बंसल

भारतीय मौजूदा कॉरपोरेट जगत में कई शीर्ष कंपनियों का नेतृत्व कर रहे हैं। भारतीय अनेकता में एकता में विश्वास करते हैं। भारत में प्रत्येक राज्य एक अलग भाषा बोली जाती है और फिर भी हम एकजुट हैं और एक साथ खुशी से रहते हैं। आयुर्वेद का जन्म भारत में हुआ। भारतीयों ने शून्य का आविष्कार किया जिसके बिना गणित का अस्तित्व नहीं होता। भारतीयों ने दुनिया को "योग" दिया। भारतीय हर चीज को भगवान मानते हैं, पानी को गंगा माँ, अन्नपूर्णा के रूप में भोजन, लक्ष्मी के रूप में धन, सरस्वती के रूप में शिक्षा और अपने देश को अपनी माँ मानते हैं। भारत अपनी युवा जनसंख्या के कारण विश्व का सबसे युवा राष्ट्र माना जाता है।



अनुषा मुंद्रा

भारत एक महान देश है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत में शून्य, शतरंज, योग, सांप-सीढ़ी, और आयुर्वेद का आविष्कार हुआ है। भारत में २२ आधिकारिक भाषाएं हैं। भारत का ताजमहल, विश्व के सात अजूबों में से एक है। भारत पहला एशियाई देश है जो मंगल ग्रह पर उपग्रह भेजने में सफल हुआ है। भारत को स्वतंत्र हुए ७५ साल होने वाले हैं परन्तु क्या आप जानते हैं हमें आज़ादी दिलाने में कितने लोगो ने बलिदान दिया है भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान गवां दी थी। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने भारत को आज़ाद करने के लिए अपना योगदान दिया है।



वेदान्ग पालीवाल

मुझे लगता है कि भारत महान इसलिए है क्योंकि यह वह जगह है जहाँ कई महान हस्तियों ने जन्म लिया है। भारतीय बहुत परोपकारी होते हैं। भारत मेरी मातृभूमि है इसलिए मैं इसका सम्मान करता हूँ। भारतीय सिपाही बहुत बहादुर होते हैं। भारत ने कई देशों के साथ युद्ध लड़े और जीते हैं।



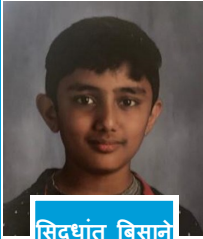
अक्षरा पुल्लखंडम

भारत को आजाद हुए करीब ७५ साल हो चुके हैं। बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानी हैं, जैसे। गांधी, रुद्रमा देवी, भगत सिंह आदि। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाली महिलाओं में से एक थीं। जब वह अंग्रेजों के साथ युद्ध करने गई, और क्योंकि उसके बच्चे की देखभाल करने वाला कोई नहीं था, इसलिए वह अपनी पीठ पर अपने बच्चे को साथ युद्ध में ले गई। अब मैं इस बारे में बात करने जा रही हूँ कि मुझे क्यों लगता है कि भारत महान है। सभी देशों की तरह भारत ने भी अपनी आजादी के लिए लड़ाई लड़ी लेकिन एक अलग तरीके से। भारत पुरानी परंपराओं का पालन करता है। भारत के पास बहुत खजाना है, जैसे सोना, ज्ञान, वेद, कोयला आदि। मेरा भारत महान।



ऐशानी दिबोलिया

भारत महान क्यों है क्या आप जानते हैं भारत में कुल कितनी भाषा बोली जाती है साल २०११ की जनगणना के दौरान पता चला कि भारत में १२१ भाषाएँ ऐसी हैं जो १०,००० ज्यादा लोग बोलते हैं। लेकिन भारतीय संविधान के अनुसार केवल २२ भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। भारत में सभी धर्मों को माना जाता है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र देश माना जाता है।



सिद्धांत बिसाने

भारत में बहुत सारे गणितज्ञ और प्रोग्रामर हैं। उदाहरण के लिए गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, ट्विटर, एडोबी, मास्टर कार्ड के सी.ई.ओ सभी भारतीय हैं। दुनिया भर में १३.५ मिलियन प्रोग्रामर में से लगभग ५.८ मिलियन प्रोग्रामर भारतीय हैं, यह दुनिया के आधे से अधिक प्रोग्रामर हैं। नंबर सिस्टम और जीरो सभी का आविष्कार भारत में हुआ था। भारतीयों ने कंप्यूटर, स्मार्टफोन और टैबलेट जैसी चीजों का आविष्कार यूरोपीय लोगों से पांच सौ साल पहले किया था। अंक प्रणाली का आविष्कार यूरोप में अपनाएने से १४०० साल पहले ही भारत में हो चुका था। साथ ही शतरंज का आविष्कार भी इसी देश में हुआ था। गुप्त साम्राज्य में, शतरंज का एक प्रारंभिक रूप जिसे छतरंगा कहा जाता है, का आविष्कार छठी शताब्दी में किया गया था। नाम की प्राचीन भारतीय सेना डिवीजनों को संदर्भित करती है - इन्फैंट्री (पाँन), कैवेलरी (नाइट), हाथी (बिशप) और रथ (रुक)।



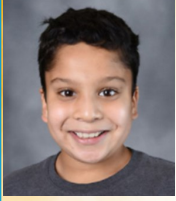
रोमिर उप्पल

भारत एक खूबसूरत देश है। इसमें विशाल पहाड़, नदियाँ, रेगिस्तान और समुद्र तट हैं। भारत के लोग बुद्धिमान, दयालु और अच्छे हैं। इसका एक समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास भी है, जो बहुत ही अनोखा है। भारत वह जगह है जहाँ शून्य के आविष्कार के साथ गणित का जन्म हुआ था। इसलिए मेरे विचार से भारत एक महान देश है।

मेरी दृष्टि में भारत महान क्यों?

अध्यापिकाएँ: अल्पना भरथुआर व सीमा वशिष्ठ

प्लेंसबोरो पाठशाला, मध्यमा-२



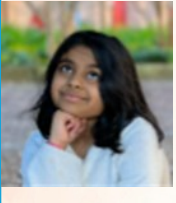
आर्ष धारिया

भारत में विभिन्न संस्कृति, धर्म और जाति के लोग हैं, फिर भी आपस में प्रेम-भाव और भाईचारा है। भारत की प्रमुख भाषा हिंदी, इस देश की पहचान है।



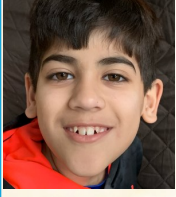
पवक पटेल

भारत महान है, क्योंकि हमारे देश के वीर सैनिक हमारी रक्षा करते हैं। भारत में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत में बहुत सारे प्राचीन मंदिर और इमारतें हैं। भारत की कला और संस्कृति ५००० साल पुरानी है।



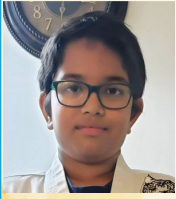
अमृता प्रभु

भारत दूसरी सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत अपनी फिल्मों के लिए जाना जाता है। वहाँ अलग-अलग धर्म और जाति के लोग रहते हैं। भारत के व्यंजन दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।



रौनव वधावन

मेरी दृष्टि में भारत महान इसलिए है क्योंकि भारत में गणित के बहुत से सिद्धांतों का आविष्कार हुआ था। भारत में अनेक जातियाँ हैं पर फिर भी लोग मिलकर रहते हैं।



शौर्य बिद

भारत पहली से १९वीं शताब्दी तक दुनिया की बड़ी अर्थ व्यवस्थाओं में से था। भारत आधुनिक युग में एक आर्थिक महाशक्ति है। भारत दुनिया के बड़े शेयर बाज़ार, विदेशी मुद्रा भंडार, कपड़ा, कृषि, निर्माण क्षेत्र, परिवहन, शिक्षा, दूरसंचार और खनिज सम्पदों में से एक है।



व्रजना पारेख

मेरा भारत महान है! मेरे भारत में महात्मा गांधी जी, स्वामी विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस और झाँसी की रानी के जैसे महान लोगों का जन्म हुआ था। हमारे भारत में ही दुनिया की सबसे पहली विश्वविद्यालय बनी थी! योग तथा आयुर्वेद भी हमारे भारत से ही आया है।

समाईरा वधावन

भारत एक बहुत ही विशाल भू-भाग और जनसंख्या वाला देश है। भारत में अनेक धर्म और संस्कृतियाँ एक साथ मिल कर रहती हैं। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

अद्विका प्रभु

भारत देश महान है क्योंकि वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत की आबादी १.३ अरब है और वह इसलिए दूसरे स्थान पर है। इसके अलावा भारत अपने अच्छे भोजन जैसे चाट, समोसे और पालक पनीर के लिए जाना जाता है। अपनी संस्कृति और त्योहारों के लिए भी भारत महान है।

वीजय रॉय

मेरी दृष्टि में भारत महान है क्योंकि यहाँ पर सब लोग मिल-जुल कर रहते हैं। मेरे भारत ने हर धर्म, भाषा और संस्कृति को अपनाया है। हमारे देश का राष्ट्रीय त्योहार स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस है।

केया अम्बश्ट

मुझे लगता है कि भारत एक अच्छी जगह है क्योंकि वहाँ कई प्रकार के व्यंजन खाने को मिलते हैं। वहाँ के कपड़े और फैशन भी बहुत सुंदर होते हैं।

श्रिया भट

भारत दुनिया की सबसे बड़ी जनतंत्र है। भारत देश ने दुनिया को योग व्यायाम की भेंट दी है। शतरंज खेल भी भारत की देन है। भारत में कई प्रसिद्ध इमारतें हैं, जैसे ताज महल।

अनन्या सराओगी

भारत कई कारणों से महान है लेकिन कुछ विशेष कारण हैं जिन से मुझे लगता है कि भारत एक अद्भुत राष्ट्र है। यह दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में, भारत में कई अलग-अलग धर्म शांति से मौजूद हैं। योग का आविष्कार भारत में हुआ था। साथ ही, भारत के कई प्रतिभाशाली लोग दुनिया की कुछ महान कंपनियों का नेतृत्व कर रहे हैं। भारत के बारे में सबसे अच्छी बात- रंगीन त्योहार और स्वादिष्ट भोजन!

कृष सिन्हा

मेरी दृष्टि में मेरा भारत महान है क्योंकि यह एक कृषि प्रधान देश है। हमारी आबादी का सत्तर प्रतिशत कृषि पर निर्भर करता है। हमारी राष्ट्रीय आय का एक तिहाई कृषि से आता है।

चैरी हिल पाठशाला - मध्यमा-२



मेरा नाम डॉ. दीप्ति रायबागकर-मलिक है। मैं और मेरे सह शिक्षक पीयूष नाथानि जी मध्यमा-२ के शिक्षक हैं। मध्यमा-२ के छात्र-छात्राओं ने इस वर्ष कुछ गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जाना।



लाला हरदयाल

दिल्ली निवासी लाला हरदयाल बचपन से ही बहुत तेज दिमाग वाले होनहार छात्र थे। अंग्रेजी सरकार ने उनकी प्रतिभा देख उन्हें छात्रवृत्ति देकर आक्सफर्ड पढ़ने के लिये भेज दिया। लंदन में वे इंडिया हाउस में भाग लेते रहे। उनके प्रचार से भारत में व्यापारियों ने स्वदेशी चीजों को अपनाया और विदेशों को सामान बेचना बंद किया। लाला जी ने अमेरिका में बसे सभी भारतीयों को इकट्ठा कर गदर पार्टी भी बनाई।

-अर्णव सेठी

संगुल्लि रायन्ना

संगुल्लि रायन्ना कर्नाटक के कित्तूर रियासत में एक भारतीय सैन्य शेटसनदी योद्धा थे। उस समय रानी चेन्नम्मा द्वारा शासित कित्तूर राज्य के तहत उन्होंने अपनी मृत्यु तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। उन्हें ३४ साल की उम्र में कर्नाटक के बेलगाम के नंदगढ़ में फांसी पर लटका दिया गया था।

-ध्रुवा खगाती

उधम सिंह

उधम सिंह: भारत का वह शेर जिनकी गोलियों ने लिया जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला। सरदार उधम सिंह का जन्म २० दिसंबर, १८९९ में पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम गांव में हुआ था। उधम सिंह का असली नाम शेर सिंह था। उधम सिंह १९१९ में हुए जलियांवाला बाग नरसंहार के साक्षी थे। इस नरसंहार को देखने के बाद उधम सिंह ने स्वतंत्रता की लड़ाई में कूदने और 'रेजिनाल्ड डायर' और 'माइकल ओडायर' से बदला लेने की प्रतिज्ञा ली थी। सरदार उधम सिंह ने भारतीय समाज की एकता के लिए अपना नाम बदलकर 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' रख लिया था, जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है

-द्विज गिरधर

वीर चन्द्र सिंह गवाली

(२५ दिसम्बर, १८९१ - १ अक्टूबर १९७९)

२३ अप्रैल, १९३० को हवलदार मेजर चन्द्र सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में रॉयल गढ़वाल राइफल्स के जवानों ने भारत की आजादी के लिये पेशावर में लड़ने वाले निहत्थे पठानों पर गोली चलाने से मना कर दिया था। एकाएक अंग्रेज भी हक्के-बक्के रह गये। लंबी सजा के बाद ८ अगस्त १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने महात्मा गांधी के साथ सक्रिय भागीदारी निभाई। १९९४ में भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया गया, तथा कई सड़कों और संस्थानों के नाम भी इनके नाम पर रखे गये।

-प्रतीक्षा नैथानी

माणिक्य लाल वर्मा

माणिक्य लाल वर्मा राजस्थान के मुख्य मंत्री थे। उनकी बिजौलिय आंदोलन में प्रमुख भूमिका थी। उन्होंने इंगरपुर में समाज सुधार का बड़ा काम किया।

-पुर्वी अग्रवाल

तात्या टोपे

अठारह सौ सत्तावन को भारत में विद्रोह हुआ था। उस समय तात्या टोपे भारत के सेनापति थे। जब झांसी की रानी लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से लड़ रहीं थी तब तात्या टोपे ने उनकी मदद की थी। तात्या टोपे भारत के श्रेष्ठ और प्रभावी सेनापति माने जाते हैं। उन्हें अठारह सौ उनसठ में अंग्रेजों द्वारा मार डाला गया था।

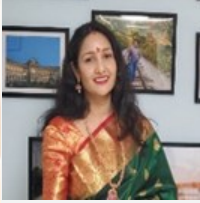
-रिया कलिकिरी

बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा ने मिलेनेरियन आंदोलन की शुरुआत की। इस आंदोलन में उन्होंने १९ वीं शताब्दी के अंत में आधुनिक बिहार और झारखंड के आदिवासी बेल्ट को ब्रिटिश राज के विरुद्ध जाने के लिए प्रेरित या। २५ साल की छोटी उम्र में उनका निधन हो गया। -रोहन सिंह



साउथ ब्रुनस्विक पाठशाला - मध्यमा-२



मैं ऋचा खरे मध्यमा-२ की शिक्षिका हूँ और मेरी सहशिक्षिका वंदना हिरनी जी हैं। मैं ११ वर्षों से अधिक समय से "हिन्दी यू.एस. ए." से जुड़ी हुई हूँ। "कर्मभूमि" के प्रकाशन के अवसर पर उत्सव जैसा ओजपूर्ण वातावरण मेरे मन और आत्मा को आनंदित कर रहा है। अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा से जुड़े रहना, इसके प्रचार-प्रसार के लिए अपने



सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करना मुझे बहुत प्रिय और रुचिकर लगता है तथा देश से जुड़े रहने का आभास देता है। आने वाली पीढ़ियाँ भी राष्ट्रभाषा से जुड़ी रहें इसके लिये सदैव प्रयत्नशील रहूँगी।

गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी



मेरा नाम समीक्षा अग्रवाल हूँ। मैं ९ साल की हूँ। मैं साउथ ब्रुनस्विक में मध्यमा दो की छात्रा हूँ। मैं पिछले ३ साल से हिंदी सीख रही हूँ। मुझे कला विषय बहुत पसंद है। मैं कराटे भी करती हूँ।

भारत को आजाद हुए ७५ वर्ष पूरे हो गए हैं। इस आजादी को पाने में बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान है। लेकिन कुछ ऐसे भी स्वतंत्रता सेनानी हुए, जिनका नाम इतिहास के पन्नों पर लिखित नहीं है। उन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की वजह से भी हमारा देश आजाद हुआ। उन गुमनाम सेनानियों के कुछ नाम इस प्रकार हैं:- उधम सिंह, खुदीराम बोस, भीकाजी कामा, उदा देवी, अमृत कौर, उषा मेहता आदि। जब जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ तब उधम सिंह वहीं पर उपस्थित थे। उस हत्याकांड को देखकर उधम सिंह का जीवन का एक ही लक्ष्य बन गया था, जनरल डायर को मारने का। तब उन्होंने भगत सिंह के रास्ते को अपनाया, और बहुत से देशों की यात्रा करते हुए लंदन पहुँचे। फिर एक दिन अंग्रेजों की एक सभा में जनरल डायर की हत्या कर दी। उसके बाद उन्हें फांसी की सजा दी गई। वह देश के लिए एक मिसाल बन गए। आगे चलकर देश को उनके जैसे ही बहुत से गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी मिले, जिन्होंने आगे चलकर देश को आजाद करवाया।

"सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है ज़ोर कितना बाजु-ए-कातिल में है"

-राम प्रसाद बिरिमल



मोहित कावले

भारत देश मनमोहिनी प्रकृति की गोद में बसा हुआ स्वर्ग-सा सुंदर अप्रतिम देश है, जो संसार के सभी देशों में सर्वोत्तम है। क्योंकि इस देश में सर्व धर्म समभाव की भावना हर देशवासियों के दिलों में झलकती हुई दिखाई देती है।

यहाँ की वाणी, भाषा, खान-पान पहनावा अलग होने के बावजूद भी अनेकता में एकता दिखाई देती है।

जिसका ताज हिमालय पर्वत,
जहाँ बहती गंगा की अमृत धारा
जहाँ अनेकता में एकता है,
सत्यमेव जयते, जिसका नारा,
जहाँ मजहब है भाईचारा,

वो कहलाता है, प्यारा भारत वतन हमारा
वो कहलाता है, प्यारा भारत वतन हमारा

मेरी दृष्टि में भारत महान क्यों है

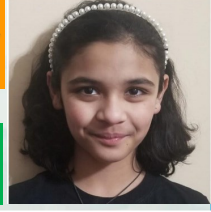
अभिराम दुव्वुरि



भारत को आजादी अहिंसा से मिली थी। गाँधी जी ने अहिंसा के साथ आजादी की लड़ाई लड़ी थी। भारत को एकता में अनेकता के लिए भी जाना जाता है। भारत में विभिन्न तरह की कला और संस्कृति हैं। लोग बहुत सारे त्योहार मनाते हैं। भारत में अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग देवताओं की पूजा करते हैं, लेकिन इस सबके बावजूद हमारी आत्मा एक है जो देश के हर हिस्से में हमें आपस में जोड़े हुए है। आजादी के बहुत पहले से ही भारत में विश्वता होने के बावजूद भी भारत कंप्यूटर जैसे कई क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। भारत की अंतर्देश एजेंसी इसको एक ही उड़ान में सबसे अधिक संख्या में उपग्रहों को प्रक्षेपित किया है। भारत के झंडे को तिरंगा कहा जाता है। इसमें में केसरिया, सफेद, और हरा रंग हैं। सफेद रंग में अशोक चक्र होता है। केसरिया रंग बलिदान का प्रतीक माना जाता है। सफेद रंग शांति और सच्चाई का प्रतीक है, और हरा रंग देश की संपन्नता और हरियाली का संकेत है।

मेरी दृष्टि में भारत महान क्यों है

शनया वाष्ण्य



क्योंकि.....

*भारत ऋषि मुनियों की भूमि है। राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने अपने अदभुत कार्यों से इस देश को महान बनाया है। सूरदास, कबीर, तुलसीदास, तुकाराम जैसे संतो ने इस धरती को अपनी भक्ति से सींचा है।

*भारत माता भगत सिंह, सावरकर, डाक्टर भाभा जैसे सपूतों की जननी है।

*भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। यहां विभिन्न जाति, धर्म, संस्कृति और भाषा के लोग रहते हैं। फिर भी विविधता में एकता के दर्शन होते हैं।

*भारत का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत इसके मुकुट के समान है और दक्षिण में हिन्द महासागर इसके चरण धो रहा है। भारत की नदियाँ गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी इत्यादि इसकी पवित्रता एवं धार्मिक मान्यताओं की पूरक है।

*भारत पर्यटन के लिए भी प्रसिद्ध है, यह अपने सुहावने मौसम और सुन्दरता से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

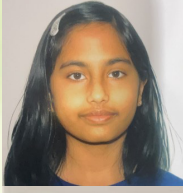
*भारत साहित्य एवं कला के लिए भी प्रसिद्ध है। अजंता, ऐलोरा, ताजमहल, लाल किला अन्य पुरात्व महल इसी के अनूठे उदाहरण हैं। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च सभी देखने योग्य हैं।

*भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां का किसान दिन-रात मेहनत करके राष्ट्र के लिए अनाज पैदा कर देश को स्वावलंबी बनाता है।

*भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर व्यक्ति को अपने विचार अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता है। कर्तव्य एवं अधिकारों का अनोखा मेल है। इस प्रकार भारत समूचे विश्व में सबसे बड़ा लोकतंत्र देश है।

*भारत देश का राष्ट्र ध्वज तिरंगा है, केसरिया, सफेद और हरा रंग अखंडता, शान्ति, एकता और राष्ट्रीयता का प्रतीक है।

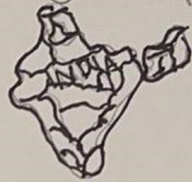
*भारत वैज्ञानिक, सामाजिक एवं चिकित्सा क्षेत्र में सराहनीय योगदान करता आ रहा है। वर्ष 2021 में कोरोना महामारी के समय में कोविशील्ड एवं कोवैक्सिन को पूरे संसार में बना कर वितरण करना एक प्रशंसनीय उदाहरण है।



मेरी दृष्टि में भारत महान क्यों है

गौरी श्रीवास्तव

मेरा भारत महान है क्योंकि यहाँ
 पर एक
 पर एक और समुद्र है और दूसरी
 और बर्फीले पहाड़ हैं। भारत में साप्
 ऋषि के अलावा स्वामी विवेकानंद, आदि
 जैसे हजारों साधु और संत हैं।
 ऋग्वेद को संसार का प्रथम धर्मग्रंथ
 माना जाता है। भारत में कई प्राचीन मंदिर,
 महल और गुफाएं हैं। यहाँ शतरंज, कुश्ती,
 नौका दौड़, आदि खेलों की शुरुआत भारत
 में हुआ। भारत में पहिया, बटन, भाषा,
 व्याकरण, आदि का आविष्कार भारत में
 हुआ।



भारत

सोनल रत्ना, पिस्कैटवे पाठशाला, मध्यमा-१



मैं पिस्कैटवे हिन्दी यू.एस.ए में 'मध्यमा-१' कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहती हूँ। इस लेख में मैं भारत के बारे में कुछ मुख्य तथ्य लिख रही हूँ। मैं भारतीय हूँ और मैं अपने देश से बहुत प्यार करती हूँ।

- भारत का राष्ट्रगान जन गण मन है और इसकी रचना ११ दिसम्बर १९११ को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।
- भारत को आजादी १५ अगस्त, १९४७ में मिली थी।
- भारत ने २० जनवरी, १९५० को अपना संविधान बनाया था।
- महात्मा गांधी, बी.आर.अंबेडकर, भगत सिंह और कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी।
- भारत का एक तिरंगा ध्वज है: केसर, सफेद, हरा।
- सबसे ऊपर केसरिया रंग होता है, जो साहस, वीरता और शौर्य का प्रतीक होता है।
- मध्य में सफेद रंग होता है, जो शांति, शुद्धता तथा सत्यता का प्रतीक होता है।
- सबसे नीचे हरा रंग होता है, जो सुख, समृद्धि तथा विकास का प्रतीक होता है।
- तिरंगे के बीच में एक पहिया होता है, जिसमें २४ रेखाएं होती हैं।
- भारत में २८ राज्य हैं।
- भारत में २२ भाषाएं हैं।

मेरा भारत महान

लॉरेसवेल पाठशाला, मध्यमा-१



मेरा नाम दिया अत्रे है। मैं कक्षा I-1 में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी-USA स्कूल बहुत पसंद है। मैं खेल-खूद में रूची रखती हूँ। मुझे टैमिस खेलना बहुत पसंद है। मैं बड़ी होकर टैमिस खिलाड़ी बनना चाहती हूँ।

मुझे भारत देश बहुत पसंद है। इसको कई नामों से पुकारा जाता है जैसे की हिंदू, हिंदुस्तान और इंडिया। भारत देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं जैसे की हिंदी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु, इत्यादी। भारत देश में कई धर्म के लोग रहते हैं जैसे की हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, इत्यादी। भारत देश सभी क्षेत्रों में आगे रहा है जैसे की कला, विज्ञान, ...

नार्थ ब्रुस्विक, मध्यमा-२

भूले बिसरे स्वतंत्रता सेनानी

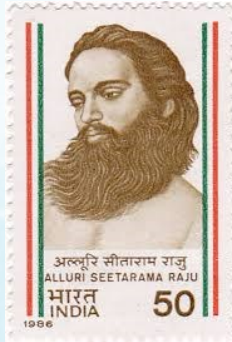


नमस्ते, मेरा नाम एंजला चंद्रा है। मैं पिछले नौ वर्षों से नार्थ ब्रुस्विक हिंदी यू.एस.ए. में पढ़ा रही हूँ। मैंने अब तक प्रथमा-१, प्रथमा-२, मध्यमा-१ वर्ग पढ़ाए हैं और अब मध्यमा-२ पढ़ा रही हूँ। मेरे दोनों बच्चे भी हिंदी पाठशाला आते हैं। हमारे बच्चे बहुत खुश किस्मत हैं जो उन्हें हिंदी यू.एस.ए. जैसा मंच मिला है। मैं पेशे से डॉक्टर हूँ और मुझे भारतीय होने पर गर्व है।

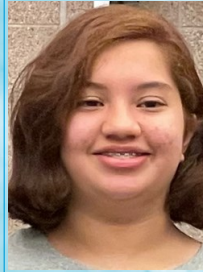


अवनि गुप्ता

बेगम हजरत महल का जन्म 1820 में हुआ था और वह एक मुस्लिम महिला थीं जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था। वह उन बहुत कम महिलाओं में से एक थीं जो अंग्रेजों के खिलाफ खड़ी हुईं। बेगम हजरत महल ने एक युद्ध के आंदोलन की योजना बनाई और कहा जाता है कि उन्हें एक हाथी के ऊपर युद्ध के मैदान में देखा गया था। वह नाना साहब और मौलवी अहमद उल्लाह शाह के करीबी सहयोगी थीं। ये सहयोगी उसके लिए आने वाली कई लड़ाइयों में सफल होने के लिए महत्वपूर्ण थे। हालांकि उसे कई झटके लगे, जैसे कि कामपुर की लड़ाई जिसे अंग्रेजों ने जीता था, उसने लखनऊ से अंग्रेजों के शासन को मुक्त करने की पूरी कोशिश की। हालांकि, वह असफल रही और बाद में नेपाल भाग गईं। वर्षों बाद 1879 में उनकी मृत्यु हो गई, लेकिन शक्तिशाली और सर्वशक्तिमान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के उनके साहस ने भारत की स्वतंत्रता के लिए एक बड़ी भूमिका निभाई।

साई प्रनील
भगवातुला

अल्लुरी सीताराम राजू तत्कालीन समय के भारतीय स्वातंत्रा संग्राम के एक क्रांतिकारी थे। जब एक वर्ष में स्वराज्य प्राप्ति का गांधी जी का स्वप्न साकार नहीं हुआ तो सीताराम राजू ने अपने अन्धवादी आदिवासियों की सहायता से अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करके स्वतंत्र स्थापित करने के प्रयत्न आरंभ कर दिए।



सान्वी चंद्रा

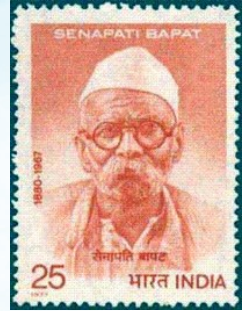
पिंगली वेंकय्या का जन्म 2 अगस्त, 1876 को हुआ था। वह बहुत से लोगों के लिए ज्ञात नहीं हैं, लेकिन कुछ लोग जो उन्हें जानते हैं, उन्हें राष्ट्रीय ध्वज का पिता कहते हैं क्योंकि उन्होंने भारत का झंडा बनाया है। उन्होंने सबसे पहले स्वराज ध्वज का प्रस्ताव रखा था जिसमें लाल और हरे रंग के पट्टे होते हैं जो दो प्रमुख समूहों हिंदुओं और मुसलमानों का प्रतीक थे। 2014 में उनका नाम भारत रत्न पुरस्कार (भारत में सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार) के लिए प्रस्तावित किया गया था।



कृपा चौड़े



ध्रुव पुनिया



पांडुरंग महादेव बापट
 पांडुरंग महादेव बापट (12 नवम्बर 1880-28 नवम्बर 1961) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सहज सेनानी थे वे सेनापति बापट क नाम से जाने जाते थे। इन्होंने इंग्लियरिम की पढाई स्कॉटलैंड से की। बापट ने कई आंदोलन में सेनपतिका काम किया जैसे मुल्शी आंदोलन। बापट को भक्तान्नान व सेवा की निर्मल मायत्री की संज्ञा देते थे।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय
 कमलादेवी चट्टोपाध्याय का जन्म 3 अप्रैल, 1903 को मैंगलोर, कर्नाटक में हुआ था। महात्मा गांधी को नमक सत्याग्रह में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के मनाया। 1926 में मद्रास विधायिका पार्षद के चुनाव से पहले महिलाओं को चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी गई थी। आयरलैंड की महिलावादी नेता मार्ग्रेट कजन्स के प्रोत्साहन से चुनाव लड़ा और वे कम मतों से हार गईं। इस क्रम से महिलाओं के लिये राजनीतिक पदों का दरवाजा खुल गया। नमक सत्याग्रह के लिये वांडी मार्च में कमलादेवी ने हिस्सा लिया। कमलादेवी के इस क्रम के बाद पूरी दुनिया ने देखा कि कैसे भारत की करोड़ों पुरुषों के साथ कबे से कंबा मिलकर आज की लड़ाई से हिस्सा लिया।



ज्योतिर्मय बाजपेयी

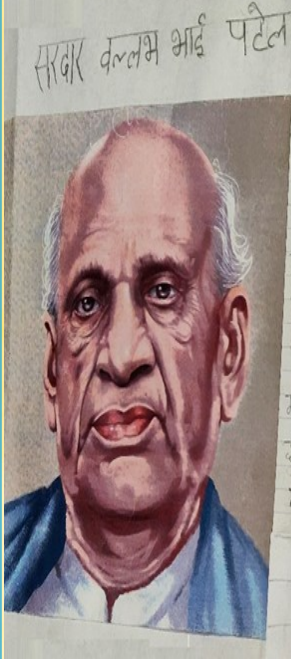


बापट का जन्म महाराष्ट्र के पारनेर शहर में हुआ था। उनका पूरा नाम पांडुरंग महादेव बापट था। उनका आजादी की लड़ाई में काफी योगदान है। और उनको सेनापति का खिताब मुलशी सत्याग्रह के समय मिला, जिसमें उन्होंने एक (बांध) Dam के बनाने का विरोध किया था। बापट ने इंगलैंड में भी पढाई करी थी।

हमारा प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

चेतना अखौरी
अमित गुप्ता

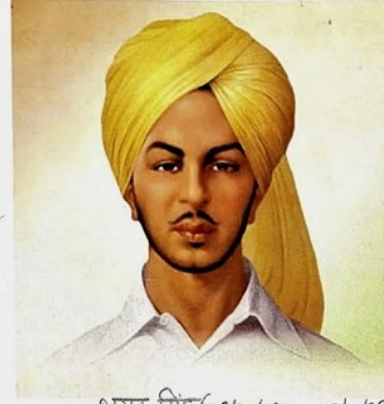
वुडब्रिज पाठशाला, मध्यमा-१



सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था। सरदार पटेल एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। वह आजाद भारत के पहले गृहमंत्री थे। आजादी की लड़ाई में उनका महत्वपूर्ण योगदान था, जिसके कारण उन्हें भारत का लौह पुरुष भी कहा जाता है। भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उन्होंने इसी रियासतों को भारत में शामिल किया। इसलिए उन्हें भारत का लौह पुरुष कहा जाता है।

विपिन चिड़ीया



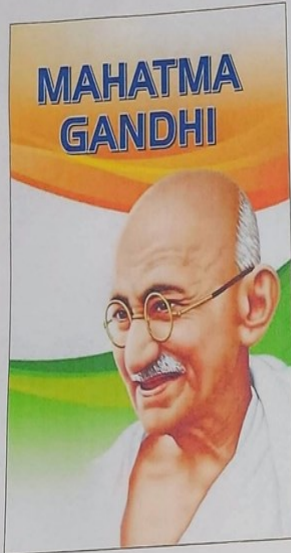
भगत सिंह (06/12/1906 - 03/23/1931)

भगत सिंह की भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के सबसे प्रभावशाली क्रांतिकारियों में से एक माना जाता है। वे कई क्रांतिकारी संगठनों के साथ मिले और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया था।

अपने क्रांतिकारी विचारों और स्वतंत्रता की लड़ाई के चलते अंग्रेजी सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया था। वे एक अच्छे वक्ता, पाठक और लेखक भी थे और उन्होंने कई पत्र पत्रिकाओं के लिये लिखा व संपादन भी किया।

आदित्य गुप्ता

महात्मा गांधी



MAHATMA
GANDHI

मोहनदास करमचन्द गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्हें महात्मा गांधी के नाम से भी जाना है। उनके पिता का नाम करमचन्द गांधी और माता का नाम पुतलबाई था। ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए उन्होंने सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन चलाए। उन्होंने भारत वासियों के विदेशी चीजों को त्याग कर स्वदेशी चीजों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। 1942 में गांधी जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया और भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने में उनका महत्वपूर्ण स्थान रहा! - अरवि शिन्नेसन

सुभाष चन्द्र बोस
 सुभाष चन्द्र बोस का
 जन्म २३ जनवरी
 १८-६७ को आड़िया
 के कच्छ बाँध में हुआ था।
 उन्होंने गाँधी जी का साथ दिया।
 गाँधी जी के साथ उन्होंने हजारों
 मीटिंग्स को पैर करवाया। इसके
 साथ, उन्होंने आजाद हिंद फौज का
 निर्माण भी किया था। उनकी मृत्यु
 १ अगस्त १९४५ को हुई थी।

लाया दीनदयाल

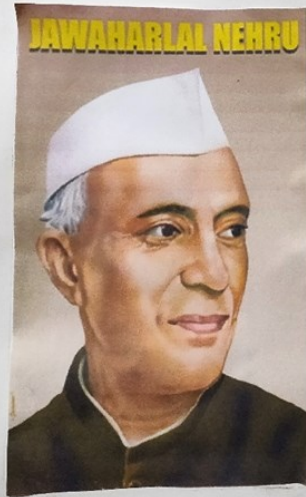


जवाहरलाल नेहरू

JAWAHARLAL NEHRU

जवाहरलाल नेहरू का जन्म
 इलाहाबाद में १४ नवम्बर १८८९
 को हुआ था। इनके पिता जी
 का नाम मोतीलाल नेहरू और माता जी का
 नाम स्वरूप रानी था। वह भारत के पहले
 प्रधानमंत्री थे। इनके जन्मदिन को पूरे भारत में
 बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इनको १९५५
 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया
 था। लाल किले पर सबसे पहले तिरंगा
 जवाहरलाल नेहरू ने ही फहराया था।

शौर्य चौधरी



महात्मा गांधी का पूरा
 नाम मोहनदास करमचंद गांधी
 था। उनको घर से सबतो बड़े
 बच्चे कहते थे। उन्होंने अंग्रेजों के
 खिलाफ अहिंसा, असहयोग
 सत्याग्रह आंदोलन चलाए।
 स्वदेशी खादी, स्वयंपूर्ण ग्राम
 आदि उपक्रमों से सामाजिक नवजागृति
 बनायी। अपने इस महान कार्य में वहसे वह भारत के राष्ट्रपिता
 माने जाते हैं। १९४७ में उन्होंने पुकारे हुए भारत
 छोड़ो आंदोलन में पूरा भारत आजादी की
 जंग में शामिल हुआ था।

~ आशिष शरपोतदार



कुंवर सिंह **नवनीत**

कुंवर सिंह को बाबु कुंवर सिंह के नाम से भी जाना
 जाता है, जो १८६७ के भारतीय विद्रोह के दौरान एक नेता थे।
 उनका जन्म १३ नवंबर १७७७ में हुआ था। एक गोली उनके
 हाथ में लगी जिससे ब्रह्मचर्य फैल रहा था, इसलिए उन्हें अपना हाथ
 काटना पड़ा। उनका स्वास्थ्य भी
 ठीक नहीं चल रहा था।
 २६ अप्रैल, १८६८ में उनकी
 मृत्यु हो गई थी।



रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई

By: यशशा मेवानी



लक्ष्मीबाई

महिकर्णिका का जन्म १६ नवंबर १८२८
 को वाराणसी शहर में हुआ था।
 उनके प्यार से मनु भी कहते थे।
 उनकी शादी झाँसी के महाराज से हुई थी,
 तब से उनके सब रानी लक्ष्मीबाई कहते
 थे।
 महाराज के मरने के बाद, रानी लक्ष्मीबाई
 ने झाँसी शहर पर राज किया।
 एक कविता
 बुंदेली हर्बोलों के मुँह से हमने
 सुनी, कहानी थी,
 खूब लड़ी मद्रिनी वह तो झाँसी वाली
 रानी थी।

भारत की आजादी के ७५ वर्ष

स्टैमफोर्ड पाठशाला, मध्यमा-१

स्मिता सेठ

कोमल जुनेजा

नमस्कार, यह लेख स्टैमफोर्ड मध्यमा-१ के छात्रों द्वारा लिखा गया है। इस बार कर्मभूमि पत्रिका का विषय था "भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष" इस लेख में विद्यार्थियों ने भारत की आजादी के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताते हुए भारत की कुछ उपलब्धियाँ और विशेषताएं बताई हैं।



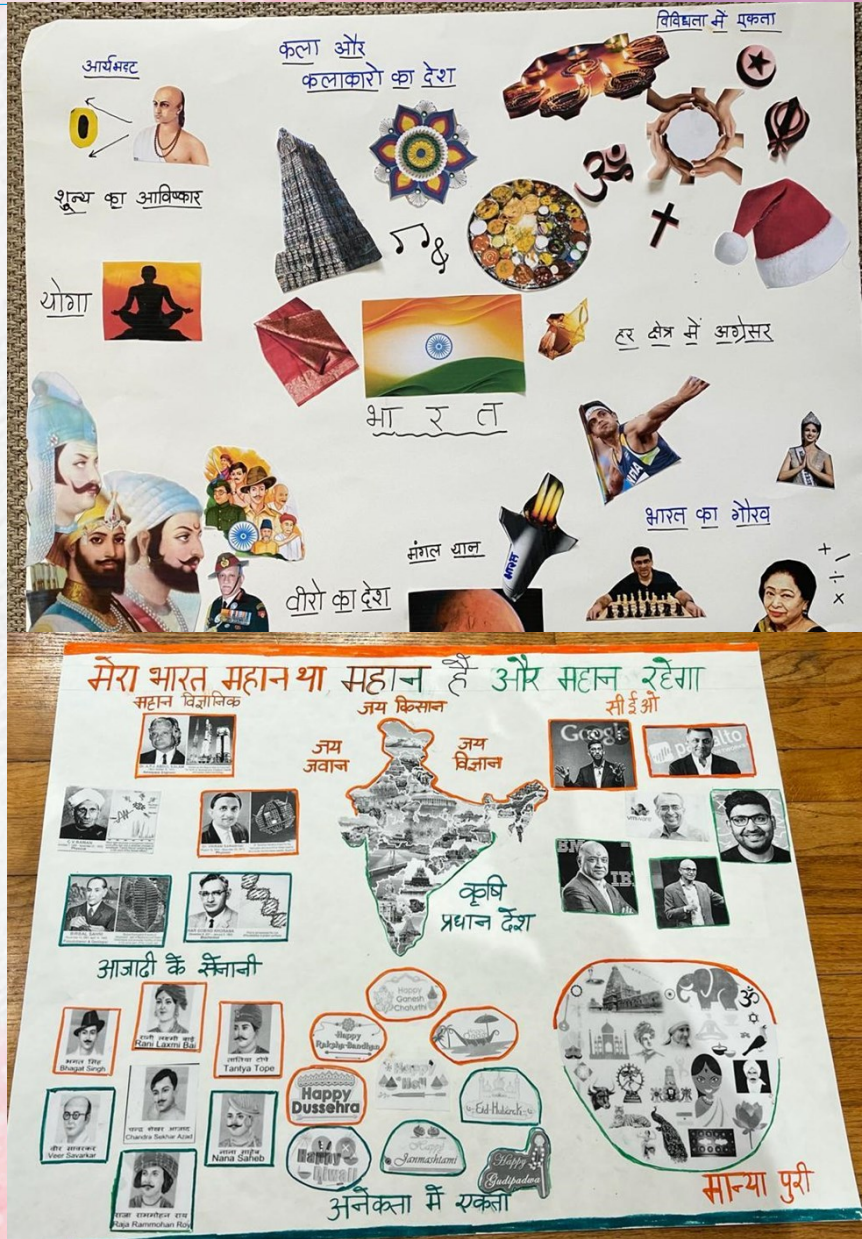
लगभग २०० साल के ब्रिटिश शासन के बाद भारत देश १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्र हुआ। पंडित जवाहर लाल नेहरू हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने। इस दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर तिरंगा लहराया था। भारत के राष्ट्रीय ध्वज को तिरंगा कहा जाता है। पिंगले वेंकय्या ने भारतीय ध्वज बनाया। भारतीय ध्वज में तीन रंग होते हैं। पहला रंग केसरिया है जो ताकत का प्रतीक है। दूसरा रंग सफेद है और धर्म चक्र के साथ शांति और सच्चाई का प्रतीक है। अंतिम रंग हरा रंग है जो विश्वास, जीवन और समृद्धि का प्रतीक है। धर्म चक्र को "कानून का चक्र" कहा जाता है और इसमें २४ रेखाएँ होती हैं।

भारत भूमि वीरों की भूमि है। इसको स्वतंत्र करवाने के लिए कई स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान दिया। महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस और ऐसे कई और नाम शामिल हैं। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी, यह तो सब को पता ही है कि रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कैसे जंग का ऐलान कर इतिहास बदल दिया। अवंतीबाई लोधी, भीखाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अमृत कौर, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, लक्ष्मी सहगल का भी योगदान आजादी की लड़ाई में सराहनीय है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। यह अनेकता में एकता का प्रतीक है। विभिन्न संस्कृति, धर्म जाति के लोग भारत में निवास करते हैं।

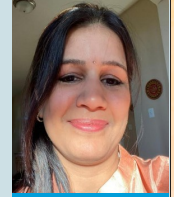
भारत ने विश्व को वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल

एवं तकनीकी क्षेत्र में बहुत सी देन दी हैं। २१ जून का दिन सारा विश्व अब योग दिवस के रूप में मनाता है। आर्यभट्ट ने शून्य को खोजा और शकुंतला देवी ने अपने अंको के जादू से विश्व को चौंका दिया। उन्हें मानव कंप्यूटर का खिताब दिया गया। वर्ष १९७५ में भारत ने पहले अंतरिक्ष उपग्रह का डिजाइन तैयार किया था। इस उपग्रह का नाम महान भारतीय ज्योतिषाचार्य और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया था। कल्पना चावला अंतरिक्ष में जाने वाली भारत की प्रथम महिला बनी। भारत एक कृषि प्रधान देश है। जय जवान जय किसान का नारा दूसरे प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने १९६७ में लगवाया था। १९९८ में अटल बिहारी वाजपेयी ने इसमें जय विज्ञान भी जोड़ दिया। आज भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है। हमे अपनी मिट्टी, अपने देश भारत पर गर्व है।





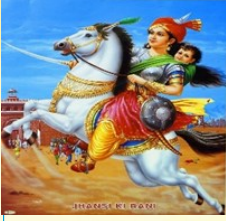
वंदना वर्मा



वर्षा बांगड़

हमारा प्रिय स्वतंत्रता सेनानी कौन है और क्यों?

चेरी हिल, मध्यमा-१, अध्यापिकाएँ: वंदना वर्मा, वर्षा बांगड़



रानी लक्ष्मीबाई

- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई - "मैं अपनी झाँसी का आत्म समर्पण नहीं होने दूँगी "
- "दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी, चमक उठी सन सतावन में वह तलवार पुरानी थी! बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी! खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी"

• शौर्य और वीरता झलकती है लक्ष्मीबाई के नाम में, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की डोरी थी जिसके हाथ में। - आरुष चौधरी



लाला लाजपत राय

- लोकप्रिय रूप से पंजाब केसरी के नाम से जाने जाते थे।
- लाल बाल पाल की तिकड़ी का हिस्सा थे, जिनके आदर्शों को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अत्यधिक प्रशंसित किया गया था।
- १७ नवंबर, १९२८ को साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध का नेतृत्व करते हुए वे लाठीचार्ज की चपेट में आ गए और उनकी मृत्यु हो गई।

- आरव अग्रवाल



महात्मा गांधी

- हेली झावेरी

- गाँधी जी को बापू और राष्ट्रपिता भी कहा जाता है।
- गाँधी जी सत्य और अहिंसा के महान पुजारी थे।
- गाँधी जी ने पुरे विश्व को शांति का संदेश दिया है।



सरोजिनी नायडू

- मेरी पसंदीदा स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू हैं।
- सरोजिनी नायडू एक कवयित्री भी थीं।
- उन्हें 'भारत कोकिला' भी कहा जाता था।

- रीतिशा पारथी



मंगल पांडे

- मंगल पांडे भारत देश के सबसे पहले स्वतंत्रता सेनानी थे।
- अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद करवाने के लिए भारतीय जनता के दिल में आजादी की चिंगारी जलाई।
- १८५७ में लेफ्टिनेंट बाग पर आक्रमण करके मंगल पांडे ने अंग्रेजों के विरुद्ध बिगुल बजा दिया और खुलेआम जनता को ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध प्रेरित किया।

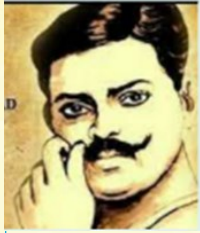
- आशिता नलावडे



सरदार पटेल

- सरदार पटेल का पूरा नाम सरदार वल्लभभाई झरवरभाई पटेल था।
- उन्होंने गाँधी जी के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभायी।

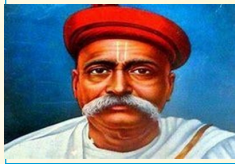
• उन्होंने सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन को गुजरात के घर-घर में पहुँचाया।
- आदया चावला



चंद्रशेखर आज़ाद

- चंद्रशेखर अजाद बहुत बहादुर स्वतंत्रता सैनिक थे।
- जलियांवाला बाग त्रासदी जिसमें सैकड़ों का नरसंहार हुआ, आजाद के जीवन का एक बड़ा मोड़ साबित हुआ।

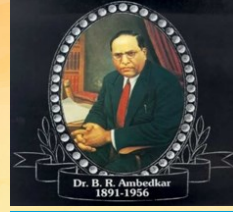
• इसके बाद उन्होंने केवल १५ वर्ष की उम्र में १९२० में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया। - ईवान शर्मा



बाल गंगाधर तिलक

- बाल गंगाधर तिलक को भारत के स्वराज्य के पिता के नाम से जाना जाता है।

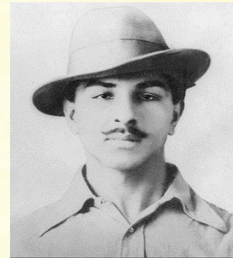
- वे १९८० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने। उन्होंने गणपति महोत्सव के माध्यम से स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया।
- उनका यह नारा बहुत प्रसिद्ध है "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं यह लेकर रहूँगा"
ईशान मलिक



डॉ बाबासाहब आम्बेडकर

- वे अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाज सुधारक थे।
- उन्होंने दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था।

• श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था। - अथर्व प्रभु



भगत सिंह

- भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायकों में से एक थे।

• भगत सिंह अपने नारे "इंकलाब जिंदाबाद" के लिए जाने जाते हैं।

• भगत सिंह देशभक्ति के प्रतीक हैं, जिन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी दिलाने में मदद की। - अरनव रेलिया



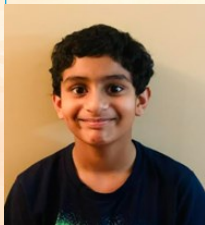
सुभाष चंद्र बोस

- सुभाष चंद्र बोस नारा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"

• नेताजी सुभाष चंद्र बोस एक भारतीय राष्ट्रवादी और भारत के सबसे लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे।

• सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया था। -

सुहाना पुरिणी



साउथ ब्रुस्विक, माध्यम-१, अध्यापिकाएँ: इंदु श्रीवास्तव, वर्षा गुप्ता

आइए मध्यमा-१ के हमारे विद्यार्थियों और युवा स्वयंसेवक से जानते हैं कि उनके आदर्श, ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी स्वतंत्रता सेनानियों की लघु कहानी, उन्हीं की जुबानी। साउथ ब्रुस्विक माध्यम-१ कक्षा से मैं इंदु श्रीवास्तव, अपनी सह-शिक्षिका वर्षा गुप्ता जी एवं युवा स्वयंसेविका ईशा श्रीवास्तव के साथ इस वर्ष की कर्मभूमि की विषय वस्तु पर यह प्रेरक कक्षा-प्रस्तुति लेकर आई हूँ।



नमस्ते, मैं धैर्य, १० साल का हूँ। मुझे किताब पढ़ना और फुटबॉल खेलना पसंद है। क्या आप जानते हैं मेरे आदर्श **मोहन दास करमचंद गाँधी** जी कौन थे

१. मैं एक वकील था।
 २. उन्होंने भारत की आजादी के लिए शांति से लड़ाई लड़ी। ब्रिटिश सरकार जाति व्यवस्था के आधार पर भारत को अलग करने की कोशिश कर रही थी। गांधी जी को यह पसंद नहीं आया इसलिए उन्होंने इसका विरोध करने के लिए धूबव हड़ताल की थी।
 ३. गांधी जी ने अंततः आजादी की लड़ाई जीती।

छात्र श्याम

रानी लक्ष्मीबाई
 महान भारतीय क्रान्तिकारी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को उनकी बहादुरी और भारत में ब्रिटिश राज के खिलाफ आखिरी हम तक लड़ने के लिए सबसे अधिक श्रेय दिया जाता है।

लक्ष्मीबाई ग्वालियर में अंग्रेजों के खिलाफ अपनी लड़ाई हार गई, पर अंत तक, उन्होंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी। यहाँ तक कि अपने धैर्य और दृढ़ संकल्प से उन्होंने अंग्रेजों को हराकर दिया था।

उनके राष्ट्रवाद और साहस की भावना ने स्वतंत्रता सेनानियों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया, और उनकी चर्चा आज तक की जाती है। - अक्षय नारायण



मेरा नाम अक्षय है। मैं 9 साल का हूँ और चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरा पसंदीदा खाना पनीर है। मुझे किताबें पढ़ना और वीडियो गेम खेलना पसंद है। मेरी मातृभाषा तेलुगु है और मुझे नई भाषाएँ सीखना अच्छा लगता है। मुझे **रानी लक्ष्मी बाई** की बहादुरी बड़ी प्रेरणादायक लगी।

शहीद भगत सिंह

भगत सिंह अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई का संदेश तथा उसकी तरफ ब्रिटिश सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने केन्द्रीय विद्यालय सभा के खाली क्षेत्र में एक बम लगाया, जिसके लिए उन्हें मौत की सजा सुनाई गई थी। उन्होंने सुझुराते हुए चेहरे के साथ मौत को स्वीकार कर लिया। इसलिए वे मेरे पसंदीदा क्रांतिकारी बन गये।



मेरा नाम स्तुति वर्मा है। मैं 9 साल की हूँ। मुझे बास्केटबॉल खेलना, हिंदी पढ़ना और वल्लभ भाई पटेल की देश सेवा की भावना बेहद पसंद है।

वल्लभ भाई पटेल

- सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1889 में हुआ था।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने भारत देश की आजादी की लड़ाई में बड़ा योगदान दिया और स्वतंत्रता के बाद भी देश सेवा में लगे रहे।
- स्वतंत्र भारत की एकता को बनाए रखने में पटेल जी की बहुत बड़ी भूमिका थी। इसलिए उन्हें लॉड पुरुष भी बोला जाता है।

स्तुति वर्मा

उन्होंने "इंक्लाब जिंदाबाद" (क्रांति लंबे समय तक जीवित रहे) नारा लोकप्रिय बनाया।

श्योंन अर्नव



मैं श्योंन अर्नव, 14 साल का हूँ। मुझे तैरना और अपने दोस्तों के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। मुझे हिन्दी भाषा सीखना पसंद है। मेरे प्रिय स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह जी हैं। धन्यवाद!

सुभाष चंद्र बोस

मेरे प्रिय स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस हैं। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए "आज़ाद हिन्द फौज" का गठन किया। सुभाष चंद्र बोस युवाओं के प्रेरणा स्तोत्र हैं। उनके जीवन का संघर्ष भरा सफर और उनके द्वारा देश को स्वतंत्र करने के प्रयासों को एक अमर गाथा के रूप में जाना जाता है।

स्वरूप राव



मेरा नाम स्वरूप राव है। मुझे हिंदी सीखना बहुत ही अच्छा लगता है, क्योंकि मैं भारतीय हूँ। इस बात पर मुझे गर्व है। सुभाष चंद्र बोस मेरे प्रिय नायक हैं।

श्रीमती भीखाजी कामा

(मैडम कामा) (28 सितंबर 1899 - 13 अगस्त 1930) भारतीय मूल की पारसी नागरिक रुस्तम कामा जी मेरी प्रिय भारतीय स्वतंत्रता सेनानी हैं। उन्होंने 1906 से भी पहले लन्दन, जर्मनी तथा अमेरिका का भ्रमण कर भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया। वे जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में 22 अगस्त 1906 में हुई सातवीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराने के लिए सुविख्यात हैं। उस समय तिरंगा वैसा नहीं था जैसा आज है।
- ईशा श्रीवास्तव



मैं ईशा श्रीवास्तव ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। यह मेरा हिन्दी यू.एस.ए. युवा स्वयंसेवा का चौथा साल है। मुझे स्वयंसेवा करना अच्छा लगता है क्योंकि मैं और कई बच्चों को हिंदी सीखने में मदद करके हिन्दी यू.एस.ए. को कुछ वापस दे सकती हूँ। मुझे कला और फोटो लेने में रुचि है। श्रीमती भीखाजी कामा और मातंगिनी हाजरा जी के क्रांतिकारी योगदान से मैं बहुत प्रभावित हूँ।



भारत के स्वतंत्रता सेनानी

मोनरो हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१



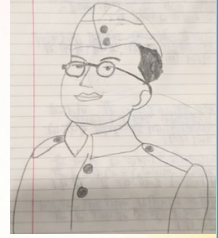
मेरा नाम रश्मि गुर्रम है। मैं ७ वर्षों से हिंदी-यू.एस.ए. से जुड़ी हूँ। मैं मध्यमा-१ को पिछले ६ वर्षों से पढ़ा रही हूँ। इस वर्ष मेरी कक्षा में १० विद्यार्थी हैं, उनमें से ६ विद्यार्थियों ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में लिखा है। मुझे पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है। मैं एक फार्मा कम्पनी में सीनियर साइंटिस्ट के पद पर कार्यरत हूँ।



नमस्ते, मेरा नाम वेदांत सिंह सिकरवार है। मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं मोनरो टाउनशिप, न्यू जर्सी में रहता हूँ।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

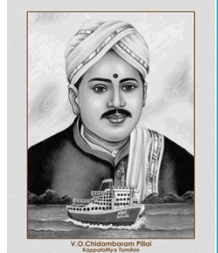
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा के कटक क्षेत्र में २३ जनवरी १८९७ को हुआ था। नेताजी के पिता जानकीनाथ बोस कटक के एक मशहूर सरकारी वकील थे। नेताजी ने बी. ए. की परीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी से पास की थी। १९२० में नेताजी ने प्रशासनिक परीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी से पास की थी। स्वामी विवेकानंद व अन्य लोगों से प्रभावित होकर १९२१ में नेताजी ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। नेताजी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारी नायकों में से एक हैं। लगभग ४०,००० भारतीयों के साथ नेताजी ने १९४३ में "आज़ाद हिंद फ़ौज" बनाई। नेताजी अपनी आज़ाद हिंद फ़ौज के साथ १९४४ में बर्मा गए और वहीं उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा दिया "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा"।

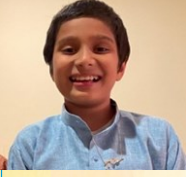


नमस्ते, मेरा नाम रोहित है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे क्रिकेट खेलना और किताबें पढ़ना पसंद है। मेरी पसंदीदा पुस्तक हैरी पॉटर है और पसंदीदा क्रिकेटर रोहित शर्मा है।

वल्लियप्पन उलगनाथन चिदम्बरम पिल्लै

मेरे प्रिय स्वतंत्रता सेनानी वल्लियप्पन उलगनाथन चिदम्बरम पिल्लै हैं। मैं उन्हें इसलिए पसंद करता हूँ क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के समय में भारतीय व्यापारियों की मदद के लिए एक शिपिंग कंपनी "स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी" एस. एस. एन. सी. शुरू की थी। व.उ. चिदम्बरम पिल्लै का जन्म ५ सितंबर, १८७२ को भारत के तमिलनाडु राज्य के अन्तर्गत तूतुकुडि जिला स्थित ओट्टपिडारम में हुआ था। उन्होंने बचपन में शिव, रामायण और महाभारत की कहानियाँ सुनीं। उन्होंने १८९५ में वकालत शुरू कर दी थी। चेन्नई के विवेकानन्द आश्रम में रामकृष्णानन्द से उन्हें देश की सेवा करने की प्रेरणा मिली। १८९२ में चिदम्बरम, तिलक महाराज के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए। वल्लियप्पन उलगनाथन चिदम्बरम पिल्लै ने अपने मित्र सुब्रमन्य शिव और सुब्रमन्य भारती के साथ स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लिया और उसी के कारण १० वर्ष जेल में रहे। उनका प्रसिद्ध नाम कप्पलोट्टिय तमिलन है।





नमस्ते, मेरा नाम अर्जुन बोहरा है। मैं कक्षा ५ में पढ़ता हूँ।

महात्मा गाँधी

मेरे प्रिय स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गाँधी हैं। मैं उन्हें इसलिए पसंद करता हूँ क्योंकि उन्हें अहिंसा पसंद थी। महात्मा गाँधी या मोहनदास करमचंद गाँधी भारत के पिता माने जाते हैं। गाँधी जी ने भारत को आजादी दिलाई। गाँधी जी का जन्म पोरबंदर में २ अक्टूबर, १८०९ को हुआ था। १८९३ में जब गाँधी जी वकील बनने दक्षिण अफ्रीका गए तब उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ा। गाँधी जी ने भारत लौट कर लोगों के साथ मिलकर नमक सत्याग्रह शुरू किया। गाँधी जी दुनिया भर में अहिंसा प्रेमी के नाम से जाने जाते हैं।



मेरा नाम अर्जुन मेहता है। मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र वीरता, देश प्रेम और आत्मबलिदान की प्रेरणा देता है।

रानी लक्ष्मीबाई

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई एक भारतीय वीरांगना थीं, जिन्होंने हमारी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में १९ नवम्बर, १८२८ को हुआ था। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका था, लेकिन प्यार से उन्हें मनु कहा जाता था। उनकी माँ का नाम भागीरथीबाई और पिता का नाम मोरोपंत तांबे था। लक्ष्मीबाई ने बचपन में शास्त्रों की शिक्षा के साथ शस्त्रों की शिक्षा भी ली। १८४२ में रानी लक्ष्मीबाई का विवाह झांसी के पेशवा गंगाधर राव के साथ हुआ था। झांसी १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जहाँ हिंसा भड़क उठी थी। रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी की सुरक्षा को सुदृढ़ करना शुरू कर दिया। इसके लिए एक स्वयंसेवक सेना का गठन किया गया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गयी और उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। साधारण जनता ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। १८५७ में हुए संग्राम का इतिहास रानी लक्ष्मीबाई ने अपने रक्त से लिखा था। हम सब के लिए उनका जीवन आदर्श और शक्तिशाली महिला के रूप में है।



नमस्ते, मेरा नाम सहर हरिरामानी है। मैं छठी कक्षा की छात्रा हूँ। आज मैं आपको भारत के स्वतंत्रता सेनानी चन्द्रशेखर आज़ाद के बारे में बताऊंगी।

चंद्रशेखर आजाद

चंद्रशेखर आजाद एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने भारत की आजादी के लिए अपनी जान का बलिदान कर दिया। उनका जन्म जुलाई २३, १९०६, भारत के भाबरा गांव में हुआ था जो आज आज़ाद नगर के नाम से जाना जाता है। वे १९२०-१९२१ में एक आंदोलन से जुड़े और गिरफ्तार हुए। तब उन्होंने न्यायालय में जज के सामने अपना नाम "आज़ाद" बताया। रामप्रसाद बिसमिल के साथ मिलकर आज़ाद ने "काकोरी कांस्पिरेसी" में भाग लिया और पुलिस को चकमा दे कर फ़रार हो गये। १७ दिसंबर, १९२८ को आज़ाद ने भगत सिंह और राजगुरु के साथ मिलकर लाहौर के पुलिस अफसर सांडर्स और उनके अंगरक्षक को गोली मारकर समाप्त कर दिया। ७ फरवरी, १९३१ को आजाद जब इलाहाबाद के आजाद पार्क में छिपे थे तब वीरभद्र तिवारी नाम के एक पुराने साथी ने आजाद के वहाँ होने की सूचना पुलिस को दे दी। पुलिस के साथ भिड़ते हुए आजाद ने अपनी पिस्टल से गोलियाँ चलाई, लेकिन जब उसमें केवल एक गोली बची थी, तो उन्होंने खुद को गोली मार ली और शहीद हो गये।

कर्मभूमि

"मैं झांसी नहीं हूँगी।"
- रानी लक्ष्मीबाई

"तुम मुझे मृत दी,
मैं तुम्हें आजादी दूँगी।"
- सुभाष चंद्र बोस

"करो या मरो।"
- महात्मा गांधी



"इनकलाब जिंदाबाद!"
- भगत सिंघ

"जय जवान,
जय किसान!"
- लाल बहादुर शास्त्री

"सारे जहाँ से
अच्छा हिन्दीस्तां
हमारा।"
- इकबाल

जय
हिन्द!

"वंदे मातरम!"
- बंकिम चंद्रा
चटर्जी

"खराज्य मेरा जन्म
सिद्ध अधिकार हैं और
मैं इसको लेकर रहूँगा।"
- बाल गंगाधर तिलक

हिया अग्रवाल, मध्यमा-३, वुडब्रिज पाठशाला

Is your financial portfolio ready for what's coming?



Questions to consider:

- Where will the markets go from here?
- Should you maximize your 401K / IRA contributions?
- What is the impact on the housing market post-COVID?
- Ways to build your legacy for your children?

Get the answers.

Northstar Portfolio Investments is proud to partner with busy professionals of Indian origin who have little time to properly invest.



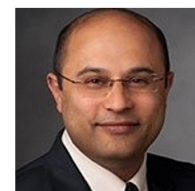
Call 203-343-0880 and ask for Vikram to discuss the questions above



onenorthstar.com

203-343-0880

investments@onenorthstar.com



Vikram Kaul

*Past performance is no guarantee of future results. A risk of loss is involved with investments in capital markets. Please consider investment actions in light of your goals, objectives, cash flow needs, time horizon and other lasting factors. Commentary in this summary constitutes the general views of NorthStar Portfolio Investments LLC and should not be regarded as personal investment advice. No assurances are made we will continue to hold these views, which may change at any time based on new information, analysis or reconsideration. In addition, no assurances are made regarding the accuracy of any forecast made herein.



www.saicpaservices.com

IMPROVE THE WAY YOUR BUSINESS IS RUN

- Let us make things easy!

Business Startup Services



Accounting & Bookkeeping



Sales Tax & Payroll tax



Payroll Services



Income Tax Preparation for
Individual & Business



Non-profit Taxes &
501c(3) approvals



IRS problems &
Representations



Developing &
Implementing
Business models



Financial Statement
Preparation &
Attestation



SAI CPA
Services



Ajay Kumar, CPA, MBA

Ph (908) 380-6876
(732) 215-9600

Fax (908) 368-8638

akumar@saicpaservices.com

Sai CPA Services is led by **Ajay Kumar, CPA, MBA** and former CEO of Visionary Group. In his guidance, Sai CPA Services is committed to provide the best possible financial services to its client.



www.saicpaservices.com

OFFICE LOCATIONS

1 AUER COURT, 2ND FL
EAST BRUNSWICK
NEW JERSEY 08816
(908) 888-8900

5 VILLA FARMS CIRCLE
MONROE TOWNSHIP
NEW JERSEY 08831
(908) 888-8900